शकुन टाइम्स

निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज

लखनऊ, गुरूवार 13 फरवरी 2025 नगर संस्करण | पृष्ठ:-8 मूल्य:-4 रूपया | वर्ष:- 14, अंक 30

अंतरिक्ष में फंसे यात्रियों को वापस लाने... • लखनऊ से प्रकाशित हिन्दी दैनिक समाचार पत्र • लीजेंड लीग पर आग बरसा रहा है.....

सिख विरोधी दंगे में सज्जन कुमार दोषी

बाप-बेटे को मारकर घर में लगा दी थी आग, 41 साल बाद न्याय

♦ **आजीवन कारावास की सजा काट रहे सज्जन कुमार**

एजेंसी

नई दिल्ली। 1984 के सिख विरोधी दंगे के एक और मामले में कांग्रेस के पूर्व नेता सज्जन कुमार को दोषी करार दिया गया है। कांग्रेस पार्टी के पूर्व सांसद सज्जन कुमार को सरस्वती विहार में बाप-बेटे की हत्या करके जला देने के मामले में दोषी पाया गया है।

सज्जन कुमार की सजा पर 18 फरवरी को बहस होगी। दंगे की ही एक अन्य केस में वह इस समय उम्रकैद की सजा काट रहे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद दिल्ली में बड़े पैमाने पर सिख विरोधी दंगे भड़क उठे थे, जिसमें बड़ी संख्या में लोग मारे गए थे। 1 नवंबर 1984 को सरस्वती विहार इलाके में पिता-पुत्र की हत्या कर दी गई थी। राउज एवेन्यू कोर्ट में स्पेशल जज कावेरी बवेजा ने बुधवार को सज्जन कुमार को दोषी करार दिया। जिस वक्त फैसला सुनाया गया, सज्जन कुमार अदालत में ही मौजूद थे। सज्जन कुमार पिछले 6 साल से जेल में बंद हैं, उन्हें जेल से कोर्ट लाया गया था। अब 18 फरवरी को बहस के बाद अदालत की ओर से सजा तय की जाएगी। 41 साल पहले हुए इस दंगे में जसवंत सिंह और उनके बेटे तरुणदीप सिंह को बेरहमी से मार डाला गया था। शुरुआत में पंजाबी बाग पुलिस थाने में यह केस दर्ज किया गया था बाद में इसे एसआईटी को सौंपा गया। सज्जन कुमार को प्रथम दृष्टया दोषी पाते हुए अदालत ने 16 दिसंबर 2021 को आरोप तय किए थे। अभियोजन पक्ष के अनुसार पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद एक भीड़ घातक ने हथियारों से लैस होकर सिखों से बदला लेने के लिए बड़े पैमाने पर लूटपाट, आगजनी की। भीड़ ने शिकायतकर्ता के घर पर जाकर लूटपाट की, पति और बेटे को मार डाला और इसके बाद घर में आग लगा दी थी। कोर्ट ने पाया कि सज्जन कुमार ना सिर्फ इसमें शामिल थे बल्कि भीड़ की अगुआई कर रहे थे।

सज्जन कुमार पर भीड़ का नेतृत्व करने का आरोप

यह मामला 1 नवंबर 1984 को सरस्वती विहार इलाके में पिता-पुत्र की हत्या से जुड़ा है। यहां दो सिखों, सरदार जसवंत सिंह और सरदार तरुण दीप सिंह, की हत्या कर दी गई थी। इस मामले में सज्जन कुमार पर भीड़ का नेतृत्व करने का आरोप लगा।

भीड़ ने घर में घुसकर दो सिखों को जिंदा जलाया

आरोप है कि सज्जन कुमार के उकसावे के बाद भीड़ ने बाप-बेटे को उनके घर में जिंदा जला दिया गया। भीड़ ने घर में तोड़फोड़, लूटपाट और आगजनी भी की थी। मारपीट कर घर के अन्य लोगों को भी घायल कर दिया।

श्रद्धालुओं से भरी एक टेंपो ट्रैवलर की डंपर से टक्कर, 04 की मौत

एजेंसी

फतेहपुर। उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले में बुधवार सुबह श्रद्धालुओं से भरी एक टेंपो ट्रैवलर, डंपर से टकरा गई जिससे उसमें सवार चार लोगों की मौके पर मौत हो गई जबकि एक दर्जन लोग घायल हो गए। पुलिस अधीक्षक धवल जायसवाल ने आज यहां बताया कि कल्याणपुर थाना क्षेत्र के नूरपुर बक्सर गांव के मोड पर श्रद्धालुओं से भरी गाड़ी टूरिस्ट टेंपो ट्रैवलर गाड़ी डंपर से टकरा गयी। टेंपो ट्रैवलर में 21 लोगो में से चार की मृत्यु हो गई 17लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। उन्होंने बताया कि टेंपो ट्रैवलर नई दिल्ली के उत्तम नगर से श्रद्धालुओं को लेकर आज सुबह प्रयागराज जनपद के महाकुंभ स्नान में श्रद्धालुओं को ले जा रहा था। टेंपो -ट्रैवलर जब कल्याणपुर थाना क्षेत्र के नेशनल हाईवे 2 बक्सर गांव के मोड पर पहुंचा तो इसकी डंपर की

जोरदार टक्कर हो गई जिसमें बस में सवार चार लोगों की मौत हो गई 17 लोग गंभीर रूप से घायल हो गये। घायलों को फतेहपुर अस्पताल में भर्ती कराया गया ,जहां इनका इलाज जारी है। मृतकों में चालक विवेक 50 वर्ष, प्रेम नाथ झा 40 वर्ष, दिगंबर झा और विमल झा को मृत घोषित किया गया है ।गंभीर रूप से घायलों में मीरा देवी, रीता, जय नाथ झा को कानपुर अस्पताल में रेफर किया गया है ।अनुराग झा सलोनी झा को सहित अन्य को फतेहपुर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने सभी शवों को कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घायलों का इलाज अस्पताल में चल रहा है।

70 लाख रुपए की अवैध अंग्रेजी शराब बरामद

हनुमानगढ़। राजस्थान में हनुमानगढ़ जिले के पुलिस के जिला विशेष दल (डीएसटी) एवं थाना पीलीबंगा और टाउन पुलिस ने अलग-अलग कार्रवाइयों में 75 लाख रुपए की अवैध शराब बरामद करके एक आरोपी को गिरफ्तार किया है वहीं 27.10 ग्राम हेरोइन बरामद करके महिला सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस अधीक्षक अरशद अली ने बुधवार को बताया कि पीलीबंगा के थानाधिकारी हरबंस लाल पुलिस दल के साथ नाकाबंदी के दौरान मंगलवार को अमृतसर से जामनगर भारतमाला रोड़, रोही जाखड़ांवाली पर एक ट्रक की जांच की तो उसमें अवैध शराब की 845 पेटियां बरामद हुई। इसकी अनुमानित कीमत करीब 75 लाख रुपये बताई गयी है। आरोपी विजेन्द्र उर्फ विजय (21) को गिरफ्तार किया गया। विजेंद्र यह शराब पराली की आड़ में पंजाब से तस्करी करके गुजरात ले जा रहा था।

वाहन की टक्कर से बालिका सहित तीन लोंगो की मौत

भरतपुर। राजस्थान में धौलपुर में आगरा-मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग-44 पर चंद्र पेट्रोल पंप के पास बुधवार को अज्ञात वाहन की चपेट में आने से मोटरसाइकिल पर सवार देवर-भाभी और एक बालिका की मौत हो गयी। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार विकास (22) अपनी भाभी नत्थो (21) और अनुष्का (आठ) के साथ मोटरसाइकिल से फिरोजपुर से मनियां के एक गांव में अपने रिश्तेदारों के कुंभ से लौटने पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने जा रहा था। तभी रास्ते में अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी इससे तीनों की मौके पर ही मौत हो गयी। वहीं डेढ़ वर्ष का मासूम बल्लन पुत्र सोनू मौके पर सकुशल मिला। पुलिस मौके से फरार वाहन की तलाश में जुटी है।

पीएम मोदी के विमान को आतंकी खतरा

मुंबई पुलिस ने धमकी देने वाले को किया गिरफ्तार

एजेंसी

मुंबई। पुलिस को एक कॉल मिली जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा से पहले उनके विमान पर आतंकवादी हमले की धमकी दी गई। मुंबई पुलिस कंट्रोल रूम को आए धमकी भरे कॉल में दावा किया गया है कि आतंकी पीएम के विमान पर हमला कर सकते हैं।

एएनआई की रिपोर्ट के अनुसार, धमकी का संज्ञान लेते हुए पुलिस ने तुरंत संबंधित सुरक्षा एजेंसियों को सूचित किया और उनके जाने से पहले स्थिति का आकलन करने के लिए एक जांच शुरू की गई। मुंबई पुलिस ने एक बयान में कहा कि 11 फरवरी को मुंबई पुलिस कंट्रोल रूम में एक कॉल आई जिसमें चेतावनी दी गई कि आतंकवादी पीएम मोदी के विमान पर हमला कर सकते हैं क्योंकि वह विदेश की आधिकारिक यात्रा पर जा रहे हैं। सूचना की गंभीर प्रकृति को देखते हुए, पुलिस ने अन्य एजेंसियों को सूचित किया और जांच शुरू की। मुंबई पुलिस के अनुसार, पुलिस ने धमकी भरे कॉल के पीछे वाले व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया और यह पाया गया कि संदिग्ध मानसिक रूप से बीमार है। पीएम मोदी फ्रांस और संयुक्त राज्य अमेरिका की चार दिवसीय यात्रा पर हैं। पीएम मोदी अपनी चार दिवसीय यात्रा का पहला चरण समाप्त करने के बाद बुधवार को संयुक्त राज्य अमेरिका पहुंचेंगे। फ्रांस पहुंचने पर प्रवासी भारतीयों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। पीएम मोदी ने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन से मुलाकात की और पेरिस में एआई एक्शन समिट और 14वें भारत-फ्रांस सीईओ फोरम की सह-अध्यक्षता की। पीएम मोदी ने पेरिस में एआई एक्शन समिट के मौके पर के सीईओ सुंदर पिचाई से मुलाकात की, जहां उन्होंने एआई द्वारा भारत में लाए जाने वाले अविश्वसनीय अवसरों पर चर्चा की। भारतीय मूल के अल्फाबेट इंक के सीईओ ने इस बात पर भी चर्चा की कि त्वश्वद्दद्द और भारत देश के डिजिटल परिवर्तन पर एक साथ कैसे काम कर सकते हैं।

राम मंदिर के मुख्य पुजारी सत्येंद्र दास का निधन

लखनऊ पीजीआई में ली अंतिम सांस, सीएम योगी ने जताया दुख

एजेंसी

अयोध्या। राम मंदिर के मुख्य पुजारी सत्येंद्र दास का बुधवार को निधन हो गया है। उन्होंने 85 साल की उम्र में लखनऊ पीजीआई में अंतिम सांस ली। उन्हें 3 फरवरी को संजय गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान में भर्ती कराया गया था और स्ट्रोक आने के बाद वह न्यूरोलॉजी वार्ड एचडीयू में थे। सत्येंद्र दास की 'ब्रेन स्ट्रोक' के कारण तबीयत बिगड़ जाने के बाद उन्हें लखनऊ के एसपीजीआई में रविवार को भर्ती कराया गया था। उन्हें मधुमेह और हाई ब्लड प्रेशर भी था। वह न्यूरोलॉजी आईसीयू में भर्ती थे। सतेंद्र दास 20 वर्ष की आयु से ही प्रधान पुजारी के रूप में कार्यरत थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उनके निधन पर शोक प्रकट किया है। उन्होने एक्स पर पोस्ट किया परम रामभक्त, राम जन्मभूमि मंदिर, अयोध्या धाम के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येन्द्र कुमार दास जी महाराज का निधन अत्यंत दु:खद एवं आध्यात्मिक जगत की अपूरणीय क्षति है। विनम्र श्रद्धांजलि। प्रभु राम से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को अपने चरणों में स्थान दे और शोक संतप्त शिष्यों एवं अनुयायियों को यह अथाह दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ? शांति। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र संवाद केन्द्र अयोध्या धाम के एक बयान जारी कर महंत के निधन की जानकारी साझा की। उन्होने कहा कि अयोध्या धाम के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येन्द्र कुमार दास जी महाराज का साकेतवास हो गया, आज माघ पूर्णिमा के पवित्र दिन प्रात: सात बजे के लगभग उन्होंने पी जी आई लखनऊ में अंतिम सांस ली, वे वर्ष 1993 से रामलला की सेवा पूजा कर रहे थे।

राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री चम्पत राय व मन्दिर व्यवस्था से जुड़े अन्य लोगों ने मुख्य अर्चक के देहावसान पर गहरी संवेदना व्यक्त की है। राम मंदिर के सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाले मुख्य पुजारी दास ने आध्यात्मिक जीवन का विकल्प चुना था। वह 20 वर्ष की आयु से ही प्रधान पुजारी के रूप में कार्यरत थे।

भारत में बिना वीजा-पासपोर्ट एंट्री पर सख्त नियम बनेंगे

सरकार नया बिल लाएगी, फर्जी डॉक्यूमेंट के साथ घुसने पर 7 साल सजा, 10 लाख जुर्माना

एजेंसी

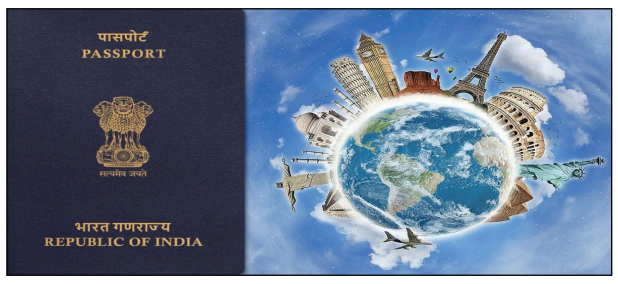

नयी दिल्ली। भारत में बिना वीजा-पासपोर्ट एंट्री पर केंद्र सरकार सख्त कानून लाने जा रही है। अगर कोई विदेशी नागरिक वैध पासपोर्ट या वीजा के बिना भारत में प्रवेश करता है तो उसे पांच साल तक जेल और 5 लाख रुपए तक का जुर्माना हो सकता है। अगर कोई विदेशी फर्जी डॉक्यूमेंट के साथ भारत में प्रवेश करता है तो उसे यहां से निकाला जा सकता है। इसके अलावा 2 साल की जेल हो सकती है, जिसे 7 साल तक बढ़ाया जा सकता है। वहीं, 1 लाख रुपए से 10 लाख रुपए तक जुर्माना लगाया जा सकता है। यह नियम इमिग्रेशन और फॉरेनर एक्ट, 2025 के तहत है, जिसे सरकार संसद के बजट सत्र में पेश करेंगी। इसका मकसद इमिग्रेशन और फॉरेनर से संबंधित सब्जेक्ट पर बने चार अलग नियम को एक करना है। नए नियम लागू होने के बाद फॉरेनर्स एक्ट 1946, पासपोर्ट एक्ट 1920, फॉरेनर्स रजिस्ट्रेशन एक्ट 1939 और इमिग्रेशन (करियर लायबिलिटी एक्ट) 2000 में बदलाव कर एक व्यापक कानून बनाया जाएगा। फिलहाल अवैध पासपोर्ट या वीजा के साथ यात्रा करने वाले विदेशियों को 5 साल की जेल और जुर्माना लगाया जाता है। फर्जी पासपोर्ट के साथ एंट्री करने वालों के लिए अधिकतम 8 साल की सजा और 50 हजार रुपए जुर्माने का प्रावधान है। नए विधेयक में हायर एजुकेशन और यूनिवर्सिटी में एंट्री पाने वाले किसी भी फॉरेनर की जानकारी फॉरेनर रजिस्ट्रेशन अधिकारियों के साथ भी शेयर किया जाएगा। यह नियम उन सभी हॉस्पिटल, नर्सिंग होम और अन्य मेडिकल इंस्टिट्यूशंस पर भी लागू होगा, जिनके यहां रहने की सुविधा है। विधेयक प्रस्ताव के मुताबिक अगर कोई फॉरेनर व्यक्ति निर्धारित वीजा की अवधि से अधिक समय तक यहां रहता है, वीजा नियमों का उल्लंघन करता है या किसी रिस्ट्रिक्टेड एरिया में जाता है तो उसे 3 साल की सजा, 3 लाख रुपए का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है। अगर किसी फॉरेनर के पास वैध पासपोर्ट या वीजा नहीं मिलता है तो उसके लिए लाने वाले को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।

युवक ने दी सीएम योगी को मोबाइल पर धमकी

मुरैना। मध्यप्रदेश के मुरैना जिले के एक युवक ने डॉन बनने की चाहत में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आवास पर फोन करके उन्हें जान से मारने की धमकी दी। हालांकि बाद में युवक ने पुलिस के भय से यहां के सिविल लाइन थाने में पहुंचकर पुलिस के समक्ष समर्पण कर दिया। पुलिस सूत्रों के अनुसार सिविल लाइन थाना क्षेत्र के हांसई मेवदा गांव के मजरा महाराज सिंह का पुरा निवासी सुनील गुर्जर (20) ने सोमवार दोपहर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आवास पर फोन करके उन्हें मारने की धमकी दे दी। धमकी भरे फोन के तत्काल बाद उत्तर प्रदेश पुलिस सक्रिय हो गयी। उप्र एसटीएफ और साइबर टीम ने मोबाइल लोकेशन से उसका पता किया।

यूपी में महिलाओं को संपत्ति खरीद पर खास रियायत

अब एक करोड़ तक की रजिस्ट्री में छूट की हकदार, कैबिनेट की मंजूरी मिली तो हो जायेगी लागू

एजेंसी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक और बड़ा कदम उठाया है। अब राज्य में महिलाओं के नाम पर संपत्ति खरीदने पर भारी छूट मिलने वाली है।

यह कदम महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने और उन्हें अपने भविष्य के लिए सुरक्षित संपत्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करने की कोशिश है ।योगी सरकार का यह कदम विशेष रूप से महिला सशक्तीकरण की दिशा में सहायक साबित होगा। वर्तमान में यदि कोई महिला 10 लाख रुपये तक की संपत्ति खरीदती है, तो उसे रजिस्ट्री पर 10 प्रतिशत छूट मिलती है, लेकिन अब इस सीमा को बढ़ाकर एक करोड़ रुपये तक किया जा रहा है। उच्च स्तर पर इस छूट के प्रस्ताव पर सहमति बन चुकी है, और जल्द ही इसे कैबिनेट से मंजूरी मिलने की संभावना है ।रजिस्ट्रेशन शुल्क के संदर्भ में, 90 लाख रुपये तक की संपत्ति पर 7 प्रतिशत स्टाम्प शुल्क लिया जाता है, जबकि 10 लाख रुपये तक की संपत्ति पर 6 प्रतिशत शुल्क लिया जाता है। प्रस्ताव के मुताबिक अब 1 करोड़ रुपये तक की संपत्ति पर स्टाम्प शुल्क 7 प्रतिशत की बजाय 6 प्रतिशत लिया जाएगा, जिससे महिलाओं को अधिकतम 1 लाख रुपये तक का फायदा हो सकता है ।महिलाओं को संपत्ति खरीदने और उनके नाम पर संपत्ति रजिस्ट्री कराने में छूट देने का उद्देश्य है कि महिलाओं को अधिक से अधिक वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त हो और वे अपनी संपत्ति के मालिक बनने में सक्षम हो सकें। इस कदम से महिला उद्यमिता, महिलाओं के लिए घर की सुरक्षा और उनके भविष्य के लिए बेहतर विकल्प मुहैया होंगे इस निर्णय से महिलाओं के बीच जागरूकता बढ़ेगी, जिससे वे अपनी संपत्ति के बारे में सोचेंगी और अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए कदम उठाएंगी। छूट का प्रभाव न सिर्फमहिला सशक्तीकरण पर पड़ेगा, बल्कि परिवारों में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान स्थापित होगा।

RNI : UPHIN/2012/45286

शकुन टाइम्स
निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र (प्रिन्ट एवं डिजिटल मीडिया)
YouTube shakuntimes
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पंजीकृत

आवश्यकता है
उत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण जिले में तहसील और ब्लाक स्तर पर संवाददाता की
प्रिन्ट एवं डिजिटल मीडिया
यदि आप भी समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार के विरूद्ध उठाना चाहते है आवाज़ तो शकुन टाइम्स दे रहा है आपको एक बेहतरीन मौका
अधिक जानाकरी के लिए
अपना नाम व जिला हमें WhatsaApp करें।
9935781155, 9415052283

कैंसर जागरूकता पखवाड़ाः जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

संवाददाता

बाँदा/चित्रकूट। विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर जन कल्याण शिक्षण प्रसार समिति, वात्सल्य, लखनऊ और फोरम फॉर एडवांसिंग वूमेन एजेंडा (ख्न्न्ड्ड) के संयुक्त तत्वाधान में कैंसर जागरूकता पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत सहज गर्ल्स इंटर कॉलेज, कर्वी में जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया ।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्था के कार्यकर्ता पुष्पेंद्र सिंह ने बताया,कि सर्वाइकल कैंसर महिलाओं में वैश्विक स्तर पर चौथा सबसे सामान्य कैंसर है ।2022 में इसके लगभग 6,60,000 नए मामले और 35,000 मौतें दर्ज की गईं। भारत में गर्भाशय कैंसर महिलाओं में दूसरा सबसे सामान्य कैंसर है,जिसके 1,27,526 नए मामले सामने आए और लगभग 79,906 मौतें दर्ज हुईं। 2020 में दुनियाभर में गर्भाशय कैंसर के 21न्न नए मामले भारत में पाए गए और 23न्न मौतें यहीं हुईं,जिससे भारत इस कैंसर के मामलों में सबसे आगे रहा ।इसी तरह,मुंह का कैंसर भारतीय पुरुषों में अत्यधिक प्रचलित है ।इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर के अनुसार, 2022 में विश्वभर में 1,20,000 मामले दर्ज किए गए, जिनमें से 83,400 मामले भारत में पाए गए ।कार्यक्रम में सहज गर्ल्स इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य शिव बाला सिंह ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि कैंसर अब एक सामान्य रोग बन गया है,जो किसी भी उम्र में हो सकता है। लेकिन यदि प्रारंभिक अवस्था में ही इसका उपचार किया जाए,तो इस पर विजय पाई जा सकती है। बचाव ही सर्वोत्तम इलाज है और जीवनशैली में सुधार कर इस घातक बीमारी से बचा जा सकता है ।उन्होंने बताया,कि योग इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है ।स्तन कैंसर और मुंह के कैंसर के शुरुआती लक्षणों की पहचान कर समय रहते उपचार संभव है ।मुंह से दुर्गंध आना,आवाज में बदलाव, मुंह का पूरा न खुलना,लगातार दर्द रहना ये सभी मुंह के कैंसर के संकेत हो सकते हैं ।स्तन कैंसर और मुंह के कैंसर से बचने के लिए नियमित रूप से स्वयं जांच करें और किसी भी संदेह की स्थिति में तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें ।कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय की शिक्षिका सीमा सिंह और शिक्षक कृष्ण कुमार सिंह का महत्वपूर्ण योगदान रहा ।इस अवसर पर संस्थान की कार्यकर्ता शालिनी सहित सैकड़ों छात्र-छात्राएं उपस्थित रहीं।

अधिवक्ता गोपाल खरे ने ग्रामवासियों का पक्ष रखा एवं याचिका माननीय उच्य न्यायालय रिट दाखिल की

ग्राम उदोतपुरा में पिछले 20 माह से बंद सप्लाई वाटर पाइपलाइन का मामला

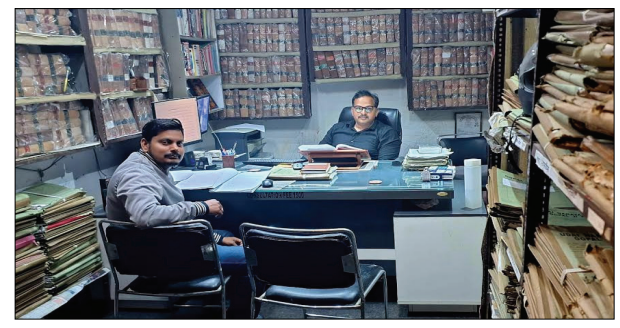

संवाददाता

उरई (जालौन)। ग्राम उदोतपुरा तहसील ब्लाक व जिला जालौन में पिछले 20 महीनों से बंद सप्लाई वाटर पाइपलाइन ट्यूबवेल के सुस्त काम के चलते पूरे गांव में पानी की समस्या है, जो गर्मियों में और बढ़ जाती है , अधिकतर हैडपम्प चापाकल नल खराब है पब्लिक के लिए पीने के पानी का कोई सरकारी सोर्स नहीं । जनता 2 किलोमीटर दूर मलंगा नाला का पानी स्तेमाल करने को मजबूर है इसी प्रकरण में रोहित राजावत व मनोज खरे बनाम उत्तर प्रदेश जल निगम व अन्य की ओर से अधिवक्ता गोपाल खरे ने ग्रामवासियों का पक्ष रखा एवं याचिका माननीय उच्य न्यायालय रिट दाखिल की उच्य न्यायालय ने आदेश कर मैनेजिंग डायरेक्टर उत्तर प्रदेश जल निगम, जिलाधिकारी जनपद जालौन से इस प्रोजेक्ट के बारे में डीटेल में जानकारी मांगी एवं नाराजगी जताते हुए ग्राम उदोतपुरा में स्वच्छ पीने के पानी को प्रत्येक घर तक उपलब्ध कराने के निर्देश दिए एवं 21 फरवरी 2025 को पुनः सुनवाई के लिए केस की तारीख नियत की।

संक्षिप्त सामाचार

कांशीराम चौकी इंचार्ज के संरक्षण में ग्राम मडोरा में अवैध शराब की बिक्री जोरों पर

उरई (जालौन)। शहर कोतवाली उरई क्षेत्र के अंतर्गत पड़ने वाली कांशीराम पुलिस चौकी के इंचार्ज के संरक्षण में चौकी क्षेत्र के ग्राम मड़ोरा में अवैध शराब की बिक्री जोरों पर की जा रही है। फिर भी चौकी इंचार्ज अवैध शराब की बिक्री करने वाले ब्यक्ति पर कार्यवाही करने कतराते हुए देखे जा रहे है ।जबकि गांव कोई देशी शराब का सरकारी ठेका नहीं है। कांशीराम कालौनी पुलिस चौकी क्षेत्र के अंतर्गत कोंच रोड़ स्थित ग्राम मड़ोरा में सरकारी देशी शराब के ठेके पर मिलने वाला 70 रुपये क्वाटर ब्लैक में 100 रुपये का बेच रहा है ।शिवम नामक ब्यक्ति यह शराब का अवैध धंधा मड़ोरा स्थित बीआरसी के पीछे सुरेंद्र पोला वालों के पास संचालित किया जा रहा है ।इसके बाद भी अवैध शराब की बिक्री करने वाले शिवम नामक ब्यक्ति पर पुलिस हाथ डालने से कतराती हुई देखी जा रही है।

पीडीए जन चौपाल के चौथे चरण का कार्यक्रम घोषित

उरई (जालौन)। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के आह्वान पर और प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल के निर्देशन पर जिले में जिला अध्यक्ष दीपराज गुर्जर के नेतृत्व में पीडीए जन चौपाल का कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत जिला अध्यक्ष दीपराज गुर्जर ने आज चौथे चरण का कार्यक्रम 14 फरवरी 2025 से 23 फरवरी 2025 तक घोषित कर दिया। घोषित कार्यक्रम में उन्होंने बताया कि 14 फरवरी 2025 को डकोर ब्लॉक के कैथरी गांव में सुबह 11ः00 बजे 15 फरवरी 2025 को डकोर ब्लॉक के हरदोई गांव में सुबह 11ः00 बजे 16 फरवरी 2025 को कालपी नगर के मोहल्ला अंबेडकर के पास सुबह 11ः00 बजे और तरीबुलदा मोहल्ला में अपराह्न 3ः00 बजे। 17 फरवरी 2025 को कदौरा ब्लाक के उदनपुर गांव में सुबह 12ः00 बजे और पथरेटा गांव में अपराह्न 2 बजे । 19 फरवरी 2025 को डकोर ब्लॉक के व्यासपुरा गांव में सुबह 11ः00 बजे और कोच ब्लॉक के विलायां गांव में अपराह्न 3ः00 बजे। 20 फरवरी 2025 को महेवा ब्लाक के मंगरौल गांव में दोपहर 12ः00 बजे और बीजापुर में अपराह्न 2 बजे। 21 फरवरी 2025 को रामपुरा ब्लाक के निनावली गांव में अपराह्न 2 बजे। 23 फरवरी 2025 को डकोर ब्लॉक के गढ़र गांव में दोपहर 12ः00 बजे और जालौन ब्लाक के कुसमरा गांव में अपराहन 3ः00 बजे पीडीए जन चौपाल कार्यक्रम सुनिश्चित किए गए हैं। उन्होंने समाजवादी पार्टी के सभी वरिष्ठ नेताओं पदाधिकारी कार्यकर्ताओं से अपील की है कि वे अपने-अपने क्षेत्र में होने वाली पीडीए जन पंचायत कार्यक्रम में अवश्य पहुंचे।

दौड़ा दौडाकर ईंट पत्थरों से मारकर किया घायल पुलिस ने लिखा मुकद्दमा

कोंच। थाना नदीगांव के ग्राम शिवनी बुजुर्ग में एक पक्ष ने दूसरे पक्ष को दौड़ा दौडाकर मारा जिससे दूसरा पक्ष घायल हो गया पुलिस को सूचना मिलने पर पुलिस ने मुकद्दमा दर्ज कर कार्यवाही शुरू कर दी है ग्राम शिवनी बुजुर्ग निवासी अमर दीप पुत्र रामेश्वर दयाल ने थाने में दिन बुधवार को तहरीर देते हुए बताया कि घटना दिनांक बीती शाम 4 बजे की है जब मैं अपने घर के सामने खड़ा था उसी समय लालजी व देबेन्द्र पटेल पुत्रगण गनेशराम अनिकेत पुत्र लालजी अनुज पुत्र श्यामलाल आये और मेरे पिता से राम जानकी मंदिर के बारे में बातचीत करते हुए और अचानक से लात घूंसों से मारना शुरू कर दिया और जब हम लोग घर के अंदर भागे तो उक्त लोगों ने दौड़ा दौडाकर मारापीटा और उक्त लोग घर पर ईंट पत्थर फेंकने लगे जिससे मेरे छोटे भाई की पत्नी सीता घायल हो गयी पड़ोसियों के आ जाने पर उक्त लोग जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गए अमर दीप की तहरीर पर पुलिस ने मुकद्दमा संख्या 20/25 धारा 333/115(2)/352/351(2) बी एन एस में दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पूर्व केंद्रीय मंत्री श्रद्धेय चौधरी अजीत सिंह की मनाई गयी जयंती

संवाददाता

उरई (जालौन)। राष्ट्रीय लोकदल के जिलाध्यक्ष विपिन शिवहरे ध्रुप के नेतत्व में लियाक़त अली क्षेत्रीय अध्यक्ष अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के मुख्य अतिथि में नेत्र हीन विद्यालय में नगर अध्यक्ष अनिल दीक्षित, उपाध्यक्ष गगन द्विवेदी, युवा जिलाध्यक्ष अनोज पाल के साथ जाकर नेत्रहीन बच्चों को फल बितरण किये। इस दौरान जिलाध्यक्ष विपिन शिवहरे ने नेत्रहीन बच्चों के बीच में बैठ कर उनसे उनका हाल चाल लिया। उन्होंने बताया की आज स्व चौधरी अजित की 86वीं जयंती है इस उपलक्ष्य में हम आप लोगो की बीच मे जयंती मनाने आय है ।इस दौरान रालोद के पदादिकारी एवं कार्यकर्त्ता बड़ी संख्या मौजूद रहे।

सामाजिक भेदभाव और हिंसा के खिलाफ 'जागते रहो' अभियान शुरू

संवाददाता

नरैनी(बाँदा)। तहसील परिसर नरैनी से उपजिलाधिकारी सत्यप्रकाश ने 'जागते रहो' पांच दिवसीय अभियान को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया ।इस अभियान का उद्देश्य सामाजिक भेदभाव और हिंसा के खिलाफ जागरूकता बढ़ाना है ।संस्था के डायरेक्टर महेन्द्र कुमार ने बताया कि यह अभियान 20 गांवों में सघन रूप से संचालित किया जा रहा है ।पहले दिन 12 फरवरी को गहबरा,नौगवा और गुढ़ा गांव में सार्वजनिक बैठकों के माध्यम से गीत-संगीत, परिचर्चा और नारों के जरिए सामाजिक भेदभाव और हिंसा के विभिन्न पहलुओं पर जागरूकता फैलाई गई ।उन्होंने संविधान प्रदत्त लिंग,जाति,धर्म और पहचान के आधार पर भेदभाव व हिंसा मुक्त सुरक्षित जीवन जीने के अधिकारों पर चर्चा की ।कार्यक्रम के कोऑर्डिनेटर जगदीश लाल ने बताया कि इस

अभियान के माध्यम से मानवता की सहजीवी साझी संस्कृति को मजबूत करने का संकल्प लिया गया है ।जागरूकता के दौरान उनके प्रस्तुत गीत हल चलाकर खेतों को मैंने ही सजाया रे,गेहूं,धान, मक्के को मैंने ही उगाया रे,मेरे लिए न्याय नहीं रे सुनकर समुदाय के लोग भावुक हो गए ।सहयोगी संस्था संस्कार सेवा समिति से जुड़े सुरेश कुमार ने पढ़ लो संविधान, पढ़ लो संविधान, मिल जाईए तोर अधिकार रे गीत के माध्यम से जागरूकता बढ़ाई ।इस अभियान में प्रमुख रूप से सुरेश कुमार,जगदीश लाल,फील्ड फैसिलिटेटर मिथला,राजेन्द्र प्रसाद, शिवदेवी, सूर्यप्रकाश,मनीष कुशवाहा,रानी अहिरवार,राजेंद्र वर्मा, महेन्द्र कुशवाहा और जागेश्वर प्रसाद सहित कई सामाजिक कार्यकर्ता

मरका पुलिस ने गुम हुए मूक-बधिर बच्चे को परिजनों से मिलाया

बाँदा। पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल के निर्देशन में चलाए जा रहे ऑपरेशन मुस्कान के तहत थाना मरका पुलिस ने एक गुमशुदा 10 वर्षीय मूक-बधिर बालक को उसके परिजनों से सकुशल मिलवा दिया। 11 फरवरी 2025 की रात को 5468 को सूचना मिली कि मरका क्षेत्र में एक 10 वर्षीय बालक रास्ता भटक गया है, जो बोल और सुन नहीं सकता ।सूचना पर तत्काल थाना मरका पुलिस सक्रिय हुई और आस-पास के लोगों से पूछताछ की ।जांच के दौरान पता चला कि बच्चा गुलाब (पुत्र स्व. बुद्धलाल,निवासी कस्बा व थाना नरैनी) अपने मामा दिनेश कुमार (पुत्र बसदेव वर्मा, निवासी अरवारी, मरका) के घर शादी में आया था ।पुलिस ने बच्चे के माता-पिता का पता लगाकर उसकी मां माया देवी और मामा को सकुशल सुपुर्द कर दिया ।बेटे को पाकर उसकी मां भावुक हो गई और पुलिस टीम का दिल से आभार जताया ।परिजनों ने थाना मरका पुलिस की त्वरित कार्रवाई की सराहना की ।ऑपरेशन मुस्कान के तहत पुलिस का यह सराहनीय कार्य मानवता और कर्तव्यपरायणता की मिसाल पेश करता है।

संत रविदास जयंती समारोह आयोजित

कई नेताओं ने जेडीयू की सदस्यता की ग्रहण

संवाददाता

बाँदा। जनतादल यूनाइटेड (जेडीयू) कार्यालय में प्रदेश अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ शालिनी सिंह पटेल की अध्यक्षता में संत रविदास जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई ।इस अवसर पर लगभग तीन दर्जन कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और संत रविदास के विचारों पर चर्चा की।

इस कार्यक्रम के दौरान विभिन्न राजनीतिक दलों से जुड़े एक दर्जन नेताओं ने अपने पदों से त्यागपत्र देकर जेडीयू की सदस्यता ग्रहण की ।नए सदस्यों को पार्टी की नीति और विचारधारा से अवगत कराते हुए प्रदेश अध्यक्ष शालिनी सिंह पटेल ने उन्हें संगठन के प्रति निष्ठा और सेवा की भावना से कार्य करने का

आह्वान किया ।सद्दाम हुसैन (जिला उपाध्यक्ष, युवा प्रकोष्ठ),राजेश कुमार पटेल (जिला कार्यकारिणी सदस्य),रोहित सिंह पटेल (जिला महासचिव युवा प्रकोष्ठ),अखिलेश कुमार यादव (जिला महासचिव जेडीयू),गरिमा सिंह पटेल (जिला अध्यक्ष,समाज सुधार वाहिनी प्रकोष्ठ),शिवमोहन श्रीवास (वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष युवा प्रकोष्ठ),शिवम रैकवार(उपाध्यक्ष,नगर बिसंडा,नगर विकास प्रकोष्ठ),रागिनी तिवारी(जिला अध्यक्ष, महिला प्रकोष्ठ,जेडीयू) और शिवाकांत उर्फ खुशबू किन्नर(जिला अध्यक्ष,किन्नर प्रकोष्ठ,जेडीयू) ने जेडीयू की सदस्यता ग्रहण की ।इस अवसर पर शालिनी सिंह पटेल ने कहा कि संत रविदास ने समाज में समानता,भाईचारे और जातिवाद-मुक्त व्यवस्था की परिकल्पना की थी ।हमें उनके विचारों को आत्मसात कर समाज में समरसता स्थापित करने का संकल्प लेना चाहिए ।कार्यक्रम के दौरान उपस्थित नेताओं और कार्यकर्ताओं ने संत रविदास की शिक्षाओं पर विचार-विमर्श किया और समाज में उनकी प्रासंगिकता पर जोर दिया ।इस आयोजन में पार्टी के अन्य पदाधिकारी और कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे ।सभी ने संत रविदास के आदर्शों को अपनाने और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने का संकल्प लिया।

भक्तों ने श्रद्धानत होकर की केन मईया की आरती

बाँदा। केन नदी की आरती का आयोजन अनवरत जारी है, जिसे प्रत्येक मंगलवार को विश्व हिंदू महासंघ गौ रक्षा समिति एवं गंगा समग्र कानपुर प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न किया जाता है। मीडिया प्रभारी मितेश कुमार ने बताया कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य केन नदी को संरक्षित एवं सुरक्षित रखना है ।कार्यक्रम के दौरान श्रद्धालुओं ने नदियों के संरक्षण पर चर्चा की और केन मां की जलधारा के प्रभावित होने पर चिंता व्यक्त की। कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष महेश कुमार प्रजापति ने उपस्थित श्रद्धालुओं को जागरूक करते हुए केन नदी की महत्ता पर प्रकाश डाला ।उन्होंने कहा, केन नदी हम सभी की जीवनदायिनी है,जो अपने जल से हमारी प्यास बुझाने के साथ-साथ अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति भी करती है।

फौजी के पकड़े न जाने पर चुर्खी पुलिस ने 82 की कार्रवाई

थाना पुलिस फौजी के घर पहुंच कर किया नोटिस चस्पा

संवाददाता

उरई (जालौन)। विगत 25 जनवरी को चुर्खी निवासी फौजी जयवीर सिंह शराब लेने शराब ठेका पर गया था। फौजी ने शराब मिलावटी होने की सेल्समैन से शिकायत की थी। शाम को वह फिर शराब ठेका पर पहुंचा था तो यहां उसने फिर मिलावटी शराब की शिकायत की। इस पर सेल्समैन बुद्ध सिंह व इसका भतीजा चंद्रभान उर्फ चरण सिंह, जगदीश विवाद करने लगे। इन लोगों ने फौजी को बंधक बनाकर कमरे में डाल लिया और मारपीट की। स्वयं को फंसा देख फौजी ने तमंचे से फायर किया तो गोली चंद्रभान को जा लगी थी। गोली की सूचना के बाद पुलिस फोर्स मौके पर पहुंचा और फौजी जयवीर को पकड़ कर ले जाने लगा

तो नाराज लोगों ने फौजी की गलत गिरफ्तारी का विरोध कर पुलिस से भिड़ गए थे। पुलिस कर्मियों के साथ मारपीट करते हुए उसे छुड़ा लिया था। थाना प्रभारी शिवशंकर सिंह ने चुर्खी थाना उप निरीक्षक नरेश की तहरीर पर फौजी जयवीर सिंह, पिता रामकरन सिंह, भाई शिववीर, पप्पू उर्फ धर्मवीर, रणवीर सिंह व वीर नारायण, रुस्तम, सत्यम, अटल, अजय, रितुराज व अंकित समेत 30 अज्ञात पर मुकदमा दर्ज करवाया था। फौजी के पकड़े न जाने पर मंगलवार की शाम को चुर्खी पुलिस ने 82 की कार्रवाई करते हुए उसके घर पर नोटिस चस्पा कर दिया है।

भागवत प्रसाद मेमोरियल इंटर कॉलेज में दो दिवसीय खेल प्रतियोगिता संपन्न

बाँदा। भागवत प्रसाद मेमोरियल इंटर कॉलेज में आयोजित दो दिवसीय खेल प्रतियोगिता का सफल समापन हुआ। इस प्रतियोगिता में छात्रों को चार हाउस-साराभाई हाउस,टैगोर हाउस, अशोका हाउस और रमन हाउस-में विभाजित किया गया था। विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के रोमांचक मुकाबलों के बाद अशोका हाउस को विजेता घोषित किया गया, जबकि टैगोर हाउस उपविजेता रहा। प्रतियोगिता में खो-खो कबड्डी, वॉलीबॉल, एथलेटिक्स, टैग ऑफ वॉर और क्रिकेट जैसे खेलों का आयोजन किया गया। प्रत्येक हाउस में शिक्षक भी शामिल थे, जिन्होंने अपने-अपने हाउस का नेतृत्व किया। अशोका हाउस की टीम का मार्गदर्शन लक्ष्मी प्रिया साहू, मेनका, देवेंद्र और मनोज विश्वकर्मा ने किया। वहीं, टैगोर हाउस के प्रमुख शिक्षकों में विश्वजीत सिंह, देव प्रसाद, माधुरी और गरिमा शामिल थे। प्रतियोगिता के निर्णायक क्रीड़ा अध्यापक लबित यादव और दीपक सिंह थे, जबकि स्कोरर की भूमिका रोशनी और संवेन्द्र सिंह ने निभाई। विजेता और उप विजेता टीमों को प्राचार्य राजेंद्र सिंह और महेश कुमार द्वारा ट्रॉफी और मेडल प्रदान किए गए।

कलशयात्रा के साथ गल्ला मंडी उरई में 34वां श्री विष्णु महायज्ञ का हुआ शुभारंभ

गल्ला मंडी परिसर से निकाली गयी विशाल कलशयात्रा

संवाददाता

उरई (जालौन)। शहर के राठरोड़ स्थित गल्ला मंडी उरई विशाल कलशयात्रा निकाले बाद 34वां श्री विष्णु महायज्ञ एवं विराट संत सम्मेलन का शुभारंभ हो गया है जो 20 फरवरी तक चलेगा। शहर के राठरोड़ उरई गल्ला मंडी में 34वां श्री विष्णु महायज्ञ आज बुधवार को विशाल कलशयात्रा के बाद प्रारंभ हो गया है ।यह विशाल कलथ यात्रा यज्ञ स्थल गल्ला मंडी से प्रारंभ हुई जिसमें हजारों की संख्या में महिलाओं व पुरुषों ने भाग लिया ।यह कलशयात्रा मौनी मंदिर होते हुए घंटाघर, शहीद भगतसिंह चौराहा होते हुए रेलवे स्टेशन, बेरी बाले बाबा मजार होते हुए गल्ला मंडी यज्ञ स्थल पर समाप्त हुई ।कलशयात्रा में बैंड बाजे तथा विभिन्न प्रकार धार्मिक झांकियां साथ चल रही थी। 13 फरवरी से 19 फरवरी तक श्री मदभागवत कथा होगी जो 12 बजे से 5 बजे तक होगी। श्री मदभागवत कथा का श्रवण

श्री देवकी नंदन ठाकुर जी महाराज करेंगे ।जिसमें यज्ञाचार्य के रूप में प्रो. डा. शिवसम्पत द्विवेदी गांधी महाविद्यालय उरई रहेंगे ।उन्होंने बताया कि रासलीला का आयोजन 13 फरवरी से 19 तक चलेगा जो रात्रि 07 बजे से 11बजे तक चलेगी इस कार्यक्रम का संचालन श्री राधा विनोद संस्थान वृंदावन के कलाकारों द्वारा किया जायेगा। इस दौरान राधा कृष्ण मंदिर का भव्य श्रृंगार, अखंड कीर्तन एवं मेला आदि की भी ब्यवस्था की गयी है ।बताया गया है कि 20 फरवरी को दोपहर 02 बजे से शाम 07 बजे तक भंडार प्रसाद का वितरण किया जायेगा ।जिसमें महिलाओं व पुरुषों के लिए अलग-अलग लाइनों की ब्यवस्था की जायेगी ।कलशयात्रा में प्रमुख रूप से प्रदीप माहेश्वरी प्रदेश अध्यक्ष गल्ला ब्यापार संघ, अध्यक्ष देवीदीन राजपूत, मंत्री अरविंद पटैरिया, कोषाध्यक्ष रामप्रकाश गुप्ता खरका, संयोजक केदार भारद्वाज, यज्ञ संयोजक सतीश कैथवा, संतोष जयसारी, उदय टिमरो, रविन्द्र करमेर, महपाल, शिवकुमार जैसारी, संजू दुबे, राघवेंद्र परिहार, चंद्रशेखर पटेरिया, संतोष गोरन, लालजी सहित आदि लोग मौजूद रहे।

धूमधाम से मनाई गई रविदास संस्थान में संत रविदास क़ी 648 वां जयंती

संवाददाता

उरई (जालौन)। रविदास विकास संस्थान के तत्वाधान में संत शिरोमणि जी का 648 वां जयंती समारोह बुधवार कों रविदास विकास संस्थान, करमेर् रोड उरई में जयंती बड़े धूमधाम से मनाई गई। जिसमें मुख्य अतिथि गौरी शंकर वर्मा सदर विधायक उरई एवं विशिष्ट अतिथि श्री मती गिरिजा चौधरी अध्यक्ष नगर पालिका परिषद उरई मौजूद रही। संत रविदास के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। समिति के सदस्यों नें अतिथियों कों बैच लगाकर स्वागत किया ।आज की अध्यक्षता मुन्ना लाल जाटव नें किया। मंच संचालक राम सनेही बाबू नें किया। सदर विधायक के निधि के द्वारा एक कमरे का निर्माण कराया गया था। जिसका सदर विधायक के द्वारा उदघाटन किया गया। मुख्य अतिथि सदर विधायक गौरी शंकर वर्मा नें कहा कि संत रविदास पवित्र भावना के अध्यात्मिक व्यक्ति थे। रविदास ने भक्ति भावना के विकास के साथ समाज को समरसता

के सूत्र में पिरो कर एकजुट किया था। उनके जीवन से समरसता, समानता एवं राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा मिलती है। डॉ रामाधीन बाबू नें कहा कि जी की वाणी को अपने जीवन मे उतारने की जरूरत है। ऐसे महापुरुष को अपना आदर्श मान कर जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। बौद्ध भिक्षु भी मंच पर उपस्थित रहे। बहुजन महापुरुषों कों जगाने वाले मंडलीय संगीत माया देवी के द्वारा गीत सुनाया गया। बहुजन महानायक जन्मोत्सव आयोजन सयुंक्त समिति के द्वारा मिष्ठान वितरण किया गया। इस मौके पर संरक्षक मंडल ए पी भारती, मानिक चंद्र,कालका प्रसाद, गोपाल महीप, महेंद्र प्रताप सिंह, रतन सिंह, जगदीश प्रसाद, दयाराम, तुलसीराम खन्ना, अध्यक्ष इंजी श्याम करण, उपाध्यक्ष इंजी कल्याण सिंह, सचिव राम सनेही, कोषाध्यक्ष जुगल किशोर, संगठन मंत्री अरविंद्र कुमार, आड़ीटर इंजी राम सेवक, सूचना एवं प्रसारण मंत्री रामेश्वर दयाल, कार्यकारिणी सदस्य इंजी बाला प्रसाद, दयाशंकर, वृन्दावन, राजेश कुमार इंजी गोविन्द दास, मुन्ना लाल जाटव, लल्लूराम त्यागी, स्वामी नारायण, शैलेन्द्र कुमार शिक्षक,अशोक कुमार सिंह, बाबूराम अहिरवार, महेंद्र कुमार, रामकुमार, रामप्रकाश वर्मा, सदस्यगण कालीचरण, श्याम सुन्दर चंचल, डॉ देवेंद्र कुमार,मुन्ना लाल,शिवराम जाटव, रामेश्वर दयाल, बृज किशोर, श्याम लाल प्रेमी,आर एन गौतम, बलवान सिंह, अखिलेश चौधरी, घनश्याम सिंह, चेतराम, ओमप्रकाश, वीरेंद्र कुमार, मंशाराम, किशोर सिंह, इंजी अरविंद कुमार, अशोक कुमार मौर्या, किशुन प्रसाद,सुंदर लाल, रामदास, गंगा प्रसाद, अरविंद कुमार एड, वासुदेव शरण, लालाराम, शम्भू दयाल, पुरन सिंह, संत प्रकाश एड, श्री मती उषा देवी, श्री मती पार्वती देवी, अनिल कुमार भारती, जमुनादास जमखुरी, डॉ रामाधीन,श्याम सुंदर, शैलेन्द्र शिरोमणि,कमल दोहरे, राम औतार सिंह गौतम, महेंद्र कुमार, भगवती शरण पांचाल, सुधाकर राव, पुनीत भारती, रामप्रकाश गौतम, अजय कुमार श्रीवास, दीपेंद्र सिंह, देवेंद्र जाटव,जितेंद्र गौतम,अरविंद खाबरी, संत शिरोमणि,रहे। व आयोजक समिति नें आये हुए अतिथि व समस्त लोगों का आभार प्रकट किया।

प्यारा बचपन प्ले स्कूल में धूमधाम से पांचवे वार्षिक खेल कार्यक्रम का हुआ आयोजन, बच्चों ने लोगों का मन मोहा

शकुन टाइम्स संवाददाता

कर्नलगंज, गोण्डा। बुधवार 12 फरवरी को कर्नलगंज नगर में स्थित प्यारा बचपन ए प्ले ग्रुप स्कूल में पांचवे वार्षिक खेल कार्यक्रम का धूमधाम से आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ फीता काटकर वरिष्ठ पत्रकार अशोक शुक्ला व सपा के वरिष्ठ नेता फहीम अहमद उर्फ पप्पू एवं द जर्नलिस्ट एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष महादेव प्रसाद मौर्य ने किया। प्यारा बचपन ए प्ले स्कूल के एनुअल स्पोर्ट मीट 2025 का राष्ट्रगान के शुरुआत के साथ छोटे-छोटे बच्चों द्वारा ड्रिल कर कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन संस्था की डायरेक्टर खुशनुमा हसन ने किया। संस्था के मैनेजर मोहसिन ख़ान ने कार्यक्रम में आये समस्त अतिथियों का बैज? लगाकर स्वागत किया। तत्पश्चात सपा के वरिष्ठ नेता फहीम अहमद उर्फ पप्पू ने सभी अतिथियों व पत्रकार गणों अशोक शुक्ल, वीरेन्द्र तिवारी, पवनदेव सिंह, अनुराग मिश्र, जीतलाल गोस्वामी, अभय प्रताप सिंह, अंग्रेज़ गुप्ता, प्रवीण श्रीवास्तव, रमेश पाण्डेय, एम.पी मौर्य व शिक्षक रवि प्रताप सिंह तथा जगदंबा प्रसाद तिवारी सहित अन्य लोगों को विद्यालय परिवार की ओर से शील्ड भेंट कर सम्मानित किया। इस दौरान छात्रों? ने देशभक्ति व मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत कर अतिथियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस दौरान विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता चेयर जंपिंग में सिद्धार्थ ने प्रथम, ज़ैनब ने द्वितीय और अखिल मौर्य ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। बाल बैलेंसिंग में सबा मंसूरी, इक़रा बानो, आसिफा, उमैमा ज़ुबिया ने स्थान हासिल किया। विजयी छात्र, छात्राओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय के मैनेजर व निदेशक ने सभी छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए हुए उन्हें आर्शीवाद दिया। वहीं आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में छात्र,छात्राओं के अभिभावकगण, गणमान्य सहित काफी संख्या में लोग मौजूद रहे।

संत रविदास का जीवन मानवता और प्रेम का प्रतीकः विनोद पटेल

शकुन टाइम्स संवाददाता

बहराइच । संत रविदास जयन्ती के अवसर पर पं. रामनरेश इण्टर कालेज फखरपुर के परिसर में आयोजित दलित चेतना सम्मेलन एवं विचार गोष्ठी का मुख्य अतिथि मा. सदस्य, राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग, उत्तर प्रदेश विनोद कुमार पटेल ने विशिष्ट अतिथि विधानसभा कैसरगंज के संयोजक गौरव वर्मा, आरएसएस के विभागीय कार्यवाह अम्बिका प्रसाद, मण्डल अध्यक्ष फखरपुर अभिषेक शुक्ला, नायब तहसीलदार सचिन कुमार श्रीवास्तव के साथ दीप प्रज्वलित कर तथा संत रविदास जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। जबकि विद्यालय की छात्राओं द्वारा स्वागत गीत भी प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि श्री पटेल ने कार्यक्रम स्थल पर मौजूद मीडिया प्रतिनिधियों को अंगवस्त्र भेंटकर सम्मानित भी किया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री पटेल ने कहा कि संत रविदास जी मध्यकाल में भारत के एक प्रसिद्ध संत थे। जिन्हें संत शिरोमणि की उपाधि दी गई है। संत रविदास जी ने रविदासीया, पंथ की स्थापना की और इनके द्वारा रचित कुछ भजन सिख समुदाय के पवित्र ग्रंथ गुरुग्रंथ साहिब में भी शामिल हैं। रविदास जी की संत परम्परा बहुत उच्च कोटि की रही। श्री पटेल ने कहा कि हमें संत रविदास जी से प्रेरणा लेते हुए उनके द्वारा बताये गये रास्ते पर चलकर समाज की सेवा करते रहे। संत रविदास का जीवन मानवता और प्रेम का प्रतीक था, और उनकी शिक्षाएं आज भी समाज को सही दिशा दिखाने में सक्षम हैं। विशिष्ट अतिथि गौरव वर्मा, जगदंबिका वर्मा, आयोजक पेशकार यादव व अन्य वक्ताओं ने संत रविदास जी के व्यक्तित्व व कृतत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सर्वजन हिताय जीव मात्र मानव कल्याण रविदास जी के जीवन शैली की विशेषता है।

संक्षिप्त सामाचार

कर्मचारी के अभाव में डाकघर का कार्य प्रभावित, उपभोक्ता परेशान

कुशीनगर। जिले के नगर दुदही स्थित डाक घर में कर्मचारी के अभाव के कारण उपभोक्ता परेशान हो रहे हैं। हालात ऐसे है कि जमा व निकासी के लिए डाकघर का चक्कर लगाना पड़ रहा है। जिसको लेकर डाकघर के अभिकर्ताओं ने उच्च अधिकारियों से वार्ता कर एवं रजिटर्ड डाक से पत्र भेजकर स्थानीय समस्याओं से कराया अवगत है। जानकारी अनुसार डाक कर्मी के स्थानांतरण हो जाने व उनके जगह पर अन्य डाक कर्मी के न भेजे जाने से यह सारी समस्याएं उत्पन्न हुई है। भीषण लग्न होने पर उपभोक्ता अपने ही पैसे को निकालने के लिए डाकघर का चक्कर लगा रहे हैं । वहीं डाकघर अभिकर्ता भारत सरकार वित्त मंत्रालय के नियमानुसार बचत योजना के संग्रह धनराशियों को जमा करने को लेकर परेशान हैं यदि वह समय से जमा नहीं होगा है तो उन्हें विलम्ब शुल्क अपने जेब से भरना पड़ेगा। इस दौरान डाकघर पर उपस्थित अरूण कुमार अग्रवाल, अजय कुमार, मुन्ना कुमार शाह, रविन्द्र, सोनू, रमजान, हैदर अली, अर्जुन, रामचन्द्र गुप्ता, हरिकेश गुप्ता, विरेन्द्र शर्मा, विजय, रेनू देवी, सरोज देवी, प्रमोद कुमार अग्रवाल, प्रमोद गुप्ता, अशोक कुमार गुप्ता, महेश, आदि ने अपनी बताया कि हमनें विभाग को पत्र प्रेषित कर शीघ्र समस्या के स्थाई समाधान की मांग किया।

पं0 सुरेंद्र दीक्षित जी पुण्यतिथि आज

कुशीनगर। पूर्वांचल के गौरव पं0 सुरेंद्र दीक्षित की 22 वीं पुण्यतिथि 13 फरवरी को मनायी जायेगी। इस कार्यक्रम में पूर्वांचल के आध्यात्मिक ऊर्जा के केंद्र संस्कृत और ज्योतिष के प्रकांड विद्वान पं0 विष्णु प्रभाकर पांडेय और समाज सेवा के क्षेत्र में डॉ. सीवी सिंह को कुशीनगर रत्न से सम्मानित किया जाएगा। यह जानकारी स्व. सुरेन्द्र दीक्षित के पुत्र पंकज दीक्षित व कार्यक्रम के संयोजक शैलेन्द्र दत्त शुक्ल ने संयुक्त रूप से देते हुए बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि खलीलाबाद के पूर्व सांसद और पं हरिशंकर तिवारी जी के ज्येष्ठ पुत्र कुशल तिवारी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में स्व सुरेन्द्र दीक्षित जी का सानिध्य प्राप्त पूर्व विधायक किसान नेता राधेश्याम सिंह होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा अरुण गौतम करेंगे जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रबंधक हनुमान इंटर कालेज पडरौना मनोज शर्मा, प्रबंधक रियल पैराडाइज एकेडमी डा निरेन पांडेय तथा डॉ महमूद आलम उपस्थित रहेगें। कार्यक्रम में समाजसेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले चुनिंदा व्यक्तित्व को पं सुरेन्द्र दीक्षित उत्कृष्ट समाजसेवा पुरस्कार एंव शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले श्रेष्ठ जन को पं अनिरुद्ध शुक्ल उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान से सम्मानित किया जाएगा।

गंगा में डूबने से युवक की मौत

वाराणसी। चौबेपुर थाना अंतर्गत बरथरा कला निवासी आशुतोष तिवारी उर्फ किशन तिवारी उम्र 25 की कल दिन बुधवार को बरथरा घाट पर नहाते समय गंगा नदी में डूबने से मौत हो गई।शव को खोजने के लिए गोताखोर बुलाए गए पर शव का पता नही चल सका और गोताखोरों द्वारा लगातार साहब की खोज जारी है

बड़े धूमधाम से संत रविदास की निकाली गई शोभायात्रा

शकुन टाइम्स संवाददाता

मछलीगांव /कैंम्पियरगंज। संत रविदास की जयंती बड़े ही धूमधाम मनाई गई बता दे की महान संत जो कि खुद को सच्चा एवं सिद्ध संत के रूप में जगत को समाज को दिशा एवं दशा बताने वाले उस महान संत रविदास जी की आज मछलीगांव के परसौनी टोला स्थित संत रविदास जी के मंदिर से पूजा पाठ करके पूरे विधि विधान से शोभायात्रा निकाला गया शोभायात्रा का अगुवाई मंदिर के पुजारी बाबा चंद्रभान दास के दिशा निर्देशन में परसौनी टोला से संत जी की झांकी निकाली गई झांकी परसौनी टोल से चलकर मौर्य टोला कचेर टोला शनिचरहिया बाजार मगरहिया होते हुए उक्त शोभा यात्रा को परसौनी स्थित मंदिर में पूजा पाठ कर मंदिर में शोभा यात्रा को समाप्त किया गया उक्त झांकी में ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अध्या पासवान मछली गांव, ग्राम प्रधान बरगदही रामप्रीत पासवान, अरुण कुमार मिश्रा ,समाजसेवी प्रदीप कुमार नायक एवं परदेसी पासवान, त्रिभुवन , ईश्वरचंद्र, श्रीराम भारती, प्रमोद कुमार मौर्य, रामकेवल प्रजापति एवं समाजसेवी अभिषेक पासवान, ओम प्रकाश पासवान आदि सैकड़ो लोग शामिल रहे।

शोभायात्रा निकालकर मनायी गयी रविदास जयंती

संत रविदास ने हिन्दू समाज को एक सूत्र में पिरोने का किया कार्य : विनय जायसवाल

शकुन टाइम्स संवाददाता

कुशीनगर। संत रविदास की जयंती बुधवार को ढोल-नगाडे के साथ धूमधाम से मनाई गई। रविदास समाज के लोगो ने संत रविदास कीमभव्य शोभा यात्रा निकाली। जिसमें सैकड़ों की संख्या में लोग शामिल हुए। हर वर्ष के भांति इस साल भी पडरौना नगर में संत रविदास की भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। बाल्मीकि नगर, छावनी, सुभाष चौक, अंबेडकरनगर नौका टोला, कसेरा टोली, साहबगंज सहित विभिन्न मोहल्लों के अलावा बलुचहां, बकुलहां एवं आस-पास के गांवों से संत रविदास की झाकियां लिए आयोजन कमेटी के लोग पडरौना नगर के सुभाष चौक पर एकत्र हुए, जहां से शोभा यात्रा निकाली गई। इसमें डॉ. भीमराव अंबेडकर और महात्मा बुद्ध की झांकियां भी शामिल थीं। यह शोभा यात्रा सुभाष चौक से कोतवाली रोड, धर्मशाला रोड, साहबगंज, मेन बाजार रोड, रामकोला रोड होते हुए पुनः सुभाष चौक पहुंचकर समाप्त हुई।

इसी कडी मे सन्त रविदास की 658 वीं जयंती के अवसर पर नगरपालिका परिषद पडरौना के अध्यक्ष विनय जायसवाल द्वारा नगर के कोतवाली मार्ग पर स्थापित संत रविदास की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर व मिष्ठान वितरण कर धूमधाम से जयंती मनायी गयी। चेयरमैन विनय जायसवाल ने कहा कि रविदासिया पंथ की स्थापना करने वाले सन्त शिरोमणि गुरु रविदास ने अपने वचनों और दोहों से भक्ति की अलग छाप दुनिया में छोड़ी। भक्ति रस के अनन्य कवि सन्त रविदास ने अपने छंदों और गीतों से भक्ति आंदोलन पर स्थायी प्रभाव डाला। नपाध्यक्ष ने कहा कि सामाजिक समानता के लिए अपनी आवाज उठाने वाले सन्त गुरु रविदास ने हिन्दू समाज को एक सूत्र में पिरोने का काम किया था। उन्होंने यह भी कहा कि पिछले 8 वर्षों से लगातार नगरक्षेत्र में स्थापित सभी महापुरुषों और राष्ट्रनायकों की प्रतिमाओं की धुलाई, साफ-सफाई और माल्यार्पण कर प्रतिदिन श्रद्धांजलि दी जाती है एवं राष्ट्रनिर्माण में उनके योगदान को याद किया जाता है। इस दौरान नपा प्रतिनिधि मनीष बुलबुल जायसवाल, नारद प्रसाद,भोला प्रसाद,दिलीप प्रसाद रविंद साह,पिंटू साह, सुनील प्रसाद,पप्पू प्रसाद ,विक्रम प्रसाद,बैजू प्रसाद, ब्रजेश शर्मा, अभय तिवारी, आकाश वर्मा, धर्मेंद्र मद्धेशिया, भास्कर शर्मा, अमित तिवारी, नवेन्दु गिरी, धीरज साह, सनी सिंह, अशोक गुप्ता, सोनू शर्मा, राजेश जायसवाल, जितेंद्र कुशवाहा, रवि चौहान, पिंटू साहनी, सन्तोष पटेल, जितेंद्र मौर्य, निखिल तिवारी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

चोरी गये रूपये के साथ आरोपी गिरफ्तार

शकुन टाइम्स संवाददाता

श्रावस्ती। अपराधियों की धर-पकड़ अभियान में थाना नवीन मार्डन पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर चोरी किये गये रूपये में से 1420 रूपये नगद व घटना मे प्रयुक्त एक अदद लोहे की सरिया के साथ गिरफ्तार किया है। एसपी कार्यालय से मिली सूचना के अनुसार थाना नवीन माडर्न पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर आईपीसी की धारा 305(ए),331(4) बी एन एस का आरोपी विकास पुत्र ओम प्रकाश निवासी ग्राम भीखपुर थाना कोतवाली देहात जनपद बलरामपुर को थाना क्षेत्र के सरयू नहर पुलिया वहद ग्राम कटही दाखिली बगही थाना नवीन माडर्न के पास से गिरफ्तार किया गया। आरोपी की जामा तलाशी से चोरी किये गये रूपये में से 1420 रूपये नगद व घटना मे प्रयुक्त एक अदद लोहे की सरिया बरामद किया गया।

बता दें कि पीड़ित 11.फरवरी नासिर हुसैन पुत्र मो0 निसार निवासी ग्राम व दाखिली वीरपुर खैरहनिया दाखिली पूरेमंशाराम नवीन मार्डन पुलिस थाना श्रावस्ती जनपद श्रावस्ती द्वारा थाना नवीन मार्डन पर प्रार्थना पत्र दिया गया कि वीरपुर गांव में स्थित प्रार्थी की कपड़े की दुकान में अज्ञात चोर द्वारा दुकान का काउन्टर तोड़कर काउन्टर के भीतर रखा करीब 1500 रूपये चोरी कर लिया गया था जिसके संबन्ध में थाना नवीन मार्डन पर आईपीसी की धारा 305(ए),331(4) बी एन एस पंजीकृत किया गया था। जिसके क्रम में बुधवार 12.फरवरी को घटना का सफल अनावरण करते हुए उक्त आरोपी की जामा तलाशी से 500 - 500 के 2 नोट , 100 - 100 के तीन नोट , 20- 20 के तीन नोट , 10-10 के 6 नोट (कुल 1420 रूपये) बरामद हुआ पूछने पर बताया कि मेरे द्वारा 80 रूपये खाने पीने/नशे मे खर्च हो गये है। आरोपी के निशानदेही पर उक्त घटना मे प्रयुक्त एक अदद लोहे की सरिया बरामद करते हुए गिरफ्तार कर जेल भेज दिया ।

मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में पुलिस ने कब्र से निकलवाया शव

शकुन टाइम्स संवाददाता

- परिजनों ने थाने में पत्र देकर युवक की हत्या का आरोप लगाते हुए पोस्टमार्टम कराने की मांग

कुशीनगर। जिले के विशुनपुरा थाना क्षेत्र के बंगाली पट्टी टिकुलिया गांव निवासी एक युवक की लाश मंगलवार को मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में पुलिस ने कब्र से लाश को निकलवाया। परिजनों ने थाने में पत्र देकर युवक की हत्या का आरोप लगाते हुए पोस्टमार्टम कराने की मांग किया था। जिसके बाद पुलिस ने उच्चाधिकारियों से अनुमति मिलने के बाद शव को कब्र से निकालकर पीएम के लिए भेजा। चार दिन पूर्व विशुनपुरा थाना क्षेत्र के बंगाली पट्टी गांव के टिकुलिया टोला निवासी 25 वर्षीय शाहिद गांव से 9 फरवरी को बरवा पट्टी एक बारात में शामिल होने गया था। वहां पर उसकी संदिग्ध हालत में मौत हो गई, घर वालों ने शव को दफन कर दिया। भाई मकसूद अंसारी ने पुलिस को तहरीर देकर भाई की मौत पर संदेह जताया और पोस्टमार्टम कराने की मांग किया। विशुनपुरा पुलिस ने मजिस्ट्रेट को कब्र से शव निकालने के लिए पत्र लिखा था। अनुमति मिलने के बाद मंगलवार को मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में पुलिस ने कब्र से शव निकलवाकर पंचनामा भरकर कर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। इस संबंध में विशुनपुरा थानाध्यक्ष राजू सिंह ने बताया कि कब्र से शव निकालने के लिए मजिस्ट्रेट को पत्र लिखा गया था, जिसके आधार पर अनुमति मिलने के बाद शव को कब्र से निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

लगातार तीसरी बार राहुल बने जिलाध्यक्ष

परिपुर्णानंद सचिव, संतोष कुमार उपाध्यक्ष, अजय कुमार संयुक्त सचिव तथा ज्योति विश्वकर्मा वित्त सचिव निर्वाचित

- ग्रामीण अभियंत्रण विभाग के डिप्लोमा इन्जीनियर्स संघ कुशीनगर की जिला इकाई गठित

शकुन टाइम्स संवाददाता

कुशीनगर। ग्रामीण अभियंत्रण विभाग के डिप्लोमा इन्जीनियर्स संघ कुशीनगर की जिला इकाई का चुनाव नगर के सपहा रोड स्थित पीआईयू कार्यालय परिसर में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। जिसमें लगातार तीसरी बार ई. राहुल कुमार गुप्ता को संगठन का जिलाध्यक्ष चुना गया। जबकि ई. परिपुर्णानंद मिश्रा को जिला सचिव के पद पर निर्वाचित किया गया। चुनाव सम्पन्न हो जाने के बाद उपस्थित सभी सदस्यों ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का माल्यार्पण कर जोरदार स्वागत किया। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत संगठन सचिव पूर्वोत्तर ई. यशवंत गौतम, मंडल अध्यक्ष ई. सुशील कुमार गुप्ता तथा मंडल सचिव ई. देवेन्द्र चौधरी के संयुक्त उपस्थिति में चुनाव सम्पन्न हुआ। जिसमें उपस्थित सदस्यों ने सर्वसम्मति से ई. राहुल कुमार गुप्ता को संगठन का तीसरी बार निर्विरोध जिलाध्यक्ष, ई. संतोष कुमार को उपाध्यक्ष, ई. परिपुर्णानंद मिश्रा को सचिव, ई. अजय कुमार को संयुक्त सचिव, ई. ज्योति विश्वकर्मा को वित्त सचिव पद पर निर्वाचित किया। चुनाव सम्पन्न हो जाने के बाद सदस्यों ने नवनिर्वाचित जिला इकाई के पदाधिकारियों का माल्यार्पण एवं मुंह मीठा करवा जोरदार स्वागत किया। इस अवसर पर ई. संजय कुमार राय (सेवानिवृत्त), ई. अरविंद कुमार सिंह (सेवानिवृत्त), ई. अजय गोड़, ई. अजय प्रसाद, ई. जयप्रकाश सहित तमाम लोग मौजूद रहे। नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष ई. राहुल कुमार गुप्ता ने कहा कि जिस उम्मीद और विश्वास के साथ लगातार तीसरी बार जिम्मेदारी दी गई है। उसपर हर सम्भव खरा उतरने का प्रयास करुंगा। सदस्यों के मान सम्मान पर कोई आंच नहीं आयेगा।

प्यारा बचपन प्ले स्कूल में वार्षिक खेल महोत्सव 2025 का भव्य आयोजन

शकुन टाइम्स संवाददाता

गोंडा। जिले के कर्नलगंज नगर में स्थित प्यारा बचपन प्ले स्कूल में दिनांक 12 फरवरी 2025 को वार्षिक खेल महोत्सव 2025 का आयोजन धूमधाम से संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ फीता काटकर वरिष्ठ पत्रकार अशोक शुक्ला व सपा के वरिष्ठ नेता फहीम अहमद उर्फ पप्पू एवं द जर्नलिस्ट एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष महादेव प्रसाद मौर्य ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान के साथ हुई,जिसके बाद नन्हे-मुन्ने बच्चों ने शानदार ड्रिल प्रदर्शन कर सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम का संचालन संस्था की डायरेक्टर खुशनुमा हसन ने किया,जबकि प्रबंधक मोहसिन खान ने समस्त अतिथियों का बैज लगाकर स्वागत किया। तत्पश्चात सपा के वरिष्ठ नेता फहीम अहमद उर्फ पप्पू ने सभी अतिथियों व पत्रकार गणों अशोक शुक्ल, वीरेन्द्र तिवारी, पवनदेव सिंह, अनुराग मिश्र, जीतलाल गोस्वामी, अभय प्रताप सिंह, अंग्रेज़ गुप्ता, प्रवीण श्रीवास्तव, रमेश पाण्डेय, एम.पी मौर्य व शिक्षक रवि प्रताप सिंह तथा जगदंबा प्रसाद तिवारी सहित अन्य लोगों को विद्यालय परिवार की ओर से शील्ड भेंट कर सम्मानित किया। इस दौरान छात्रों? ने देशभक्ति व मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत कर अतिथियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस दौरान विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता चेयर जंपिंग में सिद्धार्थ ने प्रथम, ज़ैनब ने द्वितीय और अखिल मौर्य ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। बाल बैलेंसिंग में सबा मंसूरी, इक़रा बानो, आसिफा, उमैमा और ज़ुबिया ने अपनी उत्कृष्टता दर्ज कराई। इस कार्यक्रम में बतौर अतिथि डॉ. शकील और सपा के वरिष्ठ नेता फ़हीम अहमद उर्फ पप्पू उपस्थित रहे। वहीं शिक्षकों एवं कर्मचारियों में मोहम्मद अली, ताज ख़ान, रिफ़त ख़ान, मुस्कान सोनी, कंचन लता, उषा मौर्या, मंतशा, नमरा, नगमा शबनम, अफ़ज़ल, दानिश, आमिर, अरबिया, कैलाश नाथ, डीपी वर्मा, आराध्या सिंह, मधु सिंह, फौजिया, तैयबा और प्रतिभा सिंह की विशेष भूमिका रही। कार्यक्रम की संपूर्ण तैयारी शिक्षकों और कर्मचारियों द्वारा की गई। अंत में प्रबंधक मोहसिन खान ने सभी अतिथियों, शिक्षकों और अभिभावकों का आभार व्यक्त किया तथा बच्चों को पुरस्कार वितरण कर कार्यक्रम का सफल समापन किया।

माघ पूर्णिमा पर मंदिरों में उमड़ा श्रद्धालुओं की भीड़, गुरुकुल में समरसता खिचड़ी भोज का हुआ आयोजन

शकुन टाइम्स संवाददाता

श्रावस्ती। भारतीय संस्कृति में वैसे तो बारहों महीनों में कोई न कोई महत्वपूर्ण व्रत-त्योहार होता है, लेकिन धार्मिक दृष्टि से माघ मास को विशेष स्थान प्राप्त है। मघा नक्षत्र से युक्त होने के कारण इस महीने का नाम का माघ नाम पड़ा।ऐसी मान्यता है कि इस मास में शीतल जल में डुबकी लगाने वाले पापमुक्त होकर स्वर्ग लोक जाते हैं।आज माघ पूर्णिमा के मौके पर जिले के सीता द्वार और जगपति माता मंदिर ,संत पथरी मंदिर, विभूति नाथ मंदिर समेत अन्य प्रमुख मंदिरों में सैकड़ों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी है। जिले भर से सीता द्वार मंदिर पहुंचे श्रद्धालुओं ने पवित्र सीता द्वार झील में स्नान कर मंदिरों में दर्शन कर रहे हैं। सीता माता मंदिर और बाल्मिकी मंदिर में दर्शन करने को लेकर लंबी कतार लगी रही है।आज रविदास जयंती होने से अवकाश होने के कारण सरकारी कर्मचारियों ने भी मंदिरों में पहुंचकर माता सीता समेत अन्य मंदिरों में पूजा पाठ किया और परिवार की सुख-समृद्धि का आशीर्वाद मांगा। सीता द्वार मंदिर के महंत पंडित संतोष दास तिवारी ने बताया कि हिंदू धर्म में पूर्णिमा को बहुत शुभ माना जाता है। पूर्णिमा तिथि हर महीने आती है, लेकिन माघ महीने की पूर्णिमा का खास महत्व होता है। इसे माघी पूर्णिमा भी कहते हैं। इस दिन गंगा स्नान, दान-पुण्य और भगवान विष्णु, माता लक्ष्मी, चंद्रदेव की आराधना करने का विधान है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन पूजा-अर्चना और दान-पुण्य करने से जीवन में सुख-समृद्धि और खुशहाली आती है। वहीं, महाकुंभ के दौरान इस पूर्णिमा का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। लक्ष्मण बैराज स्थित जगपति माता मंदिर की महंत कुमारी रीता गिरि और कुमारी अंजनी गिरि ने बताया कि माघ पूर्णिमा माघ मास का अंतिम दिन होता है। इस दिन भगवान विष्णु, माता लक्ष्मी और चंद्रदेव की पूजा करने का विशेष विधान है। माघ पूर्णिमा पर श्रद्धालु उपवास रखते हैं और सत्यनारायण भगवान की कथा सुनते हैं। पुराणों में ऐसा माना जाता है कि इस दिन गंगा स्नान करने और दान करने से व्यक्ति को जीवन के समस्त पापों से छुटकारा मिलता है। इसके साथ ही इस दिन हनुमान जी की पूजा करने से संकटों से मुक्ति मिलती है। मान्यता है कि इस दिन देवी-देवता भी गंगा में स्नान करने के लिए धरती पर आते हैं। इसलिए, माघ पूर्णिमा को बेहद पवित्र और अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है। इसके साथ ज्योतिष के अनुसार, जब चंद्रमा कर्क राशि में और सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते हैं तब उस समय माघ पूर्णिमा पड़ती है। ज्योतिष के अनुसार, इस समय किया गया स्नान और दान विशेष फल देता है। इस दिन सच्चे भाव से पूजा-पाठ करने और पवित्र नदियों में डुबकी लगाने से सूर्य और चंद्रमा के दोषों से भी मुक्ति मिलती है। वहीं, ब्रह्मवैवर्त पुराण में कहा गया है कि इस दिन भगवान विष्णु गंगा जल में निवास करते हैं, इसलिए गंगा स्नान को बहुत शुभ माना जाता है।

वही जिले के गिलौला थाना क्षेत्र अन्तर्गत संत रविदाजी की जयंती पर श्री शुरभरती विद्या पीठ में गुरूकुल गिलौला में समरसता खिचड़ी भोज का आयोजन किया गया।

इस मौके पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विभाग प्रचारक जी ,सरस्वती विद्या मंदिर के प्रदेश निरीक्षक मिथलेश जी ,संघ के श्रवण कुमार दूवे, विश्व हिंदू परिषद के संगठन मंत्री अजय जायसवाल , सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के प्राचार्य अशोक कुमार मिश्र, भाजपा मंडल के पूर्व अध्यक्ष मनोज तिवारी, यज्ञराम मिश्र, दूध नाथ शुक्ला , भाजपा पूर्व जिला उपाध्यक्ष संतोष पाठक गुरूकुल के प्राचार्य गण व विश्व हिंदू परिषद के कार्य कर्ता गण उपस्थिति रहे।

यूपी बोर्ड परीक्षा : जनपद के 135 केंद्रों पर तैनात किए जाएंगे स्टैटिक, 27 सेक्टर मजिस्ट्रेट

शकुन टाइम्स संवाददाता

मऊ। उत्तर प्रदेश बोर्ड की परीक्षाएं आगामी 24 फरवरी से शुरू होने वाली हैं। इसे लेकर विभाग सहित स्कूलों में हलचलें तेज हैं। जनपद के कुल 135 केंद्रों पर आयोजित 10वीं व 12वीं की परीक्षा में कुल 78986 परीथार्थी शामिल होंगे। इसमें कक्षा 10वीं के 39215 तथा 12वीं के 39773 छात्र शामिल होंगे। परीक्षा को नकल विहीन संपन्न कराने के लिए जनपद को 27 सेक्टरों में बांटा गया है और सभी सेक्टरों में सेक्टर मजिस्ट्रेटों की तैनाती कर दी गई है। इसके अतिरिक्त 135 परीक्षा केंद्रों पर स्टैटिक मजिस्ट्रेट नियुक्त कर दिए गए हैं। साथ ही चारों तहसीलों के एसडीएम को जोनल मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है। विभाग द्वारा सभी केंद्रों पर पुलिस की तैनाती के लिए जिलाधिकारी कार्यालय को पत्र भेज कर सुरक्षा के बाबत फोर्स की

- चारों तहसीलों के एसडीएम को बनाया जाएगा जोनल मजिस्ट्रेट
- संचालित किया जा रहा वायस रिकार्डिंग युक्त कंट्रोलरूम

तैनाती की मांग की जा रही है। परीक्षा केंद्रो पर शिक्षकों की कमी के लिए विद्यालयों से सूची मांगी गई है जहां कहीं शिक्षकों की कमी होगी वहां वित्तवीहीन विद्यालयों व प्राथमिक शिक्षकों की तैनाती की जाएगी। जिला विद्यालय निरीक्षक वीरेंद्र प्रताप सिंह बताया कि कार्यालय में वायस रिकार्डिंग युक्त कंट्रोल रूम 24 घंटे संचालित रहेंगे। यहां से सभी केंद्रों की निगरानी की जाएगी। बताया कि स्टैटिक, सेक्टर व जोनल मजिस्ट्रेटों के अतिरिक्त जिले की टीम भी उड़न दस्ता के रूप में पूरे परीक्षा में सक्रिय रहेगी। जहां कहीं भी शिकायत मिली वहां के केंद्र व्यवस्थापक के उपर कार्रवाई की जाएगी। बताया कि रामउग्रह प्रसाद को कंट्रोलरूम का प्रभारी नियुक्त किया गया है। इनके नेतृत्व में टीम परीक्षा की मानिटरिंग करती रहेगी। बताया कि परीक्षा के दौरान किसी तरह का इंलेक्ट्रानिक्स उपकरण आदि परीक्षा केंद्र के अंदर ले जाना प्रतिबंधित रहेगा। परीक्षा के दौरान अगर मोबाइल आदि मिला तो केंद्र व्यवस्थापक पर कार्रवाई की जाएगी। निरीक्षण करने पर कुछ जगहों पर मिली कमियों को तत्काल दुरुस्त करने का निर्देशित किया गया है।

एक माह से गायब बिटिया का चंदौली पुलिस को अभी तक नहीं लगा सुराग

- बेटियों के सुरक्षा में फीकी पड़ी योगी की पुलिस
- एक माह से गायब 15 वर्षीय बच्ची का अभी तक नहीं लगा सुराग
- परिजनों की आखिरी उम्मीद योगी आदित्यनाथ

शकुन टाइम्स संवाददाता

चंदौली। धानापुर थाना क्षेत्र के निदिलपुर गांव निवासी रंगनाथ गिरी की 15 वर्षीय पुत्री सावित्री बीते 13 जनवरी 2025 से गायब है। विदित हो कि 12 जनवरी को भोर में शौच के लिएं घर से निकली सावित्री देर सुबह तक घर नहीं पहुंची, परिजनों ने खोज बिन किया लेकिन युक्ति की कोई खबर नहीं मिली। जिसके बाद 15 जनवरी को लिखित तहरीर देने के बाद 20 जनवरी को लगभग आधा दर्जन लोगों के खिलाफ पुलिस ने नामजद मुकदमा दर्ज किया। लड़की किस अवस्था में, कहां है जिसका पता अभी तक पुलिस नहीं लगा पाई है। वहीं आस-पास के गांवों में तरह-तरह की बातें सुनने को मिल रही है। युक्ति के माता-पिता बेटी की अवस्था जानने के उम्मीद से दर-दर भटक रहे है। अब उनकी आखिरी उम्मीद सूबे के मुखिया योगी आदित्यनाथ है परिजन जल्द उनसे गुहार लगाने के लिएं लखनऊं सीएम कार्यालय के लिएं निकलने वाले है। नारी सुरक्षा, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं जैसे दर्जनों योजनाएं बेटियों के सुरक्षा, शिक्षा में सरकार द्वारा संचालित की जा रही है। जिसके बाद भी उत्तर प्रदेश की बेटियां सुरक्षित नहीं है।

मामले को बारीकी से जानने के लिएं मैं खुद परिजनों के घर गया था। परिजनों को जिनपर शक है उनकी जांच सर्विलांस टीम व अन्य प्रकार से की जा रही है। पुलिस जल्द बच्ची को बरामद कर लेंगी।

रघुराज,
(सीओ, सकलडीहा)

एक बेटी का पिता होने के नाते बेटी के गायब होने का दर्द मैं बखूबी समझ सकता हूं। युवा संघर्ष मोर्चा परिजनों के साथ है, एसपी डीएम से मिल मामले की उच्चस्तरीय जांच कराने की बात कही जाएंगी।

एड. शैलेन्द्र पांडेय (कवि)
(संयोजक, युवा संघर्ष मोर्चा)

संक्षिप्त सामाचार

थानाध्यक्ष मुकेश कुमार अपना पदभार ग्रहण करने के बाद अपराध नियंत्रित रोकने के लिए दिन-रात लगे रहते हैं

कैमूर/भभुआ। पुलिस निरीक्षक सह थाना अध्यक्ष भभुआ मुकेश कुमार अपना पदभार ग्रहण करने के बाद भभुआ थाना क्षेत्र अंतर्गत विभिन्न कांडों के निपटारा में तेजी के साथ अपराध पर भी नियंत्रित करने में दिन रात लगे रहते हैं। पुलिस निरीक्षक सह थाना अध्यक्ष मुकेश कुमार भभुआ शहर में सुरक्षा व्यवस्था पर कड़ी निगाह रखते हुए रात्रि गश्ती में भी अपने जवानों के साथ भ्रमण करते हैं ।जहां पर पुलिस द्वारा शहर ही नहीं क्षेत्र के इलाकों में भी फ्लैग एवं गस्ती अभियान चलाया जाता है। उन्होंने बताया कि थाना क्षेत्र में अमन चैन एवं शांति के लिए पुलिस तत्परता के साथ अपना कार्य कर रही है। तो वही थाना क्षेत्र में अमन चैन एवं शांति के लिए एसपी कैमूर हरिमोहन शुक्ला को भी कैमूर वासियों ने बधाई दिया है जिनके शासन काल में शांति व्यवस्था एवं अमन चैन पुलिस की तत्परता के साथ दिख रही है तो वही अपराधी भी अपराध की दुनिया छोड़ समाज के मुख्य धारा में जुड़ने लगे हैं। लोगों की मानना है कि इसका मुख्य कारण बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के शासनकाल का भी बताया जाता

बरेका में अंतरविभागीय बास्केटबॉल प्रतियोगिता का रोमांचक मुकाबला

बनारस/वाराणसी। बनारस रेल इंजन कारखाना में खेल संस्कृति एवं स्वस्थ मनोरंजन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अंतरविभागीय बास्केटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 6 टीमें हिस्सा ले रही हैं। यह प्रतियोगिता 11 फरवरी से 14 फरवरी 2025 तक लीग-कम-नॉकआउट फॉर्मेट में खेली जा रही है। फाइनल मुकाबला 14 फरवरी को दूधिया रोशनी में बरेका के बास्केटबॉल मैदान में होगा, जो रोमांच से भरपूर होने की उम्मीद है। दिनांक 12 फरवरी को मुख्य अतिथि एवं जन संपर्क अधिकारी श्री राजेश कुमार ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताएं कर्मचारियों में टीम भावना, अनुशासन और फिटनेस को बढ़ावा देने में सहायक होती हैं। आज का पहला मुकाबला सिविल एवं भंडार डिपो बनाम प्लांट डिवीजन के बीच हुआ, जिसमें प्लांट डिवीजन की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए सिविल एवं भंडार डिपो को 15-11 के अंतर से हराकर जीत दर्ज की। एक अन्य दूसरे मैच में लोको डिवीजन-1 और इंजन डिवीजन आमने-सामने थे। यह मैच बेहद रोमांचक रहा, जिसमें लोको डिवीजन-1 ने इंजन डिवीजन को 21-06 से कड़ी टक्कर देते हुए हराया। दूसरे मैच में कर्मचारी परिषद के सदस्य श्री अमित यादव ने लोको डिवीजन-1 की ओर से खेलते हुए बेहतरीन प्रदर्शन किया। उल्लेखनीय है कि प्रतियोगिता के पहले दिन 11 फरवरी को उद्घाटन मैच सिविल एवं भंडार डिपो बनाम लोको डिवीजन-2 के बीच खेला गया, जिसमें सिविल एवं भंडार डिपो की टीम ने शानदार खेल दिखाते हुए लोको डिवीजन-2 को हराया। वहीं, दूसरे मुकाबले में लोको डिवीजन-1 ने प्रशासन टीम को 26-23 के करीबी मुकाबले में मात दी। इस आयोजन में बरेका कर्मचारी परिषद के सदस्य श्री धर्मेन्द्र सिंह ने खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाया, साथ ही वरिष्ठ बास्केटबॉल खिलाड़ी श्री एल. के. बिसवाल, श्री राजू यादव, श्री संदीप यादव और श्री अभय कुमार सिंह उपस्थित रहे। इनके अतिरिक्त, बड़ी संख्या में खेल प्रेमियों, कर्मचारियों और अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। खेल भावना और प्रतिस्पर्धा से भरपूर यह टूर्नामेंट खिलाड़ियों के लिए न केवल अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर है, बल्कि बरेका में टीम भावना और आपसी सहयोग को भी मजबूत कर रहा है।

गुरु रविदास जी का व्यक्तित्व अनंन्त महान था-शशिप्रताप सिंह

शकुन टाइम्स संवाददाता

वाराणसी। आज दिनाँक 12 फरवरी को नेशनल इक्वल पार्टी कैम्प कार्यालय मेहता नगर शिवपुर में रैदास शिरोमणि गुरु रविदास जी की 648वी जयंती मनाई गई ।नेप संयोजक शाशिप्रताप सिंह ने नमन करते हुए कहा कि गुरु रविदास जी ने जाति-पाति के भेदभाव को खत्म करने के लिए काफी काम किया। इसलिए उनके सम्मान में हर साल उनके जन्मदिन को नेशनल इक्वल पार्टी गुरु रविदास जयंती जी की जयंती मानाती है गुरु रविदास जी के नाम से कुछ राजनैतिक दल तुच्छ राजनीति करते है जिन्होंने कभी रविदास जी के बताए गए बात को स्वीकार ही किया लेकिन जयंती पर घड़ियाली आँसू बहाने का काम करते है। गुरु रविदास जी का व्यक्तित्व अनंन्त महान था ।मुख्यरूप से उपस्थित शशिप्रताप सिंह सोनू लाल सतीश पटेल, संतोष आदि लोग मौजूद रहे।

बॉलीबॉल में मेंढान को हराकर रामदरबार ने ट्रॉफी पर जमाया कब्जा

तीन दर्जन क्षेत्रीय व जनपदीय टीम प्रतियोगिता में शामिल होकर मचाया धमाल

शकुन टाइम्स संवाददाता

कमालपुर/चन्दौली। ब्रह्म बाबा मंदिर जनौली के समीप दो दिवसीय स्वर्गीय जीतबहादुर सिंह बॉलीबॉल प्रतियोगिता सोमवार को देर शाम समाप्त हुआ ।फाइनल मैच में रामदरबार की टीम ने मेंढान को हराकर ट्रॉफी पर कब्जा जमाया ।मुख्य अतिथि पूर्व जिपंस सुशील सिंह जनौली ने विजेता व उपविजेता टीम को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया।

बॉलीबॉल प्रतियोगिता में कुल तीन दर्जन क्षेत्रीय व जनपदीय टीमों ने प्रतिभाग किया। इसमें एवती, जनौली, रामरूपदासपुर, कपसीया, कुचौरा, सकलडीहा, रानेपुर, गाजीपुर, वाराणसी, फैजाबाद, चहनिया, चन्दौली, कमहरिया, जमानिया, डीएलडब्ल्यू, असना, मिर्जापुर, दिघवट, भरछा, बसगांवा, युवराजपुर, कासिमाबाद, रामदरबार, सौरी, मेंढान आदि टीम शामिल रहे। सेमी फाइनल मेंढान की टीम ने 21-16,2118 अंक बनाकर मिर्जापुर को, रामदरबार की टीम ने 21-18,21-17 अंक बनाकर कासिमाबाद को हराकर फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल मैच मेंढान की टीम व रामदरबार की टीम के साथ हुआ। इसमें मेंढान की टीम ने 25-19,25-13 अंक बनाकर राम दरबार की टीम को हराकर ट्रॉफी पर जीत हासिल किया ।खेल प्रेमी खिलाड़ियों का ताली बजाकर उनका उत्साह वर्धन किया ।पूर्व जिपंस सुशील सिंह जनौली ने कहा कि प्रतियोगिता में

- विजेता व उपविजेता टीम को ट्रॉफी व नगदी देकर किया गया सम्मानित

शामिल होने से खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का मौका मिलता है ।टीम भावना से खेला गया खेल हमेशा जीत सुनिश्चित कराती है। वही उन्होंने अतिथियों, समिति सदस्यों व खिलाड़ियों को अंगवस्त्रम देकर सम्मानित किया।

इस मौके पर मंडल अध्यक्ष चंद्रभान मौर्य, नंदकुमार पांडेय, संदीप सिंह फौजी,अजीत पांडेय, अक्षय सिंह मिंटू, बांके सिंह, टप्पू सिंह, रामजी तिवारी ,श्रीराम चौबे, सिंटू सिंह, गोलू सिंह, रोशन सिंह, मुलायम सिंह, रिंटू सिंह, सोनू सिंह, बाचा पाल, ब्रह्मदेव सिंह, सुनील विश्वकर्मा, रामप्रकाश खरवार, मंजीत सिंह, आदि रहे।

प्राचीन शिवलिंग पुनर्स्थापना व प्राण प्रतिष्ठा एवं विशाल भंडारे का हुआ आयोजन

श्रृंगार उत्सव एवं भंडारे में देवी भक्ति गीत सुन भाव विभोर हुए श्रोतागण

शकुन टाइम्स संवाददाता

केराकत/जौनपुर। स्थानीय क्षेत्र के अंतर्गत अकबरपुर गांव में स्थापित प्राचीन शिवलिंग पुनर्स्थापना व प्राण प्रतिष्ठा एवं विशाल भंडारे का आयोजन मंगलवार की देर शाम को धूमधाम से सम्पन्न हो गया। प्राण प्रतिष्ठा के दिन मंदिर परीसर में मूर्ति शिवशंकर जी, नंदी, राधा-कृष्ण, दुर्गा जी की नई प्रतिमा लगाई गई।

इस दौरान मंदिर परिसर की आकर्षक सजावट के साथ कार्यक्रम में आये गायकों (कलाकार) मनीष दुबे मंजुल, चंद्रकांत त्रिपाठी तरंग, गोविंदा मिश्रा के साथ अन्य कलाकारों द्वारा देवी भक्ति गीत व भजन प्रस्तुत किया गया। वही गायकों (कलाकारों) द्वारा मंच पर प्रस्तुत की किए गए देवी गीत व

भक्ति भजन को सुन सभी श्रद्धालु मस्ती के साथ झूमते हुए भाव विभोर गए। मौजूद लोगों ने बताया कि प्राचीन शिवलिंग पुनर्स्थापना, प्राण प्रतिष्ठा एवं श्रृंगार उत्सव विशाल भंडारा बहुत ही अच्छा कार्यक्रम रहा। जो हमारे सभी ग्राम वासियों के सहयोग हो रहा है, जो एक बहुत ही अच्छा है हम सभी लोग अपना-अपना योगदान किये हैं। यह आयोजन छह दिवसीय के रूप में रामायण पाठ प्रारंभ किया गया। और अंतिम दिन विशाल काय भव्य भंडारे के रूप में आयोजन किया गया। श्रृंगार व भंडारे मे हजारों लोगों से अधिक श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। महोत्सव को सफल बनाने में समस्त क्षेत्रवासियों का सहयोग रहता है।

सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर प्रभारी निरीक्षक अपने मातहतों के साथ मौजूद रहे। वही समूचे मंदिर परिसर से लेकर बाहर तक की देखरेख क्षेत्र समेत तमाम ग्रामवासियों के द्वारा की जा रही थी। कार्यक्रम में सक्रिय कार्यकर्ता रामजतन सिंह, ग्राम प्रधान प्रतिनिधि जयप्रकाश मिश्रा, समाजसेवी संजय सिंह (पप्पू), समाजसेवी संतोष सिंह, राजेंद्र बहादुर सिंह, डब्बू सिंह, शांतनु सिंह, पीयूष सिंह, विक्रम सिंह, जैकी सिंह, पब्बर विश्वकर्मा, सुधीर विश्वकर्मा, उत्कर्ष सिंह, राहुल सरोज के साथ तमाम लोग मौजूद रहे।

माघी पूर्णिमा पर रेल यात्रियों और कुम्भ श्रद्धालुओं की सेवा में वाराणसी मंडल के व्यापक प्रबंध

वाराणसी। महाकुम्भ -2025 के दौरान आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर यात्री सुविधा प्रदान करने को ध्यान में रखते हुए प्रयागराज रामबाग एवं झूंसी स्टेशनों पर मुख्य स्नान पर्व- माघी पूर्णिमा (12.02.2025) पर विशेष व्यवस्था की गई है । आज 12 फरवरी,2025 को 17:00 बजे तक पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा 56 (मेला स्पेशल+रेगुलर) गाड़ियाँ चलाकर 1,67,776 यात्रियों को मेला क्षेत्र में पहुँचाया और उनके गंतव्य को रवाना किया गया । इसी क्रम में महाकुम्भ-2025 के दौरान पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल के स्टेशनों पर 12 जनवरी,2025 से आज 12 फरवरी,2025 तक कुल 48,22,100 यात्रियों का आवागमन हुआ है । कल 13 फरवरी,2025 को पूर्वोत्तर रेलवे पर 16 मेला स्पेशल गाड़ियां चलाई जाएंगी।

माघ पूर्णिमा पर हजारों श्रद्धालुओं ने लगाई आस्था की डुबकी

शकुन टाइम्स संवाददाता

चहनियाँ। माघ पूर्णिमा के अवसर पर बलुआ स्थित पश्चिम वाहिनीं मां भागीरथी गंगा तट पर हजारो श्रृद्धालुओं ने मा के आंचल में आस्था की डुबकी लगाई। भोर से ही स्नान दान का सिलसिला शुरू रहा। पुलिस प्रशासन की व्यवस्था चुस्त दुरुस्त रही। पंचांग के अनुसार माघ माह, महाकुंभ के दौरान इसका धार्मिक महत्व और स्नान दान का भी महत्व है गंगा स्नान करने से सुख समृद्धि प्राप्त होती है।

अन्न, वस्त्र, तिल, गुड़, घी, कम्बल और अन्य वस्तुएं दान करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। ऐसा कहा जाता है कि इस दिन देवता भी धरती पर गंगा स्नान करने आते है। इस दिन स्नान दान करने से व्यक्ति के जीवन से सभी पापों से मुक्ति मुक्ति मिलती है। इस दिन

भगवान विष्णु,माता लक्ष्मी और चंद्रदेव की पूजा की जाती है। माघ पूर्णिमा के दिन हनुमान जी की पूजा करने से सभी संकट टलता है। आज के दिन घरों में सत्यनारायण भगवान की कथा होती है। माघी पूर्णिमा पर इन्ही परम्पराओ का निर्वहन करते हुए बलुआ स्थित पश्चिम वाहिनीं गंगा तट पर भोर से ही स्नान दान का सिलसिला शुरू हो गया। भीड़ को देखते हुए बलुआ बलुआ पुलिस सुरक्षा व्यवस्था में लगे रहे। इसके अलावा गंगा स्नान करने वाले श्रद्धालुओं कि सुरक्षा को लेकर गंगा सेवा समिति के अध्यक्ष दीपक जायसवाल के नेतृत्व में वालेंटियर प्राइवेट गोताखोर,स्वास्थ्य विभाग कि टीम घाट पर मौजूद रहे।

बंशीपुर की बदहाल सड़क बनी मुसीबत, नाले के गंदे पानी से होकर गुजरने को मजबूर लोग

शकुन टाइम्स संवाददाता

चंदौली/बबुरी। कस्बे से सटे बंशीपुर मुहल्ले को जाने वाला मुख्य मार्ग बदहाली का शिकार है। सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे और जलभराव ने लोगों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। खासकर नाली निर्माण न होने के कारण घरों का गंदा पानी सीधे सड़क पर बह रहा है, जिससे राहगीरों, स्कूली बच्चों और दोपहिया वाहन चालकों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। हालत यह हो गई है कि लोग नाबदान के गंदे पानी से होकर गुजरने को मजबूर हैं।

इस जर्जर सड़क पर आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। स्कूली बच्चे और बुजुर्ग विशेष रूप से प्रभावित हैं। बंशीपुर निवासी सावंत मौर्य, अर्जुन, महताब आलम, निसार सहित अन्य लोगों ने प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि इस समस्या को लेकर कई बार अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों से गुहार लगाई गई, लेकिन आज तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई।

लोगो ने बताया कि बरसात के मौसम में यह समस्या और भी विकराल रूप ले लेती है। सड़क पर जलभराव और कीचड़ के कारण वाहन फिसलकर गिर जाते हैं, जिससे लोग घायल हो रहे हैं। कई बार ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन भी किया, लेकिन नतीजा शून्य ही रहा ।मोहल्ले के लोगों ने आरोप लगाते हुए बताया कि क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों से बार-बार शिकायत की गई, लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। लोगों का गुस्सा इस बात को लेकर बढ़ता जा रहा है कि आखिर उनकी परेशानियों को कब तक अनदेखा किया जाएगा। लोगो ने प्रशासन से मांग की है कि जल्द से जल्द इस सड़क की मरम्मत कराई जाए और नाली निर्माण किया जाए, ताकि गंदे पानी की निकासी हो सके।

बरेका में अंतरविभागीय बास्केटबॉल प्रतियोगिता का रोमांचक मुकाबला

बनारस/वाराणसी। बनारस रेल इंजन कारखाना में खेल संस्कृति एवं स्वस्थ मनोरंजन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अंतरविभागीय बास्केटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 6 टीमें हिस्सा ले रही हैं। यह प्रतियोगिता 11 फरवरी से 14 फरवरी 2025 तक लीग-कम-नॉकआउट फॉर्मेट में खेली जा रही है। फाइनल मुकाबला 14 फरवरी को दूधिया रोशनी में बरेका के बास्केटबॉल मैदान में होगा, जो रोमांच से भरपूर होने की उम्मीद है।

दिनांक 12 फरवरी को मुख्य अतिथि एवं जन संपर्क अधिकारी श्री राजेश कुमार ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताएं कर्मचारियों में टीम भावना, अनुशासन और फिटनेस को बढ़ावा देने में सहायक होती हैं। आज का पहला मुकाबला सिविल एवं भंडार डिपो बनाम प्लांट डिवीजन के बीच हुआ, जिसमें प्लांट डिवीजन की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए सिविल एवं भंडार डिपो को 15-11 के अंतर से हराकर जीत दर्ज की।

परिवर्तन सेवा समिति के तत्वाधान में बिन मां की बच्ची का हाथ पीला करने में सहयोग किया गया

शकुन टाइम्स संवाददाता

चन्दौली/डीडीय। नगर ।नियामताबाद ब्लाक के अंतर्गत निवासी एक बिटिया के पिताजी मजदूरी कर अपना व अपने परिवार का पेट किसी तरह पलते हैं बिटिया का विवाह तय करने के बाद उनकी माताजी गंभीर बीमारी से पीड़ित होने के वजह से इलाज में काफी पैसा खर्च हो गया और वह इस दुनिया में नहीं रही जिससे घर में पैसे की काफी तंगी होने लगी जब इसकी सूचना परिवर्तन सेवा समिति के अध्यक्ष चंदेश्वर जायसवाल तक पहुंची तब समिति के सदस्यगण उस बिटियां के घर जाकर स्थिति की जानकारी प्राप्त किये इसके उपरांत बिटिया के शादी में भरपूर सहयोग किये जिसमें भोजन की पूरी सामग्री सृंगार का सामग्री वस्त्र एवं नगद का सहयोग दिया गया। इस मौके पर चंदेश्वर जायसवाल ने कहा कि परिवर्तन सेवा समिति का लक्ष्य गरीबों एवं असहयों की सेवा करना है इसी क्रम में हम सभी लोग आपस में मिलकर हर वर्ष 11 बच्चियों की शादी करते हैं साथ ही आर्थिक रूप से कमजोर लोगो का इलाज भी करवाते हैं ।ठंड के मौसम में गर्म कपड़े व कम्बल वितरण का कार्य भी समिति के द्वारा किया जाता हैं। इसके अलावा सभी धर्मों के प्रमुख त्योहार को सेवा बस्ती में जाकर मनाया जाता हैं। इस मौके पर गुरदीप सिंह, एस फ़ाज़िल, ज्ञानचंद्र जायसवाल, निखिल गुप्ता, संदीप सिंह , विवेक विश्वकर्मा मौजूद रहे।

बहुत ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाई गई संत रविदास की जयंती

चंदौली/सकलडीहा। बुधवार को एक गजब का ही संयोग मिला, जहां एक ही दिन माघ पूर्णिमा, संत रविदास जयंती, ललिता जयंती और कुंभ संक्रांति का मेल रहा। जहां गंगा घाट पर लाखों की संख्या में लोगों द्वारा स्नान करने के साथ पूजन अर्चन का कार्य किया गया। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं द्वारा संत रविदास की जयंती बहुत ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसकी तैयारी में युवा और आयोजक पिछले कई दिनों से व्यस्त थे। वही प्रशासन द्वारा भी त्योहार को कुशल संपन्न कराने को लेकर पीस कमेटी की बैठक के साथ लोगों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया गए थे। इसी क्रम में सकलडीहा कस्बे में रैदासी परिवार द्वारा संत रविदास जयंती के अवसर पर विभिन्न प्रकार की झांकी निकल गई। वही बैंड बाजा तथा ढोल नगाड़ों के साथ ग्राम सभा में संत रविदास की प्रतिमा के साथ विभिन्न स्वरूपों द्वारा लाग निकाल कर कस्बे का भ्रमण किया गया। इस लगा की व्यवस्था को सुनिश्चित बनाए रखने के क्रम में स्थानीय प्रशासन द्वारा पुलिस कर्मियों को भी नियुक्त किया गया था। जहां यह पुलिसकर्मी यातायात व्यवस्था को सुगम बनाने में लग रहे । वही सकलडीहा तहसील के विभिन्न ग्राम सभा में पंडाल में संत रविदास की प्रतिमा स्थापित की गई थी, जहां सामाजी लोगों द्वारा भजन पूजन के साथ विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का समापन, छात्राओं के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर किया मंत्र मुग्ध

शकुन टाइम्स संवाददाता

रामपुर /जौनपुर। मां सरस्वती पी0 जी0 कालेज दमोदरा जौनपुर कराष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वाधान में चल रहे सात दिवसीय विशेष राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का समापन प्राथमिक विद्यालय दमोदरा के प्रांगण मे मंगलवार को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। छात्राओं ने अपनी प्रस्तुतियों से सबको बहुत आनंदित किया। इस दौरान वक्ताओं ने स्वयंसेवकों से शिविर में सीखी गई बातों को जीवन में उतारने की बात कही।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि प्रबन्धक डा0 चन्द्रेश सिंह ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित करके किया। इसके बाद छात्राओं ने सरस्वती वंदना गाई। छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा सबका मन मोह लिया। एनएसएस गीत पर प्रस्तुति के बाद छात्राओं ने एक लघु नाटक के माध्यम से पढे बचाओ, बेटी पढोओ के प्रति जागरुक किया। जिसकी सभी ने सराहना की। डा0 आलोक सिंह वरिष्ठ भाजपा नेता ने कहा कि इस प्रकार के शिविरों का आयोजन समय-समय पर होता रहना चाहिए, जिससे छात्र-छात्राओं को अच्छा करने व सीखने की प्रेरणा मिलती है। छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर अच्छी प्रस्तुति दी। जिसके लिए वे बधाई के पात्र है। शिविर में जो कुछ भी सिखाया गया छात्र-छात्राएं उसे अपने जीवन में उतारे, और अनुशासन में रहकर आगे बढ़े। राष्ट्रीय सेवा योजना का उद्देश्य तभी सफल होगा। इसका और अधिक प्रचार-प्रसार होना चाहिए। प्रधानाध्यापक डा0 किरनलता सिह ने कहा कि छात्र-छात्राओं ने शिविर में जो सिखा है, वह उस पर पुरी तरह से अमल करे। तभी उसका फायदा होगा। राष्ट्रीय सेवा योजना का उद्देश्य समाज सेवा के प्रति जागरुक करना है। इसलिए हमारे अंदर सेवा की भावना होनी चाहिए, सहयोग करना की भावना होनी चाहिए। अच्छे गुणों का होना आवश्यक है। तभी एनएसएस, एनसीसी व स्काउट गाइड आदि के शिविरों का लाभ मिलता है। शिविर में सात दिनों तक अच्छा कार्य करने के लिए बच्चे बधाई के पात्र है। कार्यक्रम का संचालन डा0 संगम लाल मिश्रा इस अवसर पर डा0 दिनेश तिवारी डा0 भरतचन्द्र शुक्ल, मोनू सिह सहित आदि मौजूद रहे।

लगाई लाखों श्रद्धालुओं ने माघ मास की पूर्णिमा को मां गंगा में श्रद्धा की डुबकी

खाकी भी रही जबरदस्त मुस्तादी से मौजूद

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। बुधवार को माघ मास की पूर्णिमा तो तीर्थ नगरी बृजघाट पहुंचे लाखों श्रद्धालु आस्था की डुबकी लगाने, जहां पर बीती रात्रि से ही श्रद्धालुओं का आमंगमन शुरू हो गया था तीर्थ नगरी में, जहां पर गंगा घाट किनारे श्रद्धालुओं ने की पूजा पाठ तो मंदिरों में कीर्तन, जहां पर भारी जनपदों से आए भारी श्रद्धालु बृजघाट आस्था की डुबकी लगाने, बताया जाता है कि सनातन धर्म में माघ पूर्णिमा की तिथि को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है इस दिन जगत के पालनहार भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी की पूजा कर जीवन को सफल बनाया जाता है, बताया जाता है की मां पूर्णिमा के दिन जप तप करने से भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त होती है, तो वही बढ़ाते श्रद्धालुओं को लेकर तीर्थ नगरी बृजघाट में हापुड़ की डीएम श्रीमती प्रेरणा शर्मा व एसपी कुंवर ज्ञानंजय सिंह,गढ़मुक्तेश्वर एसडीएम श्रीमती साक्षी शर्मा, गढ़ कोतवाली इंस्पेक्टर नीरज कुमार, बृजघाट चौकी इंचार्ज भारी पुलिस बल के साथ मौजूद रहे।

संक्षिप्त समाचार

ट्रेन से कटकर छात्रा की हुई मौत

मिर्जापुर। थाना अदलहाट अंतर्गत ग्राम सभा प्रतापपुर में साधना प्रजापति पुत्री सूरत प्रजापति निवासी ग्राम बेगपुर थाना अदलहाट की ट्रेन से कटने के कारण मृत्यु हो गई। मृतक तीन बहनों में सबसे छोटी थी, मृतिका के दो भाई भी हैं। मृतक राम सुरेश महाविद्यालय की छात्रा थी, वह किसी कार्य से जा रही थी रेलवे लाइन पार करते समय अचानक ट्रेन आ गई जिसकी चपेट में वह बुरी तरह आ गई जिसमें मृतक की दोनों टांगे कट चुकी है। जब परिजनों को सूचना लगी तो कोहराम मच गया रोते बिलखते परिजन घटनास्थल पर पहुंचे तत्काल आनन फानन में बीएचयू ट्रामा सेंटर ले गए जहां उसकी मौत हो गई।

देवर ने भाभी पर किया कुल्हाड़ी से हमला, जांच में जुटी पुलिस

सोनभद्र। रावर्ट्सगंज कोतवाली के पुलिस चौकी सुकृत अंतर्गत ग्राम सभा मधुपुर के झपरी में एक देवर ने अपनी भाभी को कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। मिली जानकारी के अनुसार सुकृत चौकी क्षेत्र के झपरी बस्ती में मंगलवार की देर शाम देवर ने भाभी के ऊपर कुल्हाड़ी से हमला कर बुरी तरह घायल कर दिया तथा कपड़े से ढंक कर पत्नी के साथ जंगल में फरार हो गया। सूत्रों के मुताबिक विवाद एक कढाई को लेकर हुआ। एक कढ़ाही और दो परिवार में कढ़ाही में सब्जी बनाने को लेकर देवरानी व जेठानी की कहासुनी में देवरानी सोनी का पति शिवा आक्रोशित होकर अपनी भाभी निशा (23) के ऊपर जानलेवा हमला बोल दिया। हालांकि हमारा चैनल इस बात की पुष्टि नहीं करता। लेकिन फिलहाल यह जांच का विषय बना हुआ है। उधर मिली जानकारी के अनुसार जवाहीर गोड़ के चार पुत्र हैं जिनमें दो पुत्र शादीसुदा हैं। सूत्रों के मुताबिक गंगा की यह तीसरी पत्नी है जिससे की विगत लगभग एक महीने पहले ही शादी किया था। मिली जानकारी के अनुसार गंगा मधुपुर में स्थित अपनी दुकान पर वेल्डिंग का काम करने गया था उसी बीच यह दुखदाई घटना घटित हो गया। जानकारी होने पर परिजन घायल महिला को अस्पताल ले जाने के साथ ही पुलिस को सूचना दिए। सूचना मिलते ही मौके पर पहुँची पुलिस खून से सने कपड़े और कुछ साक्ष्य कब्जे में लेते हुये आरोपी की धर पकड़ हेतु सक्रिय हो गयी। उधर घायल महिला निशा की स्थिति गम्भीर देख जिला अस्पताल से बीएचयू ट्रामा सेंटर के लिये रेफर कर दिया गया, जहां वह जीवन और मृत्यु से जूझ रही है। जवाहिर गोड़ के बड़े पुत्र गंगा (26)की चार साल में यह तीसरी शादी कुछ दिन पूर्व ही निशा से हुई है, पहली दो पत्नियां कुछ समय बाद ही सम्बन्ध विच्छेद कर साथ छोड़ गयी। खबर लगने तक घायल निशा की स्थिति में कोई सुधार नहीं था , बल्कि उसकी स्थिति नाजुक बनी हुई थी।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के तौर पर राष्ट्रीय हिन्दू सेवा संघ ने बढ़ाया मदद का हाथ

पालघर। जिले के बोईसर में सुप्रसिद्ध समाजसेवी और हिन्दुत्वादी संगठन व राष्ट्रीय हिन्दू सेवा संघ ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के तौर पर आर्थिक तंगी से जूझ रही बोईसर क्षेत्र के तारापुर विघामन्दिर स्कूल व जुनियर कालेज में पढ़ने वाली छात्रा को राष्ट्रीय हिन्दू सेवा संघ ने आर्थिक सहायता देकर समाज में एक मिशाल कायम की है।,आपको बताते कि राष्ट्रीय हिन्दू सेवा संघ ने सात वर्षों से लगातार समाजिक कार्यों में हर धार्मिक कार्य, वृक्षारोपण कार्य, स्कूल में बच्चों पढ़ने वाले समाग्री,बिमार लोगों के लिए रक्तदान शिविर का आयोजन व हर चौराहे पर शीतल जल का व्यवस्था करना व गौ रक्षा व सेवा करने जैसे हर समाजिक कार्य करते आ रहे हैं संगठन से जुड़े सम्राट होटल के मालिक प्रसिद्ध समाजिक कार्यकर्ता व राष्ट्रीय हिन्दू सेवा संघ प्रदेश अध्यक्ष ललित माली जी शकुन टाईम्स हमारे पालघर संवादाता मृत्युंजय पान्डेय से दुरभाषा से जानकारी देते हुए बताया कि बोईसर में एक आर्थिक तंगी से जूझ रही बिटिया का फिस जामा करने हेतु 12670 रूपये नगद और शेष राषि 12030 रूपये धनादेश (चेक) बिटिया के मां को गंगोत्री होटल अन्तर्गत शिवमन्दिर में दिया गया ।

माघ मास की पूर्णिमा को लेकर डीएम व एसपी रहे सतर्क

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। बुधवार को माघ मास की पूर्णिमा तिथि के चलते तीर्थ नगरी ब्रजघाट में उमड़ा श्रद्धालुओं का जन्म सैलाब, तो प्रशासन भी रहा हाई अलर्ट, हापुड़ डीएम श्रीमती प्रेरणा शर्मा व एसपी कुंवर ज्ञानंजय सिंह पहुंचे बाहरी पुलिस बल के साथ जहां पर गंगा घाटों एवं बंजारों का किया भ्रमण परखी व्यवस्था, बता दें कि हापुड़ अफसरशाही माघ मास की पूर्णिमा को लेकर पहले ही अलर्ट नजर आ रही थी, व्यवस्थाओं के चलते लगातार तीर्थ नगरी बृजघाट में अधिकारियों की नजर बनी हुई थी, सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर लिया गया जायजा तो वही संबंधित को दिए आवश्यक दिशा निर्देश।

राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय शिविर का हुआ समापन

शकुन टाइम्स संवाददाता

❒ देश का सबसे बड़ा छात्र संगठन है भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन एनएसयूआई: अतुल सिंह

❒ छात्र संघ चुनाव बंद करवा कर नई पीढ़ी को राजनीति में आने से रोकना चाहती है बीजेपी: सत्यवीर सिंह

जौनपुर। भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन एनएसयूआई का सदस्यता अभियान की शुरुआत तिलकधारी महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर ज़िला अध्यक्ष यशस्वी सिंह के नेतृत्व में कैंप लगा कर हुआ , कैंप का उद्घाटन उत्तर प्रदेश कांग्रेस के सदस्य अतुल सिंह और प्रदेश सचिव सत्यवीर सिंह ने किया।

अतुल सिंह ने कहा कि भारतीय रास्ट्रिय छात्र संगठन दुनिया का सबसे बड़ा छात्र संगठन है ,इसी संगठन से निकलकर आज लाखों लोग देश के उच्चतम पदो पर विराजमान है । प्रदेश सचिव सत्यवीर सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी नहीं चाहती कि नौजवान नेतृत्व आगे आए , यह सरकार शुरू से ही छात्र और नौजवान विरोधी रही है , बाहुबलियों और पूँजीपतियों के इशारों पर पेपर लीक से लेकर नौकरियों में धांधली इस सरकार का पेशा बन चुका है । ज़िला अध्यक्ष यशस्वी सिंह ने कहा कि जल्द ही छात्रों का एक बड़ा सम्मेलन जौनपुर में होगा जिसने देश के अलग अलग विश्वविद्यालयों में छात्रों का नेतृत्व कर रहे नेताओं को जौनपुर में आमंत्रित किया जाएगा । उन्होंने कहा तक़रीबन ढाई सौ छात्रों ने आज सदस्यता ली है और ज़िले के हर कॉलेज और विश्वविद्यालय में भी कैंप का आयोजन किया जायेगा । उक्त अवसर पर मनीष सिंह,शुभम यादव, अनुराग सिंह , रोशन सिंह, सूरज उपाध्याय, सूरज सिंह ,सत्यम श्रीवास्तव ,दिब्यांश सिंह ,कार्तिकेय सिंह ,ओम सिंह ,रितेश गौड़ ,अंकित सिंह ,प्रभात सिंह, राज शर्मा ,अतुल मिश्रा ,शशि सिंह ,हर्षित सिंह सहित दर्जनों एन एस यू आई के कार्यकर्त्ता मौजूद रहे।

शिविर में छात्र-छात्राओं द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का किया गया आयोजन

शकुन टाइम्स संवाददाता

सुजानगंज /जौनपुर। क्षेत्र के राष्ट्रीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्र/छात्राओं द्वारा विभिन्न कार्यक्रम का हुआ आयोजन ।जिसमें सभी स्वयंसेवकों ने अम्बा धाम बसरही तक ज़न जागरूकता रैली निकाली जहां पर बेटी मारते जाओगे तो बहू कहां से लाओगे, पढ़ लो बहना पढ़ लो भाई पढ़ना लिखना है सुखदाई, के नारे लगाए गए। स्वयंसेवियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जिसमें नाटक नुक्कड़ का आयोजन किया गया ।कार्यक्रम शुभारंभ मां सरस्वती जी के प्रतिमा पर दीप प्रज्वलित किया गया जिसमें स्वयं सेविका रिशा गिरी ने सरस्वती वंदना तथा स्वागत गीत काजल ने प्रस्तुत किया. मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित राकेश कुमार सिंह ने स्वयंसेवियों के कार्यों की सराहना की। प्रबन्धक वेद प्रकाश त्रिपाठी ने स्वयंसेवियों को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है. प्राचार्य डॉ0 राकेश कुमार पांडे ने कहा राष्ट्रीय सेवा योजना से मैं नहीं आप की भावना का प्रसार होता है. वहीं पर कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री लालता प्रसाद तिवारी ने किया. सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रतिभाग करने वाले छात्र/छात्राओं में राधिका मिश्रा, हर्षिता उपाध्याय, अंतिमा ,अनुज पटेल,आदि ने अपने-अपने कार्यक्रम को प्रस्तुत किया । इस अवसर पर मुख्य कार्यक्रम अधिकारी डॉ0जितेंद्र कुमार चौबे, डॉ0 लाल बहादुर यादव, डॉ0एस0पी0 मिश्र, डॉ0जे0 एन0 यादव, सुधीर तिवारी आदि उपस्थित रहे ।कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम अधिकारी डॉ0कृष्ण कुमार उपाध्याय ने किया।

अयोध्या जाने वाले श्रद्धालुओं को रोकने पर बवाल, यात्रियों ने किया हंगामा

अमेठी। प्रयागराज में संगम स्नान के बाद अयोध्या दर्शन के लिए जा रहे श्रद्धालुओं को जगदीशपुर सीमा पर रोके जाने से तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। कर्नाटक और जालौन से आए बड़ी संख्या में श्रद्धालु हलियापुर मार्ग से अयोध्या जाना चाहते थे, लेकिन पुलिस ने भारी भीड़ के कारण उन्हें रोक दिया। नाराज श्रद्धालुओं ने जगदीशपुर कोतवाली के बाहर जमकर हंगामा किया। उनका आरोप था कि उन्हें लंबे समय से रोका गया है और अयोध्या जाने से मना किया जा रहा है। हालांकि, पुलिस का कहना था कि यह कार्रवाई यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए की जा रही है। थाना प्रभारी धीरेंद्र यादव ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को संभाला। उन्होंने बताया कि हलियापुर मार्ग पर अत्यधिक भीड़ को देखते हुए यात्रियों को हैदरगढ़ होकर अयोध्या जाने का वैकल्पिक मार्ग सुझाया गया है।

टूरिस्ट बस पर हुआ पथराव, माँ बेटे हुए घायल

शकुन टाइम्स संवाददाता

जफराबाद /जौनपुर। जलालपुर क्षेत्र के बाकराबाद बीआरसी के पास बुधवार की दोपहर को कुछ बदमाश बच्चों ने टूरिस्ट बस पर पथराव कर दिया। बस में सवार एक 38 वर्षीय महिला तथा उसका सात वर्ष का पुत्र घायल हो गया।घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंच गई। अमरोहा जनपद के 23 तीर्थ यात्रियों की बस कुम्भ स्नान करने के बाद काशीविश्वनाथ दर्शन करके अयोध्या धाम श्री रामलला के दर्शन पूजन के लिए जा रही थी। बस जब ऊक्त स्कूल के सामने पहुंची तभी वहां मौजूद चार पांच की संख्या मे बच्चों ने बस पर पथराव कर दिया।सभी बच्चों की उम्र 10 वर्ष के आसपास बतायी जा रही है।पत्थर लगने से बस के खिड़की का शीशा टूट गया। खिड़की के पास बैठी कुसुम देवी पत्नी राजू के कान पर पत्थर लगा गया। उनके कान से खून निकलने लगा। तथा उनका पुत्र कृष्णा के कंधे में पत्थर लग गया।वह भी घायल होकर चीखने लगा।पथराव के बाद चालक ने बस को रोक दिया। घटना सूचना पर 112 पुलिस तत्काल मौके पर पहुंच कर ऊक्त बच्चों को खोजने में लग गयी।

रुदौली में संत रविदास जी की जयंती मनाई गई

संत रविदास जी ने समाज में एकता और समरसता का दिया संदेश: विधायक रुदौली

शकुन टाइम्स संवाददाता

रुदौली। आदर्श नगर पालिका परिषद रुदौली में संत शिरोमणि रविदास जी की जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर माननीय विधायक रामचंद्र यादव जी ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने कहा, संत रविदास जी ने समाज में एकता और समरसता का संदेश दिया था, और उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। हमें उनके संदेशों को अपने जीवन में उतारना चाहिए और समाज में एकता और समरसता को बढ़ावा देना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही सभासद सुनीता लोधी ने संत रविदास जी के जीवन और उनके संदेशों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संत रविदास जी ने समाज में एकता और समरसता का संदेश दिया था और उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। इस अवसर पर एक दर्जन स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें संत रविदास वार्ड मोहल्ला सुलेमपुर व बाबू कल्याण सिंह वार्ड भी शामिल था। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया और संत रविदास जी के जीवन और उनके संदेशों को याद किया। कार्यक्रम का संचालन अनुसूचित जाति मोर्चा के जिला अध्यक्ष किशोरी लाल भारती ने किया। इस दौरान जिला भाजपा महामंत्री राधेश्याम त्यागी जी, बब्बन शुक्ला, महंत सुग्रीव दास आशीष शर्मा, कुलदीप सोनकर, पंकज शर्मा , ज्ञान प्रकाश मिश्रा , फैसल और वार्ड के सम्मानित जनता व साथी गढ़ भी

डायवर्जन से लखनऊ हाईवे पर सन्नाटा, अयोध्या में प्रवेश निषेध

शकुन टाइम्स संवाददाता

अयोध्या। पटरंगा थाना क्षेत्र अंतर्गत अयोध्या जनपद की सीमा एनएच 27 पर सन्नाटा पसरा हुआ है। कुछ लोकल वाहनों को पुलिस द्वारा छोड़ा जा रहा है। जिले की सीमा पर स्थित कल्याणी नदी पुल के समीप रामसनेहीघाट व पटरंगा पुलिस द्वारा बैरियर लगाकर वाहनों को रोका जा रहा है, बाहरी वाहनों को अयोध्या में प्रवेश नहीं दिया जा रहा है। सभी वाहनों की जांच की जा रही है लोकल वाहनों को ही आधार कार्ड लेकर छोड़ा जा रहा है। वहां भिटरिया से दरियाबाद होकर मोबाइल चौराहा बेलसर निकालकर अयोध्या की तरफ जाते कुछ वाहन दिख रहे हैं, तो कुछ वहां देवीगंज होते हाजीपुर मवई के रास्ते अयोध्या की तरफ जा रहे हैं। मवई निवासी भूटानी यादव ने बताया कि दवा लेने लखनऊ गया था वापसी आते समय 5 से 6 घंटे जाम में फंसे रहने के बाद घर पहुंचा, काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। पुलिस वालों से इलाज का पर्चा दिखाकर काफी मन्नते करने के बाद किसी तरह घर पहुंचा हूं। हाईवे के किनारे स्थित एक होटल के मालिक सुनील कश्यप ने बताया कि जब से हाईवे पर बाहरी वाहनों पर रोक लगी है तब से दुकानदारी पर काफी असर पड़ गया है घर का खर्च चलाना मुश्किल हो रहा है।

तीसरी मंजिल से गिरकर युवक की मौत

आगरा। आगरा के सिकंदरा में एक युवक की संदिग्ध परिस्थिति में मौत हो गई। युवक के परिजनों ने तीसरी मंजिल से धक्का देकर हत्या का आरोप लगाया है। परिजनों का कहना है कि पुलिस उन्हें गुमराह कर रही है। आवास विकास सेक्टर तीन निवासी आशीष चौधरी ने बताया कि उनका छोटा भाई सागर डिलीवरी ब्वाय का काम करता था। मंगलवार रात करीब नौ बजे उसको सचिन नाम के युवक ने फोन कर बुलाया। सागर घर पर कहकर गया था कि वो दोस्त के बर्थडे में जा रहा है। रात को लेट हो जाएगा। इसके बाद वो पूरी रात घर नहीं आया। सुबह करीब 6 बजे सागर के एक दोस्त का फोन आया कि सागर शास्त्रीपुरम स्थित कांशीराम आवास में तीसरी मंजिल से गिर गया है। उसके अस्पताल में भर्ती कराया है। इसके कुछ देर बाद थाने से फोन आया। पुलिस ने कहा कि सीधे थाने आ जाओ। आशीष का आरोप है कि थाने में उन्हें भाई के बारे में जानकारी नहीं दी गई।

दिव्यांग जनों में ट्राई साइकिल एवं अन्य सहायक उपकरण का हुआ वितरण

प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के नेतृत्व में दिव्यांग जनों के हितार्थ अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे: हैं .डॉक्टर आरके पटेल

शकुन टाइम्स संवाददाता

मडियाहूँ /जौनपुर। विधायक विधान सभा मडियाहूँ, आर0के0 पटेल द्वारा विकास खण्ड-रामनगर के परिसर में दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा आयोजित ट्राईसाइकिल एवं अन्य सहायक उपकरण का वितरण, जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी दिव्या शुक्ला एवं खण्ड विकास अधिकारी रेनू चौधरी की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर विधायक द्वारा कुल 68 ट्राईसाइकिल, 07 स्मार्टकेन, 02 हियरिंग एड, 02 व्हीलचेयर, 07 स्मार्टकेन का वितरण किया गया। इस दौरान विधायक ने कहा कि प्रधानमंत्रीजी और मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में दिव्यांग जनों के हितार्थ अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं और उनको लाभान्वित भी किया जा रहा है। उन्होंने विशेष रूप से दिव्यांग जनों के लिए कोकलियर इंप्लांट योजना, आवास योजना व पेंशन की योजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंस के दिव्यांग होते हुए भी सभी बाधाओं को पार करते हुए विज्ञान के क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए कार्यों तथा उपलब्धियों का भी उल्लेख किया। दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी दिव्या शुक्ला द्वारा विभागीय योजनाओं के विषय में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। खंड विकास अधिकारी रेनू चौधरी द्वारा विकासखंड पर चला दिव्यांग जनों के लिए चलाए जा रहे योजनाओं को बताया। इस अवसर पर दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग के कर्मचारियों एवं विकास खण्ड के कर्मचारियों द्वारा पूर्ण सहयोग किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री रत्नेश कुमार सिंह, सहायक विकास अधिकारी सहकारिता द्वारा किया गया।

बल्केश्वर महादेव मंदिर में 15 फरवरी से राम कथा, 12 दिन के होंगे आयोजन

आगरा। आगरा के बल्केश्वर महादेव मंदिर में श्रीबल्केश्वर नाथ महादेव भक्त मंडल की ओर से 15 फरवरी से श्रीराम कथा व महाशिवरात्रि के 12 दिवसीय आयोजन शुरू होंगे। बुधवार को बुधवार को मंदिर परिसर में आयोजित प्रेस वार्ता में बताया गया कि 15 फरवरी को सीता-पार्वती की मेहंदी का आयोजन दोपहर 11 बजे से 3 बजे तक किया जाएगा। 16 फरवरी को कलश सज्जा का कार्यक्रम दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक होगा। महंत कपिल नागर ने बताया कि 17 फरवरी को श्रीराम कथा की कलश यात्रा साईं बाबा मंदिर, कमला नगर से सुबह सात बजे शुरू होगी। विभिन्न मार्गों से होती हुई बल्केश्वर महादेव मंदिर पहुंचेगी। उसके बाद वहां श्रीराम कथा का शुभारंभ होगा। राजन जी महाराज कथा का करेंगे। कथा 25 फरवरी तक होगी। कथा हर रोज दोपहर चार से शाम सात बजे तक होगी। महंत ने बताया कि पहले दिन 17 फरवरी को श्रीराम कथा महिमा, 18 फरवरी को शिव पार्वती विवाह, 19 फरवरी को श्रीराम जन्म, 20 फरवरी को बाल लीलाएं, 21 फरवरी को धनुष भंग व सीताराम विवाह महोत्सव, 22 फरवरी को केवट प्रेम, 23 फरवरी को श्रीराम मंगल यात्रा, 24 फरवरी भरत चरित्र व शबरी प्रेम, 25 को सुंदरकांड व राज्याभिषेक के साथ श्रीराम कथा का समापन होगा। 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव बारात शाम चार बजे श्रीराम चौक, कमला नगर से शुरू होगी।

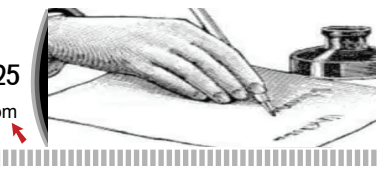

सम्पादकीय

संस्कृत के खिलाफ जहर उगलने वाले दयानिधि मारन को पता होना चाहिए कि द्रविड़ भी संस्कृत शब्द है

तमिलनाडु में सत्तारुढ़ द्रमुक के नेता लगातार सनातन धर्म का अपमान करते रहे हैं। इस पार्टी के नेता सड़क से लेकर संसद तक कभी हिंदुत्व के खिलाफ बोलते हैं तो कभी उत्तर बनाम दक्षिण की राजनीति करने लगते हैं। यही नहीं, इसी पार्टी के एक नेता ने तो मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के सामने ही अलगाववादी बयान देते हुए %अलग तमिलनाडु% की मांग के बारे में विचार करने तक की बात कह डाली थी। द्रमुक की इस नफरत भरी राजनीति को आगे बढ़ाने का काम अब पूर्व केंद्रीय मंत्री दयानिधि मारन ने किया है। उन्होंने संसद के भीतर चिल्ला चिल्ला कर और जिस आवेश में संस्कृत भाषा पर हमला बोला उसे देखकर हर कोई हैरान रह गया क्योंकि दुनिया की सबसे प्राचीन और हर भाषा की जननी माने जाने वाली संस्कृत के खिलाफ ऐसी नफरत पहले किसी नेता ने नहीं उगली थी। हालांकि जैसे ही मारन ने यह हमला किया वैसे ही लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने मारन पर तगड़ा पलटवार कर दिया था। वैसे यह हैरानी भरी बात है कि अपनी द्रविड़ पहचान बताने वाली अधिकांश द्रविड़ पार्टियाँ यह नहीं जानतीं कि द्रविड़ तमिल शब्द नहीं है। यह एक संस्कृत शब्द है जिसकी अंग्रेजों द्वारा गलत व्याख्या बांटो और राज करो की नीति के तहत की गयी थी। द्रमुक नेताओं को यह भी समझना होगा कि तमिल गौरव की बात करने भर से काम नहीं चलेगा। यह देखना होगा कि तमिल गौरव बढ़ाने का काम सबसे ज्यादा किसने किया है। द्रमुक नेताओं को देखना चाहिए कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वास्तविक तमिल गौरव को बरकरार रखा है। उन्होंने नए संसद भवन में तमिल सेनगोल स्थापित किया और भारत मंडपम के सामने नटराज की प्रतिमा (भगवान शंकर की नटराज प्रतिमा, जो महान चोल राजाओं द्वारा निर्मित तंजावुर में मिली) स्थापित की। देखा जाये तो राष्ट्रीय स्तर पर तमिल गौरव को इससे अधिक मान्यता पहले कभी नहीं मिली थी। लेकिन इन पार्टियों को तमिल सांस्कृतिक गौरव में कोई दिलचस्पी नहीं है, वे तो बस राजनीतिक विभाजन में अधिक रुचि रखते हैं।

संस्कृत पर होने वाले खर्च को पैसे की बर्बादी बताने वाले दयानिधि मारन को पता होना चाहिए कि भारत की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत है। यह एक ऐसी भाषा भी है जिससे असंख्य भाषाएँ निकली हैं। यही नहीं आज के आधुनिक दौर में भी लगभग हर क्षेत्र में संस्कृत की प्रासंगिकता पूरी तरह बनी हुई है। संस्कृत को भाषाओं की जननी भी कहा जाता है। इस जननी ने सिर्फ भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी भाषाओं को जन्मा है। देश में तो कुछ राज्यों की यह आधिकारिक भाषा भी है। भारत के प्राचीन ग्रंथ और वेद पुराण आदि सभी संस्कृत में ही लिखे गये हैं। महाभारत काल में भी वैदिक संस्कृत का उपयोग किया जाता था। जहां तक दयानिधि मारन के विवादित बयान की बात है तो आपको बता दें कि उन्होंने मंगलवार को लोकसभा में आरोप लगाया कि आरएसएस की विचारधारा के कारण लोकसभा की कार्यवाही का संस्कृत में अनुवाद करके करदाताओं का पैसा बर्बाद किया जा रहा है, जिस पर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने पलटवार करते हुए कहा कि संस्कृत भारत की मूल भाषा रही है। बिरला ने पूर्व केंद्रीय मंत्री मारन पर निशाना साधते हुए कहा, आप किस देश में रह रहे हैं? यह भारत है। भारत की मूल भाषा संस्कृत रही है। दयानिधि मारन की ओर से संस्कृत पर की गयी अनुचित टिप्पणियों का मुद्दा अब राजनीतिक रूप से तूल ले चुका है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने लोकसभा की कार्यवाही का एक साथ अनुवाद उपलब्ध कराए जाने वाली भाषाओं में संस्कृत को शामिल करने की मारन द्वारा की गई आलोचना को अनुचित करार देते हुए साफ कहा है कि एक भाषा को बढ़ावा देने के लिए दूसरी भाषा को कमतर करने की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रधान ने कहा है कि संस्कृत पर दयानिधि मारन की अनुचित टिप्पणी न केवल आपत्तिजनक है, बल्कि भारत की भाषाई विरासत की बात आने पर द्रमुक के चुनिंदा आक्रोश, पाखंड और दुष्प्रचार को भी उजागर करती है। उनका कहना है कि दरअसल विभाजनकारी राजनीति में लिप्त होना करदाताओं के पैसे की वास्तविक बर्बादी है। यही नहीं, धर्मेंद्र प्रधान ने ओम बिरला की प्रशंसा करते हुए कहा है कि उन्होंने भारतीय भाषाओं के बीच नफरत फैलाने और फर्जी विभाजन पैदा करने के इस प्रयास की उचित रूप से निंदा की है। हम आपको बता दें कि यह सारा विवाद तब खड़ा हुआ था जब मंगलवार को प्रश्नकाल समाप्त होने के तुरंत बाद बिरला ने कहा कि उन्हें यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि छह और भाषाओं- बोडो, डोगरी, मैथिली, मणिपुरी, संस्कृत और उर्दू- को उन भाषाओं की सूची में शामिल कर लिया गया है, जिनमें सदस्यों के लिए एक साथ अनुवाद उपलब्ध होगा। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी और हिंदी के अलावा असमिया, बांग्ला, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, तमिल और तेलुगु में भी अनुवाद उपलब्ध है। ऐसा प्रतीत होता है कि ओम बिरला के वक्तव्य में संस्कृत शब्द को सुनते ही दयानिधि मारन का खून खौल उठा और वह आवेश में आ गये। दयानिधि मारन की यह अवस्था इस बात की जरूरत पर बल देती है कि उन्हें मन को शांति और तन को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करने वाली संस्कृत भाषा का अध्ययन कराया जाये।

रिश्तों में अश्लीलता घोलता सोशल मीडिया

ललित गर्ग

इंटरनेट मीडिया इन्फ्लुएंसर एवं यूट्यूबर रणवीर इलाहाबादिया ने माता-पिता की गरिमा को आहत करने वाली अश्लील, अपमानजनक एवं विवादास्पद टिप्पणी करते हुए भारतीय संस्कारों एवं संस्कृति को धुंधलाने का घिनौना एवं अक्षम्य अपराध किया है। भले ही इस टिप्पणी के लिए माफी मांगी गयी हो, लेकिन रणवीर ने हास्य कलाकार समय रैना के यूट्यूब रियलिटी शो इंडियाज गाट लैटेंट में एक प्रतियोगी से उसके माता-पिता और यौन संबंधों को लेकर सवाल करते हुए यह आपत्तिजनक टिप्पणी की। इसको लेकर विवाद भड़क गया, लोगों के गहरा आक्रोश है। सामाजिककर्मियों के साथ-साथ विभिन्न दलों के राजनेता ने इसकी तीव्र आलोचना करते हुए पॉडकास्ट पर प्रतिबंध लगाने की मांग की। इस मामले पर सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने यूट्यूब को नोटिस जारी किया है। साथ ही राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग भी सक्रिय हुआ है। इस शो में माता-पिता, महिलाओं और उनके शरीर के बारे में अभद्र एवं अश्लील टिप्पणियां की गई थीं। इसलिये रियलिटी कामेडी शो के निर्माताओं, जजों और प्रतिभागियों के खिलाफ अपमानजनक भाषा और अश्लील सामग्री के इस्तेमाल को लेकर मुंबई पुलिस के साथ-साथ देश में अन्य स्थानों पर शिकायत दर्ज कराई गयी है। सोशल मीडिया से लेकर हर जगह रणवीर की थू थू हो रही है। हर कोई उनके खिलाफ आवाज उठा रहा है और जेल भेजने की मांग कर रहा है। तथाकथित रणवीर इलाहाबादिया के एक्स पर छह लाख से अधिक फालोअर, इंस्टाग्राम पर 45 लाख से अधिक फालोअर और यूट्यूब चैनल पर 1.05 करोड़ सब्सक्राइबर हैं। इलाहाबादिया उन ऑनलाइन कंटेंट क्रिएटर्स में से एक हैं, जो ऐसे अश्लील एवं संस्कृति-विरोधी प्रदर्शन से करोड़ों रुपये भी कमाते है, जिन्हें पिछले साल नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से राष्ट्रीय क्रिएटर्स पुरस्कार मिला था। पिछले दिनों उन्होंने डिजिटल इंडिया कॉरपोरेशन के साथ मिलकर कई कैबिनेट मंत्रियों का साक्षात्कार लिया था। इसके अलावा साल 2022 में उनका नाम फोर्ब्स अंडर 30 एशिया लिस्ट में भी आया था। 22 साल की उम्र में रणवीर ने अपना पहला यूट्यूब चैनल शुरू किया था, आज वह सात चैनलों को चला रहे हैं। पाकिस्तान से भारत आये रणवीर इलाहाबादिया का पूरा नाम रणवीर सिंह अरोड़ा है। लेकिन लोग उन्हें रणवीर इलाहाबादिया के नाम से जानते हैं। माता-पिता पर विवादित कमेंट करने से पहले रणवीर इलाहाबादिया कई बार सोशल मीडिया पर बवाल मचा चुके हैं। उनका विवादों से पुराना नाता रहा है। उनके विवादास्पद बयानों की वजह से उन्हें एक बार जिम से भी बैन किया गया था। इतना ही नहीं, वो लड़कियों के कपड़ों पर भी विवादित कमेंट करने की वजह से हेडलाइन्स बटोर चुके हैं। लेकिन ऐसे विकृत सोच रखने वाले लोगों को ऐसे बड़े सम्मान मिलना भी अनेक प्रश्नों को खड़ा करता है। क्योंकि यह अभिव्यक्ति की आजादी का बेहूदा, आपत्तिजनक एवं अमर्यादित उपयोग है, यह रचनात्मकता नहीं है, यह विकृति है और ऐसे विकृत व्यवहार को सामान्य नहीं माना जा सकता। विडम्बना एवं दुर्भाग्यपूर्ण तो यह स्थित भी है जिसमें इस खराब टिप्पणी को जिस तरह आम लोगों की जोरदार तालियां मिलीं। प्रश्न है कि आखिर हम कैसा समाज बना रहे हैं? क्यों हम अपनी संस्कृति एवं संस्कारों को घूमिल कर रहे हैं। रात्मक प्रभाव भी सामने आते जा रहे हैं। जो कि भारतीय समाज, संस्कृति और परिवार परम्परा पर सीधे आघात कर रहे हैं। भारत विरोधी तत्वों के द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से समाज में भौतिक वासना, नग्नता, अश्लीलता की विकृति फैलाने का काम भी हो रहा है। इससे समाज के भीतर कुंठित वासना एवं बीमार मानसिकता को जन्म दिया जा रहा है, जिसे रोकने के लिए सरकार से लेकर प्रशासन और समाज को साथ आकर कड़े कदम उठाने होंगे। एक ओर जहां सोशल मीडिया पर अनचाहे अश्लील दृश्यों की भरमार हो रही है। वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया प्लेटफार्म से होने वाली कमाई एक बड़ी वजह निकल कर सामने आ रही है। सोशल मीडिया पर किसी भी सामान्य व्यक्ति के द्वारा अपना अकाउंट बनाकर ऐसा भी कंटेंट अपलोड किया जा सकता है जिसे लेकर सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर किसी प्रकार की कोई रोट टोक एवं पाबंदी नहीं है। इस प्रकार के सोशल मीडिया अकाउंट बड़ी तेजी से बढ़ रहे हैं। समाज में पैसे का लोभ दिखाकर अश्लील शार्ट फिल्म और वेब सीरीज का गौरखधंधा धडल्ले से चल रहा है। मोबाइल एप्स और ओटीटी वेब पोर्टल पर अश्लील एवं संस्कृति विरोधी कंटेंट निर्बाध रूप से होना सरकार की बड़ी नाकामी है। यही कारण है कि ऐसे सभी प्रकार के मोबाइल एप्स और वेब पोर्टल पर भी सरकारी नियंत्रण की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही है। तकनीक के माध्यम से भारतीय युवा एवं किशोर पीढ़ी को अपने जीवन के प्रारंभ के समय से ही कामवासना के जाल में फंसाकर उनके जीवन को गौण बनाने एवं धुंधलाने के प्रयास किये जा रहे हैं। युवा शक्ति राष्ट्र की प्रेरक शक्ति है। नैतिक मूल्यों के बिना ज्ञान न केवल बेकार हैं, बल्कि समाज के लिए भी खतरनाक हैं। यही कारण है कि हमारी युवापीढ़ी बड़ी दुविधा में हैय उन्हें भारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उन्हें दिग्भ्रमित किया जाता है, जिससे वर्तमान भारतीय समाज न केवल प्रभावित होता है, बल्कि यह भावी पीढ़ी के भविष्य पर भी प्रश्नचिन्ह लगाता है। ऐसे अनेक प्रकार के अश्लील कंटेंट देखे जा सकते हैं जिसमें अश्लीलता के माध्यम से भारतीय परिवार व्यवस्था को नष्ट करने का काम भी षडयंत्रपूर्वक किया जा रहा है। जिसकी चर्चा समाज के भीतर प्रबुद्ध लोगों को करने की आवश्यकता है ताकि समय पर जागरूकता के साथ समाज और परिवार को गर्त में जाने से रोका जा सकता है।

दरअसल, साल 2021 में रणवीर इलाहाबादिया ने महिलाओं के कपड़ों पर सेक्सिएस्ट कमेंट किया था, जिसकी वजह से उस समय भी सोशल मीडिया पर बवाल खड़ा हो गया था। इस दौरान उन्हें लोगों ने बुरी तरह से ट्रोल किया था। उन्होंने एक ट्वीट करते हुए लिखा था कि कुर्ती पहनने वाली महिलाएं, पुरुषों को घुटने टेकने पर मजबूर कर देती हैं। रणवीर की इस पोस्ट के कारण उन्हें महिलाओं का भारी विरोध झेलना पड़ा। बावजूद इसके वे नारी अस्मिता एवं अस्तित्व को कुचलने की कोशिशों में लगातार संलग्न रहे हैं। जो व्यक्ति सनातन धर्म और आध्यात्मिकता की बात करता है और बड़ी हस्तियों को अपने शो में बुलाता है, वह ऐसी विकृत मानसिकता कैसे रख सकता है?

> रात्मक प्रभाव भी सामने आते जा रहे हैं। जो कि भारतीय समाज, संस्कृति और परिवार परम्परा पर सीधे आघात कर रहे हैं। भारत विरोधी तत्वों के द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से समाज में भौतिक वासना, नग्नता, अश्लीलता की विकृति फैलाने का काम भी हो रहा है। इससे समाज के भीतर कुंठित वासना एवं बीमार मानसिकता को जन्म दिया जा रहा है, जिसे रोकने के लिए सरकार से लेकर प्रशासन और समाज को साथ आकर कड़े कदम उठाने होंगे। एक ओर जहां सोशल मीडिया पर अनचाहे अश्लील दृश्यों की भरमार हो रही है। वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया प्लेटफार्म से होने वाली कमाई एक बड़ी वजह निकल कर सामने आ रही है। सोशल मीडिया पर किसी भी सामान्य व्यक्ति के द्वारा अपना अकाउंट बनाकर ऐसा भी कंटेंट अपलोड किया जा सकता है जिसे लेकर सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर किसी प्रकार की कोई रोट टोक एवं पाबंदी नहीं है।

मिटते लाल गलियारे में घिरते और घुटने टेकते नक्सली

दिलीप त्रिवेदी, पूर्व डीजी, सीआरपीएफ

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में रविवार को सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में 31 नक्सली मार गिराए गए। छत्तीसगढ़ वह राज्य है, जहां पहले माओवाद का नामोनिशान नहीं था। नक्सली मूलत- पश्चिम बंगाल, अविभाजित बिहार और आंध्र प्रदेश में पीपुल्स वार ग्रुप के नाम से अपना संगठन चलाते थे। जब इन राज्यों में उन पर दबाव बना, तो वे भागकर मध्य भारत आ गए। चूंकि यहां के जंगल काफी घने हैं, इसलिए यह जगह उन्हें मुफीद लगी। पहले उन्होंने स्थानीय आदिवासियों का भरोसा जीता, फिर बिहार और मध्य प्रदेश के बंटवारे के बाद झारखंड व छत्तीसगढ़ में अपना आधार फैलाया। चूंकि बंटवारे की प्रक्रिया में छोटे राज्यों के खाते में कम संसाधन आते हैं, इसलिए शुरुआत में छत्तीसगढ़ की स्थिति ऐसी थी कि बस्तर में एक सब-इंस्पेक्टर, एक हेड कांस्टेबल व छह सिपाही के भरोसे अधिकतर थाने चला करते थे। माओवादियों ने इनको निशाना बनाना शुरू किया, जिसके कारण दंडकारण्य में उनका खासा प्रभाव दिखने लगा।

जम्मू-कश्मीर या पंजाब के अलगाववादियों के उलट इन्हें बाहर से हथियार नहीं मिलते, इसलिए ये अपने दुश्मनों से हथियार लूटते हैं। जेलों व थानों पर हमले इसीलिए किए जाते रहे। जमींदारों से हथियार लूटे गए। चूंकि इन इलाकों में खनन का कार्य भी होता है, जिसमें विस्फोटक की जरूरत पड़ती है, अत- नक्सली खननकर्मियों को डरा-धमकाकर हासिल किए गए विस्फोटकों से आईईडी बनाने लगे। जब इनका प्रभाव काफी बढ़ने लगा, तो करीब दो दशक पहले केंद्र सरकार ने विशेष प्रयास करना शुरू किया। स्थानीय पुलिस को मजबूत बनाने की कोशिशें तेज हुईं। केंद्रीय सुरक्षा बल भी नियुक्त किए जाने लगे। 2013-14 में जब मैं सीआरपीएफ में डीजी था, तब छत्तीसगढ़ की स्थिति बहुत दयनीय थी। मगर अगले आठ-दस वर्षों में स्पेशल कमांडो तैयार किए गए, सीआरपीएफ ने कोबरा बटालियन गठित की और बुनियादी ढांचे को मजबूत किया गया।

इन तमाम रणनीतियों का ही नतीजा है कि अब हम नक्सलियों को घुटने पर लाने लगे हैं। बेशक, कभी नक्सली कहा करते थे कि पशुपति से तिरुपति तक लाल गलियारा बनेगा, लेकिन आज हालत यह है कि नेपाल और आंध्र प्रदेश में तो यह खत्म हो चुका है। छत्तीसगढ़ में इसका कुछ असर बचा है और विशेषकर दक्षिण बिहार, ओडिशा व झारखंड के कुछ थानों में इनकी सक्रियता देखी जा रही है। हालांकि, बीते 20-25 वर्षों में हमारे सुरक्षा बलों ने खूब मेहनत की है और हम यह उम्मीद बांधने लगे हैं कि दो साल के भीतर नक्सलियों का अंत हो जाएगा। हां, कभी-कभी 'कंगारू कोर्ट' जैसी घटनाएं सामने आ सकती हैं।

नक्सलियों से निपटने के लिए वक्त-वक्त पर हमने विशेष रणनीति बनाई है। मुझे याद है, वर्ष 2008 में बतौर गृह मंत्री पी चिदंबरम ने छत्तीसगढ़ में एक बैठक की थी, जिसमें मैं उत्तर प्रदेश पुलिस की तरफ से शामिल हुआ था। उसमें यह बात उठी थी कि संवेदनशील थानों के पास गाड़ियां नहीं हैं और सुरक्षा बल जिन बड़ी गाड़ियों का इस्तेमाल करते हैं, उनको आईईडी ब्लास्ट में नक्सली उड़ा देते हैं। तब तय हुआ था, मोटरसाइकिल से पेट्रोलिंग की जाएगी। वर्ष 2014 में राजनाथ सिंह जब गृह मंत्री की हैसियत से झारखंड गए थे और मौसम खराब था, तब वह खुद मोटरसाइकिल चलाते हुए नक्सली इलाकों में गए थे, जो उन दिनों अखबारों की सुर्खियां बनी थीं। कहने का अर्थ है कि समय के साथ हमने खुद को मजबूत बनाया है, जिसके कारण यह स्थिति बनी है। अब जरूरत यह है कि जो थोड़ी-बहुत सहायता नक्सलियों को मिलती है, उनको भी बंद किया जाए। सड़क व पुल जैसे बुनियादी ढांचे पर अधिकाधिक काम तो हो ही, ताकि सुरक्षा बल सघन इलाकों में आसानी से पहुंच सकें। साथ ही, नक्सलियों तक पहुंचने वाली विस्फोटकों की खेप रोकी जाए। इसके लिए खनन-कार्य में इस्तेमाल होने वाली विस्फोटक के बैग और ट्रकों पर आरएफआईडी टैग लगाने का एक सुझाव है, ताकि यह पता चल सके कि किस-किस खनन-स्थल से माओवादी विस्फोटक लेते हैं। चूंकि नक्सली अब हथियारों को नहीं लूट पा रहे, ऐसे में यदि विस्फोटकों तक उनकी पहुंच रुक जाए, तो वे खुद काफी हद तक निष्क्रिय हो जाएंगे।

कांग्रेस ने आम आदमी पार्टी को हराया

> आरोप लगाया जा रहा है कि कांग्रेस की वजह से दिल्ली में आम आदमी पार्टी को हार का मुंह देखना पड़ा। मगर ऐसा कहने वाले हकीकत में सच्चाई से मुंह मोड़ रहे हैं। दिल्ली में आप चुनाव हारी, तो इसका कारण आम आदमी पार्टी की सरकार के खिलाफ लोगों में फैली नाराजगी और सत्ता-विरोधी रुझान है। इसमें कांग्रेस का हाथ नहीं है, बल्कि आप नेता जनता से झूठ बोलते रहे। इसी तरह, हरियाणा में जब कांग्रेस को आप के समर्थन की जरूरत थी और भाजपा को हराने के लिए आप के साथ गठबंधन बनाने को वह तैयार थी, तब उसने अपने उम्मीदवार उतारकर चुनावी मैदान का रुख बदल दिया।

दिल्ली चुनाव में भाजपा और आम आदमी पार्टी के बीच बमुश्किल दो प्रतिशत वोट का अंतर है, फिर सीटों का अंतर इतना ज्यादा क्यों है? यह बात समझने के लिए इस चुनाव में कांग्रेस की भूमिका पर गौर करना जरूरी है। कांग्रेस पिछले चुनाव में वेंटिलेटर पर थी। इस बार वेंटिलेटर हटा, पर आईसीयू में अब भी है। कहा जा रहा था कि कांग्रेस दिल्ली के नतीजों पर उसी स्थिति में असर डाल पाएगी, जब कम से कम 10 फीसदी वोट ले। मगर 6.34 प्रतिशत वोट लेकर भी उसने आम आदमी पार्टी को सत्ता से बाहर कर दिया। वास्तव में, कांग्रेस ने सीधे-सीधे 19 सीटों के नतीजों पर असर डाला। आम आदमी पार्टी अपनी 14 सीटें कांग्रेस की वजह से हारी। अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया, सौरभ भारद्वाज, सोमनाथ भारती, राखी बिड़लान, महेंद्र चौधरी और दुर्गेश पाठक जैसे बड़े आप नेताओं की सीटें इनमें प्रमुख हैं। भाजपा भी पांच सीटें कांग्रेस की वजह से हारी। इनमें कालकाजी में आतिशी के खिलाफ विधूड़ी की हार भी शामिल है। कस्तूरबा नगर और बादली जैसी सीटों को छोड़कर खुद कांग्रेस ने किसी भी सीट पर बहुत ज्यादा वोट नहीं लिए, लेकिन उसका प्रदर्शन बताता है कि अपनी सुस्ती के बावजूद वोटरों के समूह के बीच पार्टी जिंदा है। वैसे, इस चुनाव में कांग्रेस के लिए कई सबक भी हैं। कांग्रेस और आप, दो ऐसे राजनीतिक दल हैं, जो किसी भी हिसाब से साथ नहीं आ सकते। उनके बीच

अधिकतम सहयोग उसी तरह हो सकता है, जिस तरह केरल में लेफ्ट और कांग्रेस के बीच है। यह बात कांग्रेस को समझनी पड़ेगी कि विपक्षी एकता को मजबूत करने का ठेका सिर्फ उसका नहीं है। खुद को मजबूत किए बिना 'इंडिया' ब्लॉक की मजबूती की बातें बेमानी हैं। केजरीवाल का अहंकार, उनका शीशमहल, मोदी की गारंटी, भाजपा की रणनीति, भगवा कार्यकर्ताओं की मेहनत, आरएसएस की भागदौड़ जैसे कई कारण प्रथम दृष्टि में आम आदमी पार्टी की हार की वजह लगते हैं, लेकिन कांग्रेस और आप का गठबंधन बनता, तो मुमकिन है कि केजरीवाल को सत्ता से बाहर न होना पड़ता। खुद केजरीवाल को उतने वोट से हार का सामना करना पड़ा, जितने वोट कांग्रेस ने काटे। कहा जा रहा है कि ऐसी 14 सीटें हैं, जिस पर आम आदमी पार्टी की हार के लिए कांग्रेस पार्टी सीधे-सीधे जिम्मेदार है। अगर ये सीटें आप के खाते में आतीं, तो उसके पास कुल 36 सीटें हो जातीं और वह फिर से सरकार बनाने में सफल हो जाती। गुजरात, गोवा, हरियाणा सहित तमाम राज्यों में कांग्रेस के खिलाफ प्रत्याशी उतारकर कांग्रेस को हराने में भाजपा की मदद करने वाली आम आदमी पार्टी दिल्ली में चुनाव क्या हारी, उसके समर्थक कांग्रेस पर आक्षेप लगाने लगे हैं। आरोप लगाया जा रहा है कि कांग्रेस की वजह से दिल्ली में आम आदमी पार्टी को हार का मुंह देखना पड़ा। मगर ऐसा कहने वाले हकीकत में सच्चाई से मुंह मोड़ रहे हैं। दिल्ली में आप चुनाव हारी, तो इसका कारण आम आदमी पार्टी की सरकार के खिलाफ लोगों में फैली नाराजगी और सत्ता-विरोधी रुझान है। इसमें कांग्रेस का हाथ नहीं है, बल्कि आप नेता जनता से झूठ बोलते रहे। इसी तरह, हरियाणा में जब कांग्रेस को आप के समर्थन की जरूरत थी और भाजपा को हराने के लिए आप के साथ गठबंधन बनाने को वह तैयार थी, तब उसने अपने उम्मीदवार उतारकर चुनावी मैदान का रुख बदल दिया। समझना यह भी होगा कि कांग्रेस एक राष्ट्रीय पार्टी है और सारे राज्यों में उसका एक अस्तित्व है, अपना एक वोटर है और कांग्रेस अपने वोटरों के लिए चुनाव लड़ेगी, न कि भाजपा के साथ पर्दे के पीछे हाथ मिलाने वाली क्षेत्रीय पार्टियों के लिए खुद को हाशिये पर धकेल देगी। आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल की एक बड़ी गलती यह रही कि उन्होंने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और सीबीआई के डर के कारण भाजपा के पक्ष में कई राज्यों में बैटिंग की, जिसके कारण भारतीय जनता पार्टी मजबूत हुई। हालांकि, भाजपा ने भ्रष्टाचार में घिरे आम आदमी पार्टी के नेताओं को जेल में डाल ही दिया। बहरहाल, यह चुनाव नतीजा अरविंद केजरीवाल के लिए किसी सबक से कम नहीं। कुछ लोग आप की हार के लिए कांग्रेस को जिम्मेदार बता रहे हैं, जबकि अरविंद केजरीवाल जिन नीतियों पर चल रहे थे, उनके प्रति अनासक्ति के कारण जनता ने उन्हें नकार दिया। हार की असली वजह तो यही है। हालांकि, आम आदमी पार्टी को करीब 43.5 फीसदी मत मिला, जबकि भाजपा का 45.5 प्रतिशत। इसका अर्थ है कि अपनी आभा खो देने की वजह से इन्होंने पार्टी को चौपट कर दिया। गंभीर नेताओं को इन्होंने पार्टी से निकाल बाहर किया। अल्पसंख्यकों, दलितों और महिलाओं का समर्थन उनके प्रति कम हुआ। शीश महल बेमतलब की बनाई गई। देखा जाए, तो केजरीवाल कभी भी विपक्ष का हिस्सा नहीं बने। वह अपना ही एजेंडा चलाते रहे।

गजांफर चैंपियंस ट्राफी के लिये अफगान टीम से बाहर

काबुल। अफगानिस्तान के आफ स्पिनर एएम गजांफर कमर के निचले हिस्से में फ्रैक्चर होने के कारण चैम्पियंस ट्रॉफी से बाहर हो गए हैं। अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने बुधवार को एक्स पर यह जानकारी साझा की।

बोर्ड ने लिखा अफगानिस्तान की युवा स्पिन गेंदबाजी सनसनी, एएम ग़ज़नफ़र कमर के निचले हिस्से में फ्रैक्चर के कारण आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी से बाहर हो गए हैं। उन्हें अफगानिस्तान के हाल ही में जिम्बाब्वे दौरे के दौरान चोट लगी थी, और वह कम से कम चार महीने के लिए बाहर रहेंगे और इस अवधि के दौरान उपचाराधीन रहेंगें। बोर्ड ने लिखा नांग्याल खरोती, जो रिजर्व पूल का हिस्सा थे, को चैंपियंस ट्रॉफी के लिए मुख्य टीम में शामिल किया गया है। इसके अलावा मुजीब उर रहमान पूरी तरह से ठीक होने तक वनडे मैच से बाहर रहेंगे। बायें हाथ के स्पिनर नांगेयालिया खरोटे अब तक सात वनडे और छह टी20 मैच खेल चुके हैं।

महिला 10 किमी पैदल चाल स्पर्धा पूरी करने वाली सभी नौ खिलाड़ियों ने पिछला रिकॉर्ड तोड़ा

एजेंसी

देहरादून। अभूतपूर्व नतीजे में मंगलवर को राष्ट्रीय खेलों की महिला 10 किमी पैदल चाल स्पर्धा पूरी करने वाली सभी नौ प्रतिभागियों ने 26 साल पहले बने खेलों के रिकॉर्ड समय से बेहतर प्रदर्शन किया। स्पर्धा में 11 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया लेकिन दो स्पर्धा को पूरा नहीं कर पाए।

राष्ट्रीय रिकॉर्ड धारक प्रियंका गोस्वामी ने अपनी प्रविष्टि भेजी थी लेकिन उन्होंने स्पर्धा में हिस्सा नहीं लिया। मणिपुर में 1999 के बाद इस स्पर्धा की राष्ट्रीय खेलों में वापसी हुई है। पिछले साल 20 किमी स्पर्धा में राष्ट्रीय अंतर राज्यीय और राष्ट्रीय ओपन चैंपियनशिप जीतने वाली हरियाणा की रवीना ने 45.52 सेकेंड के समय के साथ स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने 1999 खेलों के दौरान इम्फाल

में बनाए मणिपुर की वाई बाला देवी के 51.56 सेकेंड के खेलों के पिछले रिकॉर्ड में सुधार किया। रवीना के बाद स्पर्धा पूरी करने वाली आठ प्रतिभागियों ने भी 51.56 सेकेंड के खेलों के पिछले रिकॉर्ड से बेहतर प्रदर्शन किया। उत्तराखंड की शालिनी (46.12 सेकेंड) ने रजत जबकि उत्तर प्रदेश की मुनिता प्रजापति (46ः23 सेकेंड) ने कांस्य पदक जीता।

तमिलनाडु की मोकावी मुथुराथिनम (46.23 सेकेंड), उत्तराखंड की पायल (47.36 सेकेंड), उत्तर प्रदेश की रेशमा पटेल (48.16 सेकेंड), उत्तराखंड की मानसी नेगी (48.32 सेकेंड), महाराष्ट्र की सेजल सिंह (49.33 सेकेंड) और हरियाणा की मोनिका (51.45 सेकेंड) ने भी पिछले राष्ट्रीय रिकॉर्ड से बेहतर समय निकाला। हालांकि कि सिर्फ रवीना के समय को राष्ट्रीय खेलों के नए रिकॉर्ड के रूप में जगह मिली। पुरुष 20 किमी पैदल चाल में 10 में से छह प्रतिभागियों ने एक घंटा 23 मिनट 26 सेकेंड के राष्ट्रीय खेलों के पिछले रिकॉर्ड से बेहतर प्रदर्शन किया। यह रिकॉर्ड झारखंड के गुरमीत सिंह ने 2011 में बनाया था।

सेना के सर्विन सबेस्टियन ने एक घंटा 21 मिनट 23 सेकेंड के निजी सर्वश्रेष्ठ समय के साथ स्वर्ण पदक जीता। उनका पिछला निजी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन एक घंटा 21 मिनट 39 सेकेंड था। पेरिस ओलंपिक 2024 की मैराथन पैदल चाल मिश्रित रिले स्पर्धा में प्रियंका गोस्वामी के साथ प्रतिस्पर्धा करने वाले उत्तराखंड के सूरज पंवार ने एक घंटा 21 मिनट 34 सेकेंड के समय से रजत पदक जीता जबकि पंजाब के अमनजोत सिंह (एक घंटा 21 मिनट 42 सेकेंड) ने कांस्य पदक हासिल किया। पेरिस ओलंपियन सेना के परमजीत सिंह बिष्ट (एक घंटा 22 मिनट दो सेकेंड), उत्तर प्रदेश के राम बाबू (एक घंटा 22 मिनट 26 सेकेंड) और राजस्थान के मुकेश निथरवाल (एक घंटा 22 मिनट 52 सेकेंड) ने भी राष्ट्रीय खेलों के पिछले रिकॉर्ड से बेहतर प्रदर्शन किया।

मेग लैनिंग बोलीं-शेफाली काफी अच्छी लय में, उम्मीद है कि वह इसे डब्ल्यूपीएल में जारी रखेगी

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली कैपिटल्स की कप्तान मेग लैनिंग ने मंगलवार को उम्मीद जताई कि भारत की विस्फोटक सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा घरेलू क्रिकेट की अपनी शानदार फॉर्म को शुक्रवार से शुरू हो रही महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के तीसरे सत्र में भी बरकरार रखेगी। नवंबर 2024 में ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए भारतीय टीम में जगह बनाने में नाकाम रहीं शेफाली ने हाल में घरेलू मुकाबलों में हरियाणा की ओर से शानदार प्रदर्शन किया जिससे संकेत मिलते हैं कि उन्होंने लय हासिल कर ली है।

लैनिंग ने दिल्ली कैपिटल्स की सत्र पूर्व प्रेस कांफ्रेंस में कहा, ऐसा लग रहा है कि वह काफी अच्छी लय में है और अपने खेल का लुत्फ उठा रही है जो मुझे लगता है कि काफी महत्वपूर्ण है। मेरे लिए उसे आजादी से खेलते हुए देखना, खुद को अभिव्यक्त करते हुए देखना शानदार है और जब वह ऐसा करती है तो यह हमारी टीम के लिए बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।'' शेफाली सीनियर महिला एकदिवसीय ट्रॉफी में 75.29 की औसत से 527 रन बनाकर सर्वाधिक रन बनाने वाली खिलाड़ी थीं जबकि सीनियर महिला एकदिवसीय चैलेंजर ट्रॉफी में दाएं हाथ की इस बल्लेबाज ने 82.80 की औसत से 414 रन बनाए। दोनों ही मौकों पर उन्होंने 150 के करीब के स्ट्राइक रेट से रन बनाए। पिछले साल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद लैनिंग ने डब्ल्यूपीएल 2025 से पहले अधिक मुकाबले नहीं खेले हैं। यह पूछने पर कि वह खेल से कैसे जुड़ी हुई हैं? लैनिंग ने कहा, ''मैं डब्ल्यूएनसीएल (महिला राष्ट्रीय क्रिकेट लीग) में विक्टोरिया के लिए कुछ मैच खेली। मुझे लगता है कि मैच खेलना महत्वपूर्ण है।'' उन्होंने कहा, ''मुझे लगता है कि इस नजरिये से वे मुकाबले मेरे लिए शानदार रहे। मुझे लगता है कि मैं अपने खेल को लेकर अच्छी स्थिति में हूं। लैनिंग ने कहा कि अतीत में भारत में खेलने का उनका अनुभव डब्ल्यूपीएल में उनके लिए मददगार साबित होगा। उन्होंने कहा, मुझे हमेशा भारत में खेलना और बल्लेबाजी करना अच्छा लगता है। मुझे पहले भी कुछ सफलता मिली है। मैं कुछ दिनों से यहां हूं, यहां की परिस्थितियों के हिसाब से ढलना और अपनी योजना के बारे में स्पष्ट होना और इसे कैसे करना है, यह जानना अच्छा रहा है।'' असल में सभी टीम और खिलाड़ियों को जल्द से जल्द खुद को ढालना होगा क्योंकि डब्ल्यूपीएल का आयोजन पहली बार चार स्थलों- वडोदरा, बेंगलुरू,

महाकुम्भ की आस्था में ओतप्रोत अनिल कुंबले ने त्रिवेणी संगम में किया पावन स्नान

एजेंसी

महाकुम्बनागर। पूर्व भारतीय क्रिकेटर और कोच अनिल कुंबले और पत्नी चेतना रामतीर्था ने माघ पूर्णिमा के पावन अवसर पर त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाई। स्नान के बाद बुधवार को दोनों ने सूर्य को अर्घ्य दिया और पूरे विधि विधान से पूजा अर्चना कर पुण्य डुबकी लगाई। उन्होंने नाव पर सवार होकर सेल्फी भी अपलोड की और माघ पूर्णिमा पर पूर्ण चंद्रमा की छवि भी अपने प्रशंसकों के साथ साझा की। इस दिव्य आयोजन का हिस्सा बने कुंबले महाकुम्भ की भव्यता और आध्यात्मिक ऊर्जा से अभिभूत नजर आए। कुंबले ने संगम स्नान के बाद अपनी तस्वीरें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर साझा कीं। उन्होंने अपनी तस्वीरों के साथ सिर्फ एक शब्द लिखा और वो था ब्लेस्ड (आशीर्वाद)। इससे उनका तात्पर्य

यही था कि त्रिवेणी संगम में स्नान कर उन्हें भी पुण्य की प्राप्ति हुई और तीर्थराज प्रयागराज का आशीष मिला। अपनी फिरकी से विरोधी बल्लेबाजों को पवेलियन की राह दिखाने वाले अनिल कुंबले मंगलवार को ही प्रयागराज पहुंच गए थे। हालांकि, त्रिवेणी स्नान के लिए उन्होंने माघ पूर्णिमा का पावन दिन चुना। इस दिन महाकुम्भ में वीवीआईपी प्रोटोकॉल जारी नहीं होता। इसके बावजूद वह सामान्य श्रद्धालु की तरह नाव पर सवार होकर त्रिवेणी संगम पहुंचे और संगम में स्नान किया।

लीजेंड लीग पर आग बरसा रहा है शिखर का बल्ला

एजेंसी

रायपुर (छत्तीसगढ़)। भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज शिखर धवन लीजेंड 90 लीग में बल्ले से आग बरसाते नजर आ रहे हैं। उन्होने अपने पिछले मैच में बिग बॉयस के खिलाफ नाबाद 50 रनों की शानदार पारी खेली। आठ से 18 फरवरी तक चलने वाली इस लीग में शिखर के अलावा लेंडल सिमंस, थिसारा परेरा, रॉस टेलर और मार्टिन गप्टिल जैसे कई पूर्व दिग्गज खिलाड़ी प्रतिस्पर्धी क्रिकेट खेल रहे हैं। दिल्ली रॉयल्स का प्रतिनिधित्व कर रहे धवन ने लीग का हिस्सा बनने पर खुशी जाते हुए कहा कि, यह टूर्नामेंट रिटायर्ड खिलाड़ियों को एक बार फिर उसी रोमांच को जीने का मौका दे रहा है, जो कभी उनका हिस्सा हुआ करता था।

उन्होंने कहा कि, लीग को बहुत अच्छे तरीके आयोजित किया गया है। चाहे मैदान हो, विकेट हो, ड्रेसिंग रूम की व्यवस्था हो, सभी चीजें बहुत बढ़िया हैं, खासकर प्रशंसकों से जिस तरह का प्यार मिल रहा है, वह देखने लायक है। 90 बॉल क्रिकेट का या फटाफट प्रारूप हमारे जैसे खिलाड़ियों के लिए एक अलग ही अनुभव है। हमने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में जबरदस्त प्रेशर के साथ खेला है, लेकिन यहां हम खेल पर फोकस करने के साथ ही एंजॉय भी कर सकते हैं। शिखर ने कहा कि, इस लीग का क्रेज बहुत जबरदस्त है और मुझे पूरा यकीन है कि मैदान के अंदर और बाहर दोनों ही जगह दर्शकों से इसे भरपूर प्यार मिलने वाला है प्रशंसक इसका सीधा प्रसारण सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क पर देख सकते हैं। डिजिटल स्ट्रीमिंग फैन कोड और सोनी लिव पर उपलब्ध है।

रुपया 61 पैसे मजबूत

मुंबई। वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) का हस्तक्षेप तेजी से बढ़ने की बदौलत आज अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया 61 पैसे मजबूत होकर 87 रुपये प्रति डॉलर के मनोवैज्ञानिक स्तर से नीचे 86.85 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ। वहीं, इसके पिछले कारोबारी दिवस रुपया 87.46 रुपये प्रति डॉलर पर रहा था। कारोबार की शुरूआत में 87.46 रुपये प्रति डॉलर पर सपाट खुला और सत्र के दौरान यही इसका दिवस का निचला स्तर रहा। वहीं, आयातकों एवं बैंकरों की बिकवाली होने से यह 86.62 रुपये प्रति डॉलर के उच्चतम स्तर पर रहा। अंत में पिछले दिवस के 87.46 रुपये प्रति डॉलर की तुलना में 61 पैसे मजबूत होकर 86.85 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ।

सैमसंग 'गैलेक्सी एम्पावर्ड' कार्यक्रम से 20 हजार शिक्षकों को उन्नत प्रोद्यौगिकी का कौशल करेगा प्रदान

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारत के सबसे बड़े उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग 'गैलेक्सी एम्पावर्ड' के जरिए देश में शिक्षा क्षेत्र में शिक्षकों, प्रधानाचार्यों और प्रशासकों को सशक्त बनाकर शिक्षा को बदलने का प्रयास करेगा और इस वर्ष 20 हजार शिक्षकों को उन्नत प्रोद्यौगिकी और मिश्रित शिक्षा उपकरण का कौशल प्रदान करेगा।

कंपनी ने आज यहां आयोजित समारोह में 'गैलेक्सी एम्पावर्ड' के शुभारंभ की घोषणा की है। इस समरोह में शिक्षकों और उन्नत प्रोद्योगिकी के जानकारों ने भागीदारी और शिक्षा में तकनीकी के इस्तेमाल को लेकर अपने-अपने अनुभव साझा किये। इस पहल का उद्देश्य देश में

शिक्षकों को कौशल प्रदान करना है, उन्हें मिश्रित शिक्षण कार्यक्रमों, व्यावहारिक प्रशिक्षण और मार्गदर्शन के अवसरों के साथ-साथ सशक्त बनाना है। इस अवसर पर 2008 ओलंपिक में स्वर्ण पदक विजेता अभिनव बिंद्रा ने मुख्य अतिथि के तौर पर कहा, सैमसंग की गैलेक्सी एम्पावर्ड पहल शिक्षकों को उन्नत प्रौद्योगिकी, मिश्रित शिक्षण उपकरण और एक सहायक समुदाय तक पहुँच प्रदान करके अंतराल को पाटती है। ऑनलाइन और व्यक्तिगत व्यावसायिक विकास के माध्यम से, शिक्षक अपनी कक्षाओं में प्रौद्योगिकी को प्रभावी ढंग से एकीकृत कर सकते हैं। सैमसंग के उत्पादों और अनुकूलित संसाधनों के साथ व्यावहारिक अनुभव प्रदान करके, हम शिक्षकों को छात्र जुड़ाव बढ़ाने, कार्यों को सुव्यवस्थित करने और शिक्षण प्रभावशीलता में सुधार करने में सहायता कर रहे हैं। सैमसंग इंडिया के एमएक्स बिजनेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजू पुलन ने कहा, पिछले वर्ष दिसंबर से 'गैलेक्सी एम्पावर्ड' के तहत लाइव प्रशिक्षण सत्रों के जरिए देशभर में 2,700 से अधिक शिक्षकों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए हैं। कार्यक्रम का लक्ष्य 2025 तक देश के 20 हजार शिक्षकों को शिक्षा की उन्नत प्रोद्यौगिकी को लेकर सशक्त बनाना है। दिल्ली चरण के लिए सैमसंग ने 250 स्कूलों में सफलतापूर्वक 'गैलेक्सी एम्पावर्ड' कार्यक्रम आयोजित किया है।

ब्लैक बॉक्स का मुनाफा 37 प्रतिशत बढ़ा, राजस्व में नौ फीसदी की गिरावट

एजेंसी

नयी दिल्ली। एस्सार समूह की कंपनी ब्लैक बॉक्स का चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में शुद्ध मुनाफा इसके पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही के 41 करोड़ रुपये के मुकाबले 37 प्रतिशत की बढ़ोतरी लेकर 56 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। कंपनी ने मंगलवार को बयान जारी कर बताया कि हालांकि, आलोच्य अवधि में कंपनी का राजस्व 1655 करोड़ रुपये की तुलना में नौ प्रतिशत घटकर 1502 करोड़ रुपये रह गया। कंपनी ने बताया कि सतत सुधार और उत्पादकता बढ़ाने के उपायों के कारण ईबीआईटीडीए (ब्याज, कर, मूल्यह्रास और परिशोधन से पहले की कमाई)

और शुद्ध लाभ में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। दिसंबर 2024 तक ब्लैक बॉक्स का ऑर्डर बुक 46.5 करोड़ डॉलर (करीब 3,900 करोड़ रुपये) रही। ब्लैक बॉक्स के पूर्णकालिक निदेशक संजीव वर्मा ने कहा, एआई तकनीक में तेजी से हो रही प्रगति से वैश्विक स्तर पर एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) उपकरणों की मांग में उछाल की उम्मीद है। इससे डिजिटल बुनियादी ढांचे की आवश्यकता बढ़ेगी, जिससे हाइपरस्केलर एआई इंफ्रास्ट्रक्चर और डेटा सेंटरों में भारी निवेश हो रहा है। हमें वित्त वर्ष 2029 तक दो अरब डॉलर के राजस्व लक्ष्य तक पहुंचने का पूरा भरोसा है।

जयंत चौधरी ने एनएसटीआई बेंगलुरु में किया नए छात्रावास भवन का उद्घाटन

एजेंसी

बेंगलुरु। केंद्रीय कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री जयंत चौधरी ने कहा कि देश में युवाओं को भविष्य के लिए तैयार कौशल से लैस करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण बुनियादी ढांचे में निवेश आवश्यक है।

श्री चौधरी ने मंगलवार को राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान (एनएसटीआई, सामान्य), बेंगलुरु में एक नवनिर्मित छात्रावास भवन का उद्घाटन किया। कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय की एक विज्ञप्ति के अनुसार इस सुविधा का उद्देश्य प्रशिक्षुओं के लिए एक सुरक्षित और आरामदायक आवासीय वातावरण प्रदान करना है और यह युवाओं को सशक्त बनाने के लिए सरकार की मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस अवसर पर श्री चौधरी ने कहा, चूंकि कौशल 2047 तक भारत को विकास राष्ट्र बनाने के

हमारे संकल्प में केंद्र में है, इसलिए हमारे युवाओं को भविष्य के लिए तैयार कौशल से लैस करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण बुनियादी ढांचे में निवेश आवश्यक है। उन्होंने कहा कि एनएसटीआई बेंगलुरु में आज छात्रावास का उद्घाटन एक उत्साहजनक और समावेशी स्थान प्रदान करने की दिशा में एक कदम है। यहां प्रशिक्षु बिना किसी बाधा के सीख सकते हैं, नवाचार कर सकते हैं और डिजिट प्रौद्योगिकी पर आधारित उद्योग के लिए अपनी तैयारी कर सकते हैं। कुल 11.06 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित, नवनिर्मित छात्रावास 3,423.23 वर्ग मीटर में फैला है और इसमें तीन मंजिलों में दो-दो विस्तर वाले 30 कमरे हैं, जिनमें 60 प्रशिक्षु रह सकते हैं।

वीएफआई ग्रुप की इस वर्ष देश में 100 'बियॉन्ड स्लीप' स्टोर खोलने की योजना

नयी दिल्ली। वैश्विक स्तर पर प्रीमियम स्लीप सॉल्यूशंस (मैट्रेस) का कारोबार करने वाले वीएफआई ग्रुप ने मंगलवार को गुरुग्राम में एक विशाल स्टोर के साथ भारत में कदम रखते हुए इस साल देश भर में अपने 100 'बियॉन्ड स्लीप' मैट्रेस एवं फर्नीचर स्टोर खोलने की घोषणा की। वीएफआई ग्रुप के सेल्स एवं मार्केटिंग डायरेक्टर सतीश कुमार मल्होत्रा ने इस अवसर पर भारतीय बाजार की संभावनाओं के प्रति उत्साह जताते हुए कहा, हमारा सपना है कि बियॉन्ड स्लीप का नाम हर घर की जुबान पर हो और हमारी योजना इसी साल पूरे भारत में 100 स्टोर खोलने की है। हम एक दमदार शुरुआत कर रहे हैं और अगले तीन वर्षों में हमारा ब्रांड 1000 करोड़ रुपये का हो यह हमारा लक्ष्य है। कंपनी ने 5000 वर्ग फुट का विशाल स्टोर डीएलएफ सिटी सेंटर, एमजी रोड, गुड़गांव में खोला है जिसमें इस जाने माने ब्रांड के उत्पाद और सुविधाएं एक साथ उपलब्ध हैं।

नेक्स्टवेव ने टियर आईवी, ऑटोवेयर फाउंडेशन, एनएसडीसी के साथ किया गठबंधन

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारत के युवाओं को उभरती हुई टेक्नोलॉजी में अपस्किल करने में अग्रणी, नेक्स्टवेव ने एनएसडीसी के साथ साझेदारी में लॉन्च किए गए स्किलअप इंडिया 4.0 को आगे बढ़ाने के लिए टियर-ढ्ढङ्क और ऑटोवेयर फाउंडेशन के साथ गठबंधन किया है।

टियर-ढ्ढङ्क ने जापान में मुख्यालय के साथ ऑटोनोमस ड्राइविंग के लिए दुनिया के पहले ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर के विकास में मुख्य भूमिका निभाई है तथा ऑटोवेयर ऑटोनोमस ड्राइविंग के लिए दुनिया का अग्रणी ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर प्रोजेक्ट है। नेक्स्टवेव के इस गठबंधन का उद्देश्य दुनिया के सबसे बड़े ऑटोनोमस व्हीकल (एवी) डेवलपर समुदाय का औपचारिक निर्माण करना है। इस अभूतपूर्व साझेदारी का उद्देश्य विश्व में हो रही फिज़िकल कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) क्रांति में भारत को नेतृत्वकारी स्थिति में लेकर आना है। इस साझेदारी के अंतर्गत भारत के युवाओं को तेजी से विकसित होते हुए ऑटोनोमस व्हीकल सेक्टर में फ्यूचर-रेडी स्किल्स प्रदान करना है, ताकि एकेडेमिक पाठ्यक्रम और उद्योग की जरूरतों के बीच का अंतर दूर किया जा सके। आर्टिफिशियल इंटैलिजेंस और वास्तविक दुनिया के फिज़िकल सिस्टम्स के इंटीग्रेशन की मदद से फिज़िकल एआई का उद्देश्य परिवहन, लॉजिस्टिक्स, हेल्थकेयर और मैन्युफैक्चरिंग जैसे उद्योगों में परिवर्तन लेकर आना है। यह अभियान न केवल एआई आधारित मोबिलिटी समाधानों की बढ़ती मांग को पूरा करता है, बल्कि युवा इनोवेटर्स को हैंड्स-ऑन अनुभव और विश्व के लिए उपयोगी विशेषज्ञता भी प्रदान करता है, ताकि ऐसे इंटैलिजेंट ऑटोनोमस सिस्टम्स का निर्माण हो सके, जो एफिशियंट, सुरक्षित, और इनोवेटिव हों। एनएसडीसी के सीईओ वेद मणि तिवारी, टियर-ढ्ढङ्क के शिनपेई काटो और ऑटोवेयर फाउंडेशन के क्रिश्चियन जॉन की मौजूदगी में लॉन्च किया गया यह अभियान कौशल के अंतर को दूर करने और एवी टेक्नोलॉजी में इनोवेशन को बढ़ावा देने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। एवी डेवलपर समुदाय का उद्देश्य भारत में प्रतिभाओं की मुख्य चुनौतियों को दूर करना है। इसका उद्देश्य एवी टेक्नोलॉजी को लेकर जागरुकता की कमी को दूर करना, उद्योग और एकेडेमिक्स के बीच का अंतर खत्म करना तथा एआई-संचालित मोबिलिटी में वैश्विक योग्यता रखने वाले कार्यबल का निर्माण करना है। इस साझेदारी द्वारा भारत फिजिकल एआई क्रांति में नेतृत्व करने के लिए तैयार है। यहाँ पूरे विश्व से निवेश आकर्षित होता तथा शोध को बढ़ावा मिलेगा, जिससे विभिन्न सेक्टर्स में टेक्नोलॉजिकल विकास हो सकेंगे। इस गठबंधन के बारे में नेक्स्टवेव के फाउंडर एवं सीईओ राहुल अत्तुलुरी ने कहा, ''हम इस साझेदारी के लिए बहुत उत्साहित हैं। यह एक फ्यूचर-रेडी कार्यबल का निर्माण करने के हमारे उद्देश्य के अनुरूप है। टियर-ढ्ढङ्क के साथ नेक्स्टवेव के विस्तृत अपस्किलिंग फ्रेमवर्क और ऑटोवेयर की अत्याधुनिक ओपन-सोर्स टेक्नोलॉजी के साथ हमें विश्वास है कि हम एवी और फिज़िकल एआई इनोवेशन में भारत को मजबूत स्थिति में लाकर खड़ा कर देंगे। एनएसडीसी के सीईओ व एमडी वेद मणि तिवारी ने कहा,''यह महत्वपूर्ण साझेदारी टेक्नोलॉजिकल लीडरशिप की ओर भारत के सफर का एक अहम क्षण है। हमारे युवाओं को अत्याधुनिक ऑटोनोमस व्हीकल स्किल्स प्रदान करके हम न केवल प्रतिभाओं की कमी को पूरा कर रहे हैं, बल्कि भारत को फिजिकल एआई इनोवेशन के वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित भी कर रहे हैं।

प्रधान सम्पादक, स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, राजकुमार यादव द्वारा राज आफसेट एबीसी काम्पलेक्स अपोजिट शुभम सिनेमा क्वीनटन रोड कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित कराकर 424-बी वैशाली इंक्लेब सेक्टर 9 इंदिरानगर लखनऊ से प्रकाशित।
समस्त विवाद वाराणसी न्यायलय के अधीन होंगे। फोन नं. 9935781155 E-mail :- info.shakuntimes@gmail.com RNI: UPHIN/2012/45286 प्रधान कार्यालय:- शक्तिपीठ, बरईपुर, सारनाथ, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) पिन कोड - 221007

एमवीए में बढ़ गयी दरार !

उद्धव की सेना ने एकनाथ शिंदे को सम्मानित करने पर शरद पवार से नाराजगी व्यक्त की

एजेंसी

मुंबई। महाराष्ट्र में महा विकास अघाड़ी (एमवीए) के भीतर बढ़ती दरार के बीच, उद्धव ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) ने राज्य के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को सम्मानित करने के लिए शरद पवार से नाराजगी जताई है। उद्धव सेना के सूत्रों के अनुसार, उद्धव ठाकरे ने एनसीपी-एससीपी प्रमुख द्वारा शिंदे को दिए गए महादजी शिंदे राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार पर नाराजगी जताई है। ठाकरे ने कहा है कि पवार को उपमुख्यमंत्री को सम्मानित नहीं करना चाहिए था, क्योंकि उन्होंने शिवसेना को तोड़ दिया था।

उन्होंने कहा कि पवार को ठाकरे परिवार की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए था। सम्मान पर प्रतिक्रिया देते हुए यूबीटी सांसद संजय राउत ने कहा, क्या आप जानते हैं कि यह पुरस्कार किसने दिया? राजनीतिक नेताओं को दिए जाने वाले ऐसे पुरस्कार या तो खरीदे जाते हैं या बेचे जाते हैं। 2024 के विधानसभा चुनावों में भाजपा के नेतृत्व वाली महायुति के हाथों गठबंधन को करारी हार का सामना करने के बाद दरार की अफवाहों ने जोर पकड़ लिया। सबसे हालिया घटनाक्रम में, उद्धव ठाकरे ने पिछले महीने महाराष्ट्र नगर निगम चुनावों में अकेले उतरने की घोषणा की। हालांकि, यूबीटी नेता संजय राउत ने बाद में स्पष्ट किया कि इस फैसले का एमवीए के भविष्य से कोई लेना-देना नहीं है और यह फैसला इसलिए लिया गया क्योंकि स्थानीय चुनावों में गठबंधन कार्यकर्ताओं के लिए अवसरों को कम करता है।

इस विवाद को सुलझाने के लिए ठाकरे ने शरद पवार से उनके दक्षिण मुंबई स्थित आवास पर मुलाकात भी की थी। विपक्षी गठबंधन के निर्माता पवार ने एमवीए के भीतर उथल-पुथल को शांत करने के लिए कदम उठाया था और हाल ही में कहा था कि वह आगामी स्थानीय निकाय चुनाव लड़ने पर चर्चा करने के लिए गठबंधन के तीन घटकों की बैठक बुलाएंगे।

अंतरिक्ष में फंसे यात्रियों को वापस लाने की योजना बना रहा नासा

एजेंसी

लॉस एंजिल्स। नासा और स्पेसएक्स अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) से आने वाले आगामी क्रू रोटेशन मिशनों के लिए लक्ष्य प्रक्षेपण और वापसी की तारीखों में तेजी ला रहे हैं, जो एजेंसी के फंसे हुए अंतरिक्ष यात्रियों सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर को घर वापस लाएगा। नासा ने मंगलवार को कहा कि एजेंसी का क्रू-10 प्रक्षेपण अब मिशन की तैयारी और एजेंसी की उड़ान तैयारी प्रक्रिया के प्रमाणीकरण के पूरा होने के बाद 12 मार्च को लक्षित है। क्रू-9 मिशन के नए आए क्रू-10 चालक दल के साथ कई दिनों की हैंडओवर अवधि के बाद पृथ्वी पर लौटने की योजना बनाई गई है। इस मिशन में विलियम्स, विल्मोर, नासा के अंतरिक्ष यात्री निक हेग के साथ-साथ रोस्कोस्मोस के अंतरिक्ष यात्री अलेक्जेंडर गोर्बुनोव शामिल हैं। क्रू-10 की पिछली लॉन्च तिथि मार्च के अंत की थी। क्रू-10 मिशन नासा के अंतरिक्ष यात्रियों ऐनी मैकक्लेन और निकोल एयर्स, जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी के अंतरिक्ष यात्री ताकुया ओनिशी और रोस्कोस्मोस के अंतरिक्ष यात्री किरिल पेसकोव को अंतरिक्ष स्टेशन तक ले जाएगा। नासा के अनुसार, क्रू-10 मिशन के लिए नए ड्रैगन अंतरिक्ष यान को उड़ाने के लिए एजेंसी की मूल योजना को समायोजित करने के मिशन प्रबंधन के निर्णय के बाद पहले लॉन्च का अवसर उपलब्ध है, जिसके लिए अतिरिक्त प्रसंस्करण समय की आवश्यकता होती है। उड़ान अब पहले उड़ाए गए ड्रैगन का उपयोग करेगी और संयुक्त टीमें अंतरिक्ष यान के पहले उड़ाए गए हार्डवेयर के आकलन को पूरा करने के लिए काम कर रही हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह एजेंसी के वाणिज्यिक क्रू कार्यक्रम की सुरक्षा और प्रमाणन आवश्यकताओं को पूरा करता है।

सार सुर्खियां

गुटेरेस ने हूती हिरासत में संरा कर्मचारी की मौत की निंदा की

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने मंगलवार को यमन में हूती द्वारा हिरासत में लिए गए विश्व खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यूएफपी) के एक कर्मचारी की मौत की निंदा की और इस त्रासदी की तत्काल, पारदर्शी और गहन जांच का आह्वान किया। श्री गुटेरेस ने एक बयान में कहा, मैं हूती के कार्यकारी अधिकारियों द्वारा 23 जनवरी 2025 से मनमाने ढंग से हिरासत में लिये गये विश्व खाद्य कार्यक्रम के एक सहयोगी की 10 फरवरी को हुई मौत की कड़ी निंदा करता हूं। उन्होंने कर्मचारी के परिवार और डब्ल्यूएफपी सहयोगियों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा, इस निंदनीय त्रासदी के आसपास की परिस्थितियां अस्पष्ट बनी हुई हैं, और संयुक्त राष्ट्र हूतियों से तत्काल स्पष्टीकरण मांग रहा है। उन्होंने 'तत्काल, पारदर्शी और गहन जांच' और मौत के जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह ठहराने का आह्वान किया। श्री गुटेरेस ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठनों, नागरिक समाज संगठनों और राजनयिक मिशनों के कर्मियों को हिरासत में लिया जाना जारी है, जिनमें से कुछ को कई वर्षों से हिरासत में लिया गया है। यमन में संयुक्त राष्ट्र के एक सूत्र ने बताया कि डब्ल्यूएफपी के एक आईटी संचालन अधिकारी अहमद बालावी की सोमवार को उत्तरी यमन के सादा प्रांत में हूती हिरासत केंद्र में मृत्यु हो गई।

रूस में एआई उपयोगकर्ताओं की पहली पसन्द बना डीपसीक एप्लिकेशन

मास्को। चीन का कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) एप्लिकेशन डीपसीक रूसी उपयोगकर्ताओं के बीच अपनी उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री और सुलभता के कारण लोकप्रिय हो गया है। आरआईए समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, डीपसीक मुख्य रूप से अपनी उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री और कंपनी के बड़े भाषा मॉडल की ओर से लिखी जाने वाली सामग्री के कारण लोकप्रिय हुआ है, साथ ही इसके उत्पादों की उपलब्धता भी इसकी लोकप्रियता की एक बड़ी वजह है। रिपोर्ट में रूस के सबसे बड़े मोबाइल ऑपरेटर एमटीएस के एआई सेगमेंट की प्रेस सेवा के हवाले से कहा गया कि चैटजीपीटी के विपरीत, डीपसीक मुफ्त है और इसे रूस में आसानी से डाउनलोड किया जा सकता है। डीपसीक जैसे नए मुफ्त और सुलभ एप्लिकेशन के बढ़ते उपयोग से चैटजीपीटी के उपयोगकर्ताओं की संख्या में गिरावट आ सकती है। इससे पहले, रूसी मोबाइल ऑपरेटर टी2 और योटा ने भी राष्ट्रव्यापी स्तर पर डीपसीक में बढ़ती दिलचस्पी दर्ज की है। टी2 के आंकड़ों के अनुसार, जनवरी में डीपसीक के उपयोगकर्ता चैटजीपीटी की तुलना में 15 प्रतिशत अधिक थे।

रक्षा सचिव ने विभिन्न देशों के रक्षा मंत्रियों के साथ द्विपक्षीय बैठक की

बेंगलुरु। रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह ने मंगलवार रात यहां एयरो इंडिया एयर शो के दौरान कई द्विपक्षीय बैठकें कीं। श्री सिंह ने मोजाम्बिक के रक्षा मंत्री कैसीमिरो ऑगस्टो मुइयो, श्रीलंका के रक्षा मंत्री एयर वाइस मार्शल (सेवानिवृत्त) संपत थुयाकोंथा, सूरीनाम के रक्षा मंत्री जयंत कुमार बिदेसी, मंगोलिया के रक्षा उप मंत्री ब्रिगेडियर जनरल गंखायुग डेग्वाडोर, नेपाल के रक्षा मंत्री रामेश्वर दंगल, मॉरीशस के रक्षा मंत्री देवेंद्र गोपाल और कांगो के रक्षा मंत्री मेजर जनरल लुकविकिला मेटिकविजा मार्सेल के साथ चर्चा की। इन बैठकों में रक्षा सहयोग की समीक्षा और संबंधों को बढ़ाने के तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया गया। इन सभी मंत्रियों के साथ चर्चा विशेष रूप से, रक्षा औद्योगिक सहयोग को बढ़ाने पर केंद्रित थी। बाद में, रक्षा सचिव ने विभिन्न संयुक्त परियोजनाओं और रक्षा औद्योगिक सहयोग पर चर्चा के लिए फ्रांस के आयुध महानिदेशालय के अंतरराष्ट्रीय निदेशालय के निदेशक लेफ्टिनेंट जनरल गेल डियाज डी तुएस्टा से भी मुलाकात की।

अमेरिकी जहाज चीनी सेना की निगरानी में ताइवान जलडमरूमध्य से गुजरा

एजेंसी

बीजिंग। चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) की पूर्वी कमान ने सोमवार से बुधवार तक ताइवान जलडमरूमध्य से गुजरने वाले दो अमेरिकी जहाजों पर नज़र रखी और निगरानी की और पूरी प्रक्रिया के दौरान सतर्कता बनाए रखी। कमांड के प्रवक्ता ली शी के अनुसार बुधवार को एक अमेरिकी विध्वंसक और एक समुद्री सर्वेक्षण जहाज के मार्ग को पीएलए पूर्वी कमांड की नौसेना और वायु सेना द्वारा प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया गया था। ली ने कहा कि अमेरिकी कार्रवाई से गलत संकेत गए हैं और सुरक्षा जोखिम बढ़ गया है। ली ने कहा, राष्ट्रीय संप्रभुता और सुरक्षा की मजबूती से रक्षा करने और क्षेत्रीय शांति और स्थिरता बनाए रखने के लिए कमांड के सशस्त्र बल हर समय हाई अलर्ट पर रहेंगे।

मार्सिले पहुंचे मोदी, वीर सावरकर और उनकी आजादी की लड़ाई को किया याद

एजेंसी

मार्सिले। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ बुधवार तड़के बंदरगाह शहर मार्सिले पहुंचे। दोनों यहां एक नए भारतीय वाणिज्य दूतावास का उद्घाटन करेंगे और विश्व युद्ध में शहीद हुए भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि भी देंगे।

श्री मोदी ने कहा कि मार्सिले का विशेष महत्व है क्योंकि यहीं पर स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर ने ब्रिटिश अधिकारियों की कैद से भागने का साहसी प्रयास किया था। उन्होंने उस समय के फ्रांसीसी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया जिन्होंने मांग की थी कि उन्हें ब्रिटिश हिरासत में नहीं सौंपा जाए। प्रधानमंत्री ने 'एक्स' पर पोस्ट में कहा, राष्ट्रपति मैक्रों और मैं थोड़ी देर पहले मार्सिले पहुंचे। इस यात्रा में भारत और फ्रांस को और जोड़ने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण कार्यक्रम होंगे। जिस भारतीय वाणिज्य दूतावास का उद्घाटन किया जा रहा है, वह लोगों के बीच संबंधों को और गहरा करेगा। मैं प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध में शहीद हुए भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि भी अर्पित करूंगा। उन्होंने कहा, भारत की स्वतंत्रता की खोज में यह शहर विशेष महत्व रखता है। यहीं पर महान वीर सावरकर ने कैद से भाग निकलने का साहसी प्रयास किया था। मैं मार्सिले के लोगों और उस समय के फ्रांसीसी कार्यकर्ताओं को भी धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने मांग की कि उन्हें ब्रिटिश हिरासत में नहीं सौंपा जाए। वीर सावरकर की वीरता पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। गौरतलब है कि वीर सावरकर को जुलाई 1910 में नासिक षडयंत्र मामले में लंदन में गिरफ्तार किया गया था और मुकदमे के लिए जहाज से भारत ले जाया जा रहा था। जब जहाज मार्सिले में रुका तो वह समुद्र में कूद गए और जहाज से गोलीबारी का सामना करते हुए तैरकर फ्रांसीसी तट पर पहुंच गए। उस समय वीर सावरकर अपनी कानून की पढ़ाई के लिए ब्रिटेन में थे और उन्होंने खुद को इंडिया हाउस और फ्री इंडिया सोसायटी जैसे संगठनों से जोड़ लिया था। उन्होंने पूर्ण भारतीय स्वतंत्रता की वकालत करने वाली पुस्तकें भी प्रकाशित कीं। ब्रिटिश सरकार ने आदेश दिया कि इंडिया हाउस के साथ उनके संबंधों के कारण उन्हें भारत प्रत्यर्पित किया जाए।

बम की अफवाह फैलाने वाला व्यक्ति गोवा से गिरफ्तार

मुंबई। बांद्रा रेलवे पुलिस की एक टीम ने मुंबई के चेंबूर पुलिस स्टेशन को उड़ाने की धमकी देने के आरोप में गोवा से 40 वर्षीय एक मजदूर को गिरफ्तार किया है। एक अधिकारी ने बुधवार को यहां यह जानकारी दी। जानकारी के अनुसार 9 फरवरी को बांद्रा रेलवे पुलिस स्टेशन के लैंडलाइन पर एक मोबाइल फोन से एक फर्जी कॉल आई, जिसमें धमकी दी गई कि चेंबूर स्टेशन को उड़ा दिया जाएगा। पुलिस के मुताबिक कॉल करने वाले का नंबर गोवा का पाया गया। रेलवे पुलिस की एक टीम को गोवा भेजा गया और स्थानीय पुलिस की मदद से उन्होंने गोवा में मजदूर के रूप में काम करने वाले एक 40 वर्षीय व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया कि जांच के दौरान पता चला कि जब आरोपी ने फोन किया तो वह शराब के नशे में था।

मैं पार्टी का एक अनुशासित सिपाही

बीजेपी के कारण बताओ नोटिस का किरोड़ी लाल मीणा ने दिया जवाब

एजेंसी

नई दिल्ली। राजस्थान के मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने हाल ही में एक सार्वजनिक बैठक में उनका फोन टैप किए जाने का आरोप लगाकर राज्य सरकार की प्रतिष्ठा को खराब करने के लिए भाजपा की राज्य इकाई के अध्यक्ष मदन राठौड़ द्वारा जारी कारण बताओ नोटिस का बुधवार को जवाब दिया। ईमेल पर अपने जवाब में मीना ने कहा कि उन्हें इनपुट मिला था कि उनका फोन टैप किया जा रहा है लेकिन उन्होंने ये बात मीडिया में किसी को नहीं बताई। उन्होंने कहा कि मैंने हमेशा पार्टी के लिए काम किया है और मैं

पार्टी का एक अनुशासित सिपाही हूं। मीना द्वारा फोन टैपिंग का दावा करने के बाद, विपक्षी कांग्रेस ने इस मुद्दे को राजस्थान विधानसभा में उठाया था, जिससे भाजपा सरकार को शर्मिंदगी उठानी पड़ी। कांग्रेस ने इस आरोप पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के इस्तीफे की मांग की थी और विपक्ष के नेता टीका राम जूली ने विरोध में राज्यपाल के अभिभाषण पर भाषण भी नहीं दिया। मुख्यमंत्री के भाषण के दौरान कांग्रेस विधायक नारे लगाते रहे। कारण बताओ नोटिस में बीजेपी ने कहा कि मीना के बयान से सरकार की प्रतिष्ठा धूमिल हुई है। नोटिस में कहा गया है, आपने सार्वजनिक बयान देकर भाजपा सरकार पर फोन कॉल टैप कराने का भी आरोप लगाया, जो गलत है। इसमें आगे कहा गया, आपने बयान देकर बीजेपी की बहुमत वाली सरकार की प्रतिष्ठा धूमिल की है। भाजपा नेताओं ने कहा कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के निर्देशों के तहत दिए गए कारण बताओ नोटिस में मीना को तीन दिनों के भीतर अपना जवाब देने को कहा गया है।

अमेरिका के विदेशी सहायता निलंबित करने से मानवीय अभियानों पर गंभीर असर पड़ा: संरा

एजेंसी

संयुक्त राष्ट्र। अमेरिका की ओर से विदेशी सहायता निलंबित किए जाने से डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (डीआरसी) में संयुक्त राष्ट्र के मानवीय अभियानों पर गंभीर असर पड़ा है। संयुक्त राष्ट्र के एक वरिष्ठ अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पूर्वी डीआरसी में सुरक्षा और मानवीय स्थिति बेहद अस्थिर बनी हुई है। उत्तरी किवु और दक्षिण किवु दोनों प्रांतों में बढ़ते सशस्त्र संघर्ष, बड़े पैमाने पर विस्थापन और बढ़ती असुरक्षा के कारण स्थिति और खराब हो रही है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव के उप विशेष प्रतिनिधि एवं डीआरसी के निवासी तथा मानवीय समन्वयक ब्रूनो लेमारक्विस ने राजधानी किंशासा

से वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए पत्रकारों से कहा कि अमेरिका द्वारा विदेशी सहायता निलंबित किए जाने का देश में मानवीय सहायता अभियानों पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने कहा, अमेरिकी फंडिंग पर निर्भरता का मतलब है कि बहुत सारे कार्यक्रमों को उन सभी चीजों को बंद करना होगा, जिसमें आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाएं और आपातकालीन आश्रय शामिल हैं। श्री लेमारक्विस ने कहा कि उनके कार्यालय में समन्वय क्षमता को रोकना पड़ा। उन्होंने कहा, यह एक गंभीर चिंता का विषय है, क्योंकि कई संयुक्त राष्ट्र एजेंसियां और अंतरराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) जो ज़मीनी स्तर पर काम कर रहे हैं, उनकी गतिविधियां या तो गंभीर रूप से प्रभावित हुई हैं या पूरी तरह से रुक गई हैं।

श्री लेमारक्विस ने बताया कि अब तक केवल आपातकालीन खाद्य सहायता को अमेरिकी प्रतिबंध से छूट मिली है। उन्होंने वाशिंगटन से और अधिक छूट देने की अपील की तथा अंतरराष्ट्रीय समुदाय से कांगो में मानवीय सहायता बढ़ाने का आग्रह किया। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, 26 जनवरी से अब तक कांगो में तीन हजार से अधिक लोगों की हत्या हो चुकी है, 2,880 लोग घायल हुए हैं, और पांच लाख से ज्यादा लोग विस्थापित हुए हैं।

कुछ लोग अपनी मानसिकता के अनुसार ही संजय राउत के आरोपों पर अन्ना हजारे का पलटवार

एजेंसी

नई दिल्ली। शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने अनुभवी सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे पर 2014 के बाद भाजपा के नेतृत्व वाली सरकारों के तहत अनियमितताओं के खिलाफ आवाज नहीं उठाने का आरोप लगाया है। मंगलवार को राउत की यह टिप्पणी हजारे के उस दावे के बाद आई है जिसमें उन्होंने दावा किया था कि अरविंद केजरीवाल के पैसे पर ध्यान केंद्रित करने के कारण आम आदमी पार्टी (आप) हाल ही में दिल्ली विधानसभा चुनाव हार गई।

हजारे ने सेना (यूबीटी) नेता की आलोचना पर पलटवार करते हुए कहा कि कुछ लोग चीजों को अपनी मानसिक स्थिति के अनुसार समझते हैं। मुंबई में पत्रकारों से बात करते हुए राउत ने दावा किया, अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया ने अन्ना हजारे को महात्मा बना दिया। उनके बिना, अन्ना दिल्ली नहीं देख पाते या (भ्रष्टाचार के खिलाफ विरोध के लिए) राम लीला और जंतर मंतर पर नहीं जाते। उन्होंने कहा कि 2014 के बाद बीजेपी शासित केंद्र और महाराष्ट्र में अनियमितताओं का विस्फोट हुआ, लेकिन अन्ना ने एक शब्द भी नहीं बोला।

आलोचना पर प्रतिक्रिया देते हुए हजारे ने कहा, एक विशेष रंग का चश्मा पहनने वाला व्यक्ति दुनिया को उसी के अनुसार देखता है। हाल के दिल्ली विधानसभा चुनावों में आप को हार का सामना करने के बाद, हजारे ने दावा किया कि केजरीवाल ने केवल शराब पर ध्यान केंद्रित किया और लोगों की सेवा करना भूल गए। हजारे मे कहा कि शराब नीति के मुद्दे के साथ पैसा आया और वे उसमें डूब गए। आम आदमी पार्टी की छवि खराब हुई। लोगों ने देखा कि वह(अरविंद केजरीवाल) पहले स्वच्छ चरित्र की बात करते हैं और फिर शराब नीति की।" हजारे ने कहा कि आम आदमी पार्टी इसलिए हारी क्योंकि वह लोगों की निस्वार्थ सेवा करने की जरूरत को समझने में विफल रही और उसने गलत रास्ता अपना लिया।

रूस में हिरासत में लिया गया अमेरिकी नागरिक मार्क फोगेल रिहा

मॉस्को। रूस में नशीली दवाओं की तस्करी और कब्जे के लिए दोषी ठहराये गये अमेरिकी नागरिक मार्क फोगेल को रिहा कर दिया गया है। स्थानीय मीडिया ने बुधवार को यह जानकारी दी। फोगेल के वकील दिमित्री ओवस्यानिकोव ने 'आरआईए नोवोस्ती' को बताया, उनकी रिहाई के बारे में जानकारी सटीक है। हालांकि, हम नहीं जानते कि उन्हें किस रास्ते से ले जाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वह अधिक जानकारी नहीं दे सकते। इससे पहले अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार माइक वाल्ट्ज ने कहा था कि ट्रम्प के मध्य पूर्व के दूत स्टीव विटकॉफ़ ने फोगेल की वापसी पर बातचीत करने के लिए रूस का दौरा किया था। विटकॉफ़ फोगेल के साथ अमेरिका की उड़ान में शामिल हुए। सीएनएन ने पहले बताया था कि 61 वर्षीय फोगेल ने मॉस्को के एंग्लो-अमेरिकन स्कूल में इतिहास के शिक्षक के रूप में लगभग एक दशक तक काम किया था। फोगेल और उनकी पत्नी को अगस्त 2021 में न्यूयॉर्क से आगमन पर शेरेमेतियोवो अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर हिरासत में लिया गया था, उनके सामान में मारिजुआना और

RNI : UPHIN/2012/45286
शकुन टाइम्स
(राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पंजीकृत

केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री एवं महराजगंज सांसद पंकज चौधरी और पनियरा विधायक ज्ञानेन्द्र सिंह शकुन टाइम्स अखबार को प्रमुखता से पढ़ते हुए

YouTube shakuntimes

आवश्यकता है
भारत के समस्त राज्यों व जिलों में अनुभवी और तेज तर्रार प्रेस रिपोर्टरों की
यदि आप में है गलत को गलत कहने की हिम्मत तो शकुन टाइम्स में आपका स्वागत है
नोट : प्रिंट एवं डिजिटल मीडिया में एक साथ कार्य करने का सुनहरा अवसर
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :- 9415052283, 9506320127
संपर्क कार्यालय : शक्तिपीठ,सारनाथ,वाराणसी (उ.प्र.) 221007